प्रभात

अंदर के पन्नों में .....

★ महासचिव कॉमरेड गणपति का साक्षात्कार 8
★ एलटीटीई की पराजय और सबक 18
★ शहीदों को श्रद्धांजली 24
★ दमन और प्रतिरोध की रपटें ...50
★ सभा-सम्मेलनों की रपटें 54
★ दरभा डिवीजन में सरकारी दमन 54
★ 28 जुलाई - शहीदी सप्ताह की रपटें 58
★ जन प्रतिरोध की रपटें 61

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी का तिमाही मुख-पत्र

वर्ष-22 अंक-4 अक्टूबर-दिसंबर 2009 सहयोग राशि-10 रुपए

भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के खिलाफ शासक वर्गों द्वारा अभूतपूर्व स्तर पर जारी प्रति-क्रांतिकारी भारी सैन्य हमले को आत्मरक्षात्मक युद्ध के जरिए परास्त करें!

एकता कांग्रेस द्वारा निर्देशित लक्ष्यों को हासिल करने हेतु फौलादी संकल्प के साथ आगे बढ़ें!!

- कॉमरेड गणपति, महासचिव, भाकपा (माओवादी)

"सेना और जनता हमारी विजय का आधार हैं।" - माओ

प्यारे लोगो व कॉमरेडो,

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि आज भारतीय क्रांति एक अभूतपूर्व प्रति-क्रांतिकारी युद्ध का सामना कर रही है। अमेरिकी साम्राज्यवादियों के दिशा-निर्देश व सहयोग से देश के लुटेरे शासक वर्गों ने माओवादी आंदोलन के सफाये के लक्ष्य से देश की उत्पीड़ित जनता के खिलाफ एक बर्बरतापूर्ण हमला छेड़ दिया है। मई 2009 में यूपीए के दोबारा सत्ता में आते ही इस अन्यायपूर्ण व अमानवीय युद्ध की साजिश रची गई और पिछले जुलाई-अगस्त महीनों से 'ऑपरेशन ग्रीनहंट' के नाम से इसका क्रियान्वयन शुरू किया गया। 21 सितम्बर 2004 को देश की दो प्रमुख क्रांतिकारी धाराओं का विलय होकर भाकपा (माओवादी) के अस्तित्व में आते ही देश के लुटरे शासकों और उनके साम्राज्यवादी आकाओं ने इसे बहुत बड़े खतरे के रूप में ले लिया। नेतृत्वकारी काडरों की हत्याएं कर, व्यापक गिरफ्तारियां कर, सलवा जुडूम, सेंदेरा, आदि कई किस्म के प्रति-क्रांतिकारी अभियानों को चलाकर क्रांतिकारी आंदोलन का सफाया करने पर खूब जोर लगाया। लेकिन तमाम मुश्किलों के बावजूद भी क्रांतिकारी आंदोलन मजबूत ही होता आया। देश के विभिन्न इलाकों में जनता लुटेरी सरकारों की जन-विरोधी व साम्राज्यवाद-परस्त नीतियों के खिलाफ संघर्ष के रास्ते पर आगे ही बढ़ रही है।

जनवरी 2007 में सम्पन्न हमारी पार्टी की एकता कांग्रेस - 9वीं कांग्रेस ने वर्तमान राजनीतिक, आत्मगत और आंदोलन की स्थितियों को ध्यान में रखते हुए फौरी लक्ष्यों को तय किया जिन्हें हमें हासिल करना है। वे लक्ष्य इस प्रकार हैं - गुरिल्ला सेना को नियमित सेना के रूप में, गुरिल्ला युद्ध को चलायमान युद्ध में विकसित कर दण्डकारण्य और बिहार-झारखण्ड में आधार इलाकों की स्थापना करना; अन्य गुरिल्ला क्षेत्रों में गुरिल्ला युद्ध को तेज करते हुए गुरिल्ला आधारों के निर्माण के लिए प्रयास करना; लाल प्रतिरोधी इलाकों में सामंतवाद-विरोधी व साम्राज्यवाद-विरोधी वर्ग संघर्षों को तेज करते हुए गुरिल्ला जोनों के निर्माण के लिए प्रयास करना; नए इलाकों में विस्तार कर लाल प्रतिरोधी इलाकों का निर्माण करना; आंध्रप्रदेश (तीनों इलाकों) में क्रांतिकारी आंदोलन को पीछेहट की स्थिति से बाहर लाना; शहरों में रणनीतिक दृष्टि से काम करते हुए मजदूर वर्ग में और अन्य मेहनतकशों में, मध्यम वर्ग और बुद्धिजीवियों में जनाधार को बढ़ाते हुए मजबूत साम्राज्यवाद-विरोधी व राज्य-विरोधी आंदोलन के केन्द्रों में बदलकर कृषि क्रांति के लिए मजबूत सहायक के रूप में खड़ा करना; विभिन्न सामाजिक समुदायों को संगठित कर क्रांतिकारी आंदोलन में उनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना; साम्राज्यवाद, सामंतवाद, दलाल नौकरशाह पूंजीपतियों, सरकार और हिंदू साम्प्रदायिकता के खिलाफ विभिन्न मुद्दों पर अलग-अलग संगठनों और शख़्सों को एकजुट कर

क्रांतिकारी आंदोलन पर जारी देशव्यापी भारी हमला - ऑपरेशन ग्रीनहंट को परास्त करो!

आपॅरेशन ग्रीन हंट को हराने के संकल्प से एक और भूमकाल के लिए शंखनाद करो!!

कार्यनीतिक संयुक्त मोर्चे गठित करना सर्वहारा के नेतृत्व में मजदूर-किसान एकता की नींव पर चार जनवादी वर्गों का प्रतिनिधित्व करने वाली जनताना सरकारों (क्रांतिकारी जन कमेटियों) की नींव पर देश में रणनीतिक संयुक्त मोर्चा बनाने का प्रयास करना; रणनीतिक संयुक्त मोर्चा की स्थापना के लिए कश्मीर और पूर्वोत्तर की उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं के मुक्ति आंदोलनों से एकजुटता कायम करने का प्रयास करना; विश्व समाजवादी क्रांति को आगे बढ़ाने के लिए साम्राज्यवाद के खिलाफ विभिन्न देशों में मौजूद माओवादी ताकतों, क्रांतिकारी मजदूर वर्ग और उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं व जनता से एकजुटता कायम करते हुए भारत की नई जनवादी क्रांति के लिए सक्रिय समर्थन जुटाना; पार्टी के भीतर मौजूद गैर-सर्वहारा रुझानों को, जो एकता कांग्रेस द्वारा तय लक्ष्यों को हासिल करने के रास्ते में विभिन्न प्रकार की बाधाएं उत्पन्न कर रहे हैं, दूर करने के लिए भूल-सुधार अभियान को सफलतापूर्वक संचालित कर पार्टी को मजबूत बनाना; नेतृत्व के स्तर पर पार्टी को हो रहे नुकसानों को रोकना; क्रांतिकारी आंदोलन को कुचलने के लिए दुश्मन द्वारा चलाए जा रहे अभियानों को पराजित करना; भारतीय क्रांति को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाने की हामी भर सके, इस हेतु मजबूत पार्टी, सेना और संयुक्त मोर्चा के निर्माण के लिए आवश्यक सैद्धांतिक, राजनीतिक, फौजी व सांगठनिक प्रशिक्षण जारी रखना; इन सबकी बदौलत भारतीय क्रांति में स्तर व व्यापकता के हिसाब से एक और नई छलांग लगाकर देश में क्रांति का उभार बढ़ाना।

इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए यह रणनीतिक योजना तैयार कर ली गई कि राजनीतिक, सांगठनिक व फौजी क्षेत्रों में समन्वय के साथ प्रयास करते हुए, दुश्मन का मुकाबला करते हुए, जनता को जुझारू तरीके से व्यापक रूप से जनयुद्ध में गोलबंद करते हुए मजबूत सेना का निर्माण, आधार इलाकों की स्थापना और क्रांति के उभार के लिए आवश्यक हालात पैदा किए जाएं। एकता कांग्रेस और नई केन्द्रीय कमेटी ने इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए आवश्यक राजनीतिक, सांगठनिक व फौजी कार्यभार निर्धारित किए। केन्द्रीय कमेटी ने अपने मातहत सभी स्तरों की पार्टी कमेटियों, फौजी कमिशनों व कमानों, क्रांतिकारी जनवादी जन संगठनों, क्रांतिकारी जन कमेटियों और क्रांतिकारी जनता को जनयुद्ध में सक्रिय रूप से संचालित करने के लिए आवश्यक दो सालों की फौरी योजना भी बनाई।

हमारी नई पार्टी के गठन को, एकता कांग्रेस के सफल संचालन को, उसके द्वारा निर्देशित लक्ष्यों को, इन लक्ष्यों को हासिल करने के लिए तैयार की गई रणनीतिक योजना, तय कार्यभारों और इन कार्यभारों के अमल के लिए बनाई गई फौरी योजना को तथा जनयुद्ध में हासिल कामयाबियों को देखकर प्रति-क्रांतिकारी शासक वर्गों, साम्राज्यवादियों, विशेषकर अमेरिकी साम्राज्यवादियों में हड़कम्प मच गई। एकता कांग्रेस के बाद के दो सालों में हमें अपने लक्ष्यों को हासिल करने से रोकने के लिए, कार्यभारों की पूर्ति करने से रोकने के लिए, फौरी व रणनीतिक योजनाओं पर अमल को रोकने के लिए उन्होंने क्रांतिकारी आंदोलन के खिलाफ अभूतपूर्व स्तर पर विभिन्न रूपों में हमला किया। हमारी पार्टी के कई नेतृत्वकारी कॉमरेडों को पकड़कर मार डाला। जेलों में बंद किया। इसके लिए केन्द्रीय स्तर पर खुफिया व हमले के काम करने वाली स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) बनाई। आंदोलन के प्रमुख इलाकों पर केन्द्रित करते हुए देश भर में हमला जारी रखा। हमला कर हमारी पार्टी और जनयुद्ध को काफी नुकसान पहुंचाया। फिर भी हमने इस हमले का बहादुरी से मुकाबला करते हुए जनयुद्ध में उल्लेखनीय कामयाबियां हासिल कीं। गुरिल्ला युद्ध में हासिल कामयाबियों, नंदीग्राम, कंधमाल, लालगढ़ आदि ऐतिहासिक जन संघर्षों तथा नई जनवादी राजसत्ता की संस्थाओं के विकास को देखकर शासक वर्ग ज्यादा भयभीत हो गए।

इस बीच छत्तीसगढ़, झारखण्ड, ओडिशा, बंगाल, आंध्र, महाराष्ट्र आदि राज्यों में केन्द्र-राज्य सरकारों ने बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और दलाल नौकरशाह पूंजीपति कम्पनियों के साथ भारी खदानें खोलने, भारी उद्योग खोलने और भारी परियोजनाओं की स्थापना करने के लिए लाखों करोड़ रुपए के समझौते कर रखे हैं। वर्तमान दुनिया में ही एक बहुत बड़े इलाके में (लालगढ़ से सूरजागढ़ तक) फैले हुए मूलनिवासियों (आदिवासियों) और स्थानीय जनता के अस्तित्व को खतरे में डालने के लिए ही शासक वर्गों ने ये एमओयू कर रखे हैं। इसके चलते इस इलाके में सामाजिक अंतरविरोध इतने तीखे हो चुके हैं कि पहले कभी ऐसा देखा नहीं गया। इनके अमल और नए समझौते कर लेने की राह में देश में बढ़ रहा जनयुद्ध एक भारी रुकावट बनकर खड़ा है। इस पूरे इलाके में फैले हुए मूलनिवासियों और स्थानीय जनता को लुटेरी सरकारों द्वारा अपनाई गई इन विनाशकारी नीतियों से अपने आपको बचाने के लिए जनयुद्ध एक सहारा बनकर खड़ा है। इसीलिए आज के इस भारी सैन्य हमले का यही इलाका प्रमुख केन्द्र बना है।

भारत के शासक वर्गों द्वारा लागू साम्राज्यवाद-अनुकूल, जन-विरोधी व देश-विरोधी आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक व पर्यावरणीय नीतियों के चलते जनता की जिंदगी बद से बदतर होती जा रही है। देश और दुनिया को अपने चपेट में लेने वाले आर्थिक संकट के चलते जनता में असंतोष और आक्रोश भड़क रहे हैं। इस सबके चलते भारत की नई जनवादी क्रांति की प्रगति के लिए वस्तुगत हालात और भी ज्यादा बेहतर होने लगे हैं। क्रांतिकारी-जनवादी ताकतों की एकजुटता और उनके विकास के लिए और भी बेहतर हालात बन रहे हैं।

'9/11' के बाद अमेरिकी साम्राज्यवाद ने विश्व पर आधिपत्य जमाने की अपनी रणनीति के तहत अफगान और इराक पर दुराक्रमण किया। उसने अपनी इस रणनीति के तहत चीन को घेरने और दक्षिण एशिया पर अपना लौह पंजा कसने के लिए भारतीय विस्तारवादियों को अपना नीम भागीदार बना लिया। अमेरिका-भारत परमाणु करार से इस रणनीतिक हिस्सेदारी में एक खास बदलाव आया है। इससे भारतीय विस्तारवाद की

लालसा बेलगाम हुआ है जिससे दक्षिण एशिया में नया घटनाचक्र घूमने लगा है। मुम्बई की '11/26' घटनाओं को बहाना बनाकर आतंकवाद से शहरों को सुरक्षा पहुंचाने के नाम पर शासक वर्गों ने एक नया केन्द्रीय खुफिया एजेंसी एनसीटीसी (राष्ट्रीय आतंकवाद-विरोधी केन्द्र) का गठन किया; सभी प्रमुख व मेट्रोपॉलिटन शहरों में एनएसजी के केन्द्र खोले गए। इसी इरादे से और इसी तर्ज पर राज्यों में फोर्स-1 जैसे विशेष बलों का सरकारों ने गठन किया; टाडा व पोटा की तर्ज पर केन्द्र के स्तर पर एक अन्य फासीवादी कानून (यूएपीए - गैर-कानूनी गतिविधि रोकथाम कानून) बनाया गया; तटवर्ती इलाकों का ढांचा बनाया गया; देश की आंतरिक सुरक्षा के ढांचे में महत्वपूर्ण बदलाव करते हुए राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) का गठन किया गया। यूएपीए के तहत हमारी पार्टी पर आतंकवादी का ठप्पा लगाकर प्रतिबंध लगा दिया। उसके बाद कम समय में ही हमारे खिलाफ चौतरफा हमला शुरू किया जिसमें तमाम आतंकवाद-विरोधी ढांचे का इस्तेमाल किया जा रहा है। इस घटनाक्रम से क्रांतिकारी आंदोलन के खिलाफ हमला तेज करने में प्रतिक्रियावादी भारतीय शासक वर्गों को मदद मिलेगी। हमारी एकता कांग्रेस के बाद नेपाल, श्रीलंका, पूर्वोत्तर क्षेत्र और कश्मीर में सामने आए परिणामों से हमारे आंदोलन के सामने अलग-अलग स्तर पर प्रतिकूलताएं पैदा हुईं।

इस तमाम घटनाचक्र की पृष्ठभूमि में ही इस साल की शुरूआत में भारत के प्रतिक्रियावादी शासक वर्गों ने साम्राज्यवादियों, विशेषकर अमेरिकी साम्राज्यवादियों की संपूर्ण मदद से देश में माओवादी आन्दोलन का जड़ से सफाया करने के लक्ष्य से साजिश रची है। इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि देश के अंदरूनी मामलों में अमेरिकी साम्राज्यवादियों की दखलंदाजी किस कदर बढ़ी है। इससे साम्राज्यवाद और भारत की जनता के बीच मौजूद अंतरविरोध तीखा होगा। साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष को प्रेरणा मिलेगी।

यह हमला अत्यंत प्रतिक्रियावादी होगा, क्रूर होगा, चौतरफा होगा, देशव्यापी होगा और दीर्घकालीन होगा। यह निश्चित रूप से तीन रणनीतिक इलाकों पर केंद्रित होकर चलने वाला हमला है। 'क्लियर एण्ड होल्ड' (सफाया और पकड़ में रखना), 'फ्लश-आउट एण्ड कंट्रोल' (खदेड़ देना और नियंत्रण बनाना) और 'फस्ट कैरीआउट पोलिस एक्शन टु फ्लशआउट नक्सल्स एण्ड देन फॉलो इट अप विथ डेवलपमेंट मेजर्स' (पहले नक्सलियों को खदेड़ने के लिए पुलिस कार्रवाई करना और उसके बाद विकास के कदम उठाना) की नीति पर चलेगा। इस प्रतिक्रियावादी योजना का निशाना हमारी पार्टी की एकता कांग्रेस द्वारा तय की गई रणनीतिक फौरी योजनाओं और उन योजनाओं के जरिए हासिल किए जाने वाले लक्ष्यों के खिलाफ है।

भारत के शासक वर्गों ने अपनी योजना पर अमल के लिए जो रणनीति व कार्यनीति तय की, उसका लक्ष्य हमारी पार्टी द्वारा लागू राजनीतिक, सांगठनिक व सामरिक दिशा, खासकर दीर्घकालीन जनयुद्ध की रणनीति व कार्यनीति का मुकाबला करने का है। दूसरे विश्व युद्ध के बाद के दौर में दुनिया भर में उभरी कम्युनिस्ट क्रांतियों और राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों से निपटने के लिए साम्राज्यवादियों, खासकर अमेरिकी साम्राज्यवादियों द्वारा बनाई गई बेहद प्रतिक्रियावादी 'कम-तीव्रता वाला संघर्ष' की नीति पर अमल करने की रणनीति व कार्यनीति ही आज हमारे देश में शासक वर्गों ने अपना ली।

अमेरिकी साम्राज्यवाद की विश्व पर आधिपत्य जमाने की रणनीति, दुराक्रमण और धौंस-धमकियों का विरोध करने में, विशेषकर भारत और दक्षिण एशिया में उसके राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक शोषण-उत्पीड़न व दखलंदाजी का विरोध करने में आगे रहने वाली हमारी पार्टी से उत्पन्न खतरे को देखकर वह उसका सफाया करने पर आमादा है जोकि अभूतपूर्व है। माओवादी आंदोलन के खिलाफ केन्द्र सरकार द्वारा चलाए जा रहे भारी सैन्य हमले की योजना तैयार करने में, हमले की तैयारियों में, प्रशिक्षण, तकनीक, हथियार, सलाह-मशविरा आदि मुहैया करवाने में तथा हमले के संचालन पर नजर रखने में अमेरिकी साम्राज्यवादियों की भूमिका अभूतपूर्व स्तर पर बढ़ी है। माओवादी आंदोलन का दमन करने में दलाल नौकरशाह पूंजीपतियों, जिनकी साम्राज्यवादियों के साथ सांठगांठ है, की भूमिका भी अभूतपूर्व स्तर पर बढ़ चुकी है। दक्षिण एशिया में साम्राज्यवादियों के हितों के साथ भारतीय विस्तारवादियों के हित जितना ज्यादा सम्मिलित होते जाएंगे उतना ही इस इलाके के देशों में जनता के साथ अंतरविरोध तीखा होगा। साम्राज्यवादियों के हितों के साथ भारतीय शासकों के हित ज्यों-ज्यों ज्यादा जुड़ते जाएंगे, माओवादी आंदोलन का दमन करने में उनके बीच सांठगांठ भी बढ़ेगी। यह हमला जितना तेज और जितना लम्बा समय तक चलेगा, उतनी ही भारत की रक्षा और आंतरिक नीतियों में साम्राज्यवादियों की दखल बढ़ेगी। इस दखल से भारतीय जनता और साम्राज्यवादियों के बीच का बुनियादी अंतरविरोध बढ़ेगा जिससे साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्षों के तेज व व्यापक होने की संभावनाएं बढ़ेंगी। इससे ऐसी परिस्थिति सामने आएगी कि हमारे आत्मरक्षात्मक युद्ध का निशाना साफ तौर पर साम्राज्यवाद के खिलाफ होगा।

लाखों सैनिक व अर्ध-सैनिक बलों की तैनाती के बिना भारत के शासक वर्ग एक दिन के लिए भी कश्मीर और पूर्वोत्तर के इलाकों को अपने कब्जे में नहीं रख सकते। यह स्थिति दशकों से है। फिर भी जनता आत्मनिर्णय के अपने अधिकार के लिए सशस्त्र तरीके के साथ-साथ विभिन्न रूपों में लड़ ही रही है। यह साफ तौर पर दिखाई देने के बावजूद भी कि सेना, अर्ध-सैनिक बल और निरंकुश काले कानून संघर्षरत जनता को हमेशा के लिए दबाकर नहीं रख सकेंगे, भारत के निरंकुश शासक माओवादी क्रांति को दबाकर अपनी तथाकथित लोकतांत्रिक व्यवस्था कायम करने के बहाने मूर्खता से सेना को रणनीतिक तौर पर उतार रहे हैं। महान तेलंगाना सशस्त्र कृषि क्रांति को दबाने के लिए जब सेना को उतार कर खून की नदियां बहाई गई थीं, उन तीन सालों को छोड़कर, महान नक्सलबाड़ी उभार जब देश में जंगल की आग की तरह फैल गई थी, तब चंद इलाकों

में कुछ समय के लिए सेना को तैनात किया गया था, उसे छोड़कर कभी भी सेना ने आंतरिक सुरक्षा के लिए आज की तरह की भूमिका नहीं निभाई।

भारतीय सेना ने चार साल पहले ही माओवादी आंदोलन का मुकाबला करने के लिए एक 'नोडल सेल' का गठन किया। तब से वह हमारे आंदोलन पर गहरी नजर रखते हुए केन्द्र व राज्य सरकारों को तथा सैन्य व पुलिस बलों को कई सुझाव व प्रस्ताव भेजता रहा है। सेना की देखरेख में ही केन्द्रीय गृह मंत्रालय ने आज के इस भारी सैनिक हमले की रणनीतिगत योजना बनाई। सेना ही अर्ध-सैनिक बलों और राज्यों के पुलिस बलों को विशेष प्रशिक्षण दे रही है। इन्हें अत्याधुनिक हथियारों, युद्ध-सामग्रि और सूचना-परिवहन के साधनों से मजबूत बनाकर आधुनिक बलों में तब्दील करने में सेना की भूमिका ही अहम है। केन्द्र व राज्यों में विशेष खुफिया विभागों की स्थापना करने, उन्हें प्रशिक्षण देने और समन्वय करने में सेना की ही भूमिका अहम है। भारतीय रक्षा मंत्रालय की सक्रिय भूमिका के बगैर आज के इस भारी सैनिक हमले की योजना, काउंटर-इंसर्जेन्सी की योजनाओं और उसके लिए आवश्यक साधन-सामग्रि, तकनीक और समन्वय की कल्पना भी नहीं की जा सकती। यही नहीं, भारतीय सेना ने 'नई सैनिक नीति' की घोषणा की जिसमें लम्बे अरसे से देश के अंदर जारी क्रांतिकारी आंदोलनों और राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों का मुकाबला करने तथा आधुनिक तकनीक पर आधारित हो पड़ोसी देशों के साथ युद्ध लड़ने - दोनों किस्म के युद्धों का तालमेल के साथ संचालन करने की बात कही गई। इस नीति का जुड़ाव उस 'आतंकवाद के खिलाफ भूमण्डलीय युद्ध' के साथ घनिष्ठता से है जो अमेरिका दुनिया भर में चला रहा है। इसीलिए माओवादी इलाकों में तैनात करने के लिए भारतीय सेना ब्रिगेड मुख्यालय, विशेष सैन्य बलों के निर्माण व उनके प्रशिक्षण के लिए विशेष प्रशिक्षण स्कूल छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में खोला जा रहा है। छत्तीसगढ़, झारखण्ड और ओडिशा में पुलिस व विशेष अर्ध-सैनिक बलों के प्रशिक्षण के लिए कई विशेष स्कूलों की स्थापना पर भारतीय सेना काम कर रही है। वायुसेना के हेलिकॉप्टरों के साथ-साथ उसके विशेष बल (गरुड़ा) को तैनात किया जा रहा है ताकि काउंटर-इंसर्जेन्सी की कार्रवाइयों में अहम भूमिका निभाई जा सके। छत्तीसगढ़ के महासमुंद में भारतीय वायुसेना ढाई हजार एकड़ जमीन पर बेस कैम्प बना रही है। भारतीय सेना की मध्य व पूर्वी कमानें पहले से ही सम्बन्धित राज्यों के पुलिस विभागों को कई प्रकार की मदद करती आ रही हैं। अर्ध-सैनिक बलों, कोबरा और विशेष पुलिस बलों को अगर माओवादियों से कड़े प्रतिरोध का सामना करना पड़ता है तो किसी भी समय उतारने के लिए कश्मीर में राष्ट्रीय रायफल्स को मुस्तैद रखा गया। केन्द्र सरकार एक दखल करने वाली यूनिट (इंटरवेन्शन यूनिट) बनाने की सोच रही है ताकि आज के चौतरफा हमले को सुचारू रूप से चलाया जा सके। इसके जरिए केन्द्र को किसी भी राज्य में वहां की सरकार की सहमति के बिना ही प्रत्यक्ष फैसला लेकर अमल करने का अधिकार मिलेगा। इससे माओवाद-विरोधी युद्ध या काउंटर-इंसर्जेन्सी ऑपरेशन चलाने का फासीवादी अधिकार केन्द्र सरकार को मिल जाएगा। इस सबसे यह स्पष्ट हो जाता है कि भारत के शासक माओवादी विद्रोह का मुकाबला करने के लिए लाखों सैनिक व अर्ध-सैनिक बलों को तैनात कर गृहयुद्ध की अंतहीन दलदल में फंसते जा रहे हैं।

अब फासीवादी शासकों ने उत्पीड़ित जनता, उसका नेतृत्व करने वाली माओवादी पार्टी और उसकी अगुवाई करने वाली जनसेना के सामने भारतीय सेना द्वारा प्रशिक्षित अर्ध-सैनिक व विशेष पुलिस बलों तथा सैन्य बलों का मुकाबला करते हुए उन्हें पराजित करने की अनिवार्यता ला दी। अब देश में भड़कने वाली गृहयुद्ध की यह आग तब तक नहीं बुझेगी जब तक कि वह भारत की भाड़े की सेना और उसके शासकों को जलाकर राख नहीं कर देती। क्योंकि लाखों पुलिस, अर्ध-सैनिक व सैन्य बलों को तैनात करने का मुद्दा सिर्फ सैन्य मोर्चे तक सीमित मुद्दा नहीं रहेगा। उसका विस्तार राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, न्याय, पर्यावरणीय और विदेश नीति के क्षेत्रों में हुए बिना नहीं रह सकता। संसदीय व्यवस्था का झूठ और उसका फासीवादी चरित्र और भी ज्यादा उजागर होकर रहेगा। ज्यों-ज्यों अर्ध-सैनिक व सैनिक बलों की तैनाती बढ़ेगी, त्यों-त्यों राज्यों के मामलों में केन्द्र की दखल बढ़ेगी जिससे केन्द्र और राज्यों के सम्बन्धों में अंतरविरोध तीखा हो जाएगा। इसके नतीजे इसके विनाश के लिए ही मददगार होकर रहेंगे।

प्रतिक्रियावादी शासकों के द्वारा देश की जनता पर थोपे जा रहे गृहयुद्ध में सैनिक पहलू ही अहम है। उन्होंने 'क्लियर एण्ड होल्ड' की नीति की खुलेआम घोषणा की। युद्ध की इन तैयारियों के पहले माओवादी गुरिल्ला युद्ध के आज के स्तर को नजर में रखने के अलावा उसके भावी विकास को भी ध्यान में ले लिया गया। आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, ओडिशा, झारखण्ड, बंगाल, बिहार, उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश राज्यों की सरकारों ने माओवादी आंदोलन के दमन के नाम से ढाई से तीन लाख पुलिस बलों को पहले से तैनात कर रखा है। इन सरकारों ने एक लाख से ज्यादा संख्या में अर्ध-सैनिक व पुलिस बलों, एसपीओ, होमगार्ड, नगर रक्षक सैनिक, गोपनीय सैनिक आदि को तैनात किया। इसके अलावा केन्द्र-राज्य सरकारों ने अर्ध-सैनिक व पुलिस बलों को बड़ी संख्या में बढ़ाने का काम शुरू किया। उनमें विशेष बलों का निर्माण अभूतपूर्व स्तर पर बढ़ाया जा रहा है। भारी पैमाने हो रही ये सारी तैनातियां कम्युनिस्ट विद्रोह को कुचलने की कार्रवाइयों के लिए ही। अपनी 'क्लियर एण्ड होल्ड' काउंटर इंसर्जेन्सी आपरेशन चलाए जा रहे हैं। इसके लिए कार्पेट सेक्यूरिटी की व्यवस्था के तहत बड़े-बड़े बेस कैम्प बिठाकर फौजी किस्म के अभियान चलाए जा रहे हैं। अपने बलों की तैनाती और आपरेशनों को ध्यान में रखते हुए क्रांतिकारी आंदोलन के इलाकों को सेक्टारों और सब-सेक्टारों में बांटा गया। कैम्पों की सुरक्षा व्यवस्था पुख़्ता की जा रही है जिससे हमलों से बचाव हो सके। उनके आपरेशन्स का मतलब 'सब कुछ तबाह करना' ही है। दंतेवाड़ा और बीजापुर जिलों में

'आपरेशन ग्रीन हंट' के नाम से कोबरा, सीआरपीएफ, एसटीएफ, कोया कमाण्डो, आंध्र ग्रेहाउण्ड्स आदि विशेष बलों के द्वारा चलाए जा रहे काउंटर गुरिल्ला आपरेशन्स की असलियत को जनता साफ तौर पर समझ रही है। 'सलवा जुडूम' के नाम से उन्होंने जो विनाशकारी प्रति-क्रांतिकारी सैन्य हमला चलाया और 'रणनीतिक बसाहटों' को खोला उसे जनता देख चुकी है। आज के भारी सैन्य हमले के तहत दण्डकारण्य के साथ-साथ देश के कई अन्य आदिवासी इलाकों में रणनीतिक बसाहटों की योजना जल्द ही लागू करने की घोषणा हो चुकी है।

केन्द्र-राज्य सरकारें हमारे नेतृत्व की हत्या करने, काउंटर इंसर्जेन्सी आपरेशन्स को प्रभावी रूप से चलाने, माओवादी आंदोलन के विस्तार को रोकने और देश भर में सभी क्षेत्रों में माओवादी ताकतों का सफाया करने के लिए ऊपर से नीचे तक गोपनीय खुफिया और काउंटर-इंटेल नेटवक्र का अभूतपूर्व पैमाने पर विस्तार किया जा रहा है। नई-नई एजेंसियां बनाई जा रही हैं। यह नेटवर्क असामान्य स्तर पर बढ़ चुका है। ये एजेंसियां कोवर्टों, हत्यारे गिरोहों और प्रति-क्रांतिकारी संगठनों को बनाकर द्रोहपूर्ण गतिविधियों को अंजाम दे रही हैं। जन संगठनों के नेताओं और कार्यकर्ताओं की हत्या करना आदि प्रति-क्रांतिकारी कार्रवाइयां कर रही हैं।

फासीवादी केन्द्र-राज्य सरकारें कई प्रकार की (कानूनी और गैर-कानूनी तरीके से) सेनाओं का लाखों की संख्या में निर्माण कर रही हैं ताकि समाज का अपराधीकरण और हिंसाकरण किया जा सके। वे अपने स्वर्थ हितों के लिए समाज को सशस्त्र बना रही हैं। आज क्रांति प्रति-क्रांति का सामना कर रही है। जन क्रांति प्रतिक्रियावादी क्रांति का मुकाबला कर उसे कुचल सके, इसके लिए जनता को सामूहिक और व्यापक रूप से सशस्त्र बनना अनिवार्य है। ये हालात खुद देश के शासकों ने पैदा किए हैं। इसीलिए जनता ने अपने आपको मिलिशिया नामक सशस्त्र महासमुद्र में तब्दील करने का बीड़ा उठाया। इसी वजह से आज जनयुद्ध की ऐतिहासिक जरूरत के तौर पर यह सामने आया है कि प्रतिक्रियावादी सरकारी विशेष बलों व सेनाओं का पलटकर जवाब देने के लिए जनता जन मुक्ति गुरिल्ला सेना के विशेष बल बने और सरकारी सेना को हरा सकने वाली जन मुक्ति सेना के रूप में विकसित हो। अगर उत्पीड़ित जनता अपने लिए और देश के लिए हथियारबंद हो जाती है, तो लुटेरे शासकों के लिए हथियारबंद बनने वाले भाड़े के बलों, चाहे वे कितनी बड़ी संख्या में भी हों या अत्याधुनिक हथियारों व साधन सम्पत्ति से लैस क्यों ने हों, का मिट्टी में मिल जाना तय है। यह बात इतिहास में बार-बार साबित हो चुकी है।

माओवादी विद्रोह को कुचलने के लिए केन्द्र-राज्य के शासक वर्ग नागरिक, प्रशासनिक और सैन्य व्यवस्था का इस तरह घालमेल किया जा रहा है कि पहले कभी नहीं देखा गया। साथ ही केन्द्र व राज्य सरकारों के बीच, विभिन्न बलों व तंत्रों के बीच अभूतपूर्व स्तर पर तालमेल बढ़ाने की कोशिश की जा रही है। संघर्ष के इलाकों में लोगों के सारे व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामुदायिक ब्यौरे इकट्ठे किए जा रहे हैं। आंदोलन के दमन के लिए नागरिक, प्रशासनिक और सैन्य व्यवस्थाओं के घालमेल से शासकों को अस्थाई रूप से भले ही मदद मिलती हो, इससे जनता पर, सभी जन क्षेत्रों पर और सरकारी व्यवस्थाओं पर अध र्-सैनिक व सैन्य बलों की तानाशाही स्थापित होना निश्चित है। इससे बेहिसाब भ्रष्टाचार व अनियमितताएं लाज़िमी हैं। राज्य व्यवस्था जनता के सामाजिक व राजनीतिक जीवन को निरंकुशता के साथ नियंत्रित करेगी। केन्द्रीय व राज्य के बल जनता पर तीखा हमला करेंगे। इस फासीवादी नीति से विभिन्न सरकारी बलों के बीच, विभिन्न सरकारी विभागों के बीच तथा विभिन्न सरकारों के बीच अंतरविरोध तीखे होंगे। ठीक यही स्थिति जनता को इस बेहद निरंकुश, भ्रष्ट, घटिया व सड़ी-गली व्यवस्था को तहस-नहस कर डालने के लिए प्रेरित करेगी। यही स्थिति इस दानव को धराशायी कर देगी।

विपरीत हितों वाले वर्गों या उनका प्रतिनिधित्व करने वाली पार्टियों को, जो एक दूसरे को मिटा देने के लिए टकराते रहती हैं, जीत हासिल करने के लिए विचारधारात्मक तौर पर अपने या अपने खेमे को एकजुटता से टिकाए रखना और दुश्मन के खेमे को तितर-बितर कर तोड़ देना या अलग-थलग करना जरूरी है। असली युद्ध (सशस्त्र युद्ध) के पहले तैयारी के तौर पर, जब युद्ध चल रहा होता है तब उसे प्रभावी ढंग से चलाकर जीत हासिल करने के लिए, युद्ध के बाद पराजित पक्ष का सफाया करने के लिए और युद्ध के जख़्मों को मिटाकर फिर से युद्ध को सिर उठाने से रोकने के लिए विचारधारा और मानसिकता के क्षेत्र में किए जाने वाले युद्ध को ही मनोवैज्ञानिक युद्ध कहा जाता है। साम्राज्यवादी और प्रति-क्रांतिकारी शासक अपनी एलआईसी युद्ध की नीति के तहत मनोवैज्ञानिक युद्ध को रणनीतिक पहलू के रूप में संचालित कर रहे हैं। युद्ध परिस्थिति की तीव्रता या युद्ध की तीव्रता के मुताबिक इसके महत्व में बदलाव होगा।

माओवादी आंदोलन के इलाकों में लाखों राज्य बलों के अलावा करीब एक लाख अर्ध-सैनिक बलों को तैनात किया गया। ज्यों-ज्यों इनकी संख्या में बढ़ोत्तरी होने लगी है, मनमोहन, चिदम्बरम, सोनिया, पिल्लई, रमनसिंह, विश्वरंजन, लांगकुमेर, महेन्द्र कर्मा, बुद्धदेव, चवान, पटनायक और उनके भाड़े के बुद्धिजीवी, भाड़े की मीडिया, भाड़े के हत्यारे गिरोह और तमाम प्रतिक्रियावादी संगठन माओवादी पार्टी पर, पीएलजीए पर तथा क्रांतिकारी आंदोलन पर अभूतपूर्व स्तर पर दुष्प्रचार करने लगे हैं। अपने मनोवैज्ञानिक युद्ध के तहत ये जोर शोर से प्रचार कर रहे हैं कि माओवादी कानून के विरोधी हैं, हिंसावादी हैं और विकास के विरोधी हैं। इन गोबेल्स की औलादों और इस सड़ी-गली व्यवस्था के रखवालों ने माओवादी पार्टी के खिलाफ कीचड़ उछालने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। वे बार-बार बिना शर्मोहया के खुलेआम घोषणा कर रहे हैं कि वे माओवादियों का सफाया कर और भगाकर अपना सड़-गल चुका, भ्रष्ट, शोषक, उत्पीड़क, अत्याचारी, दमनकारी, तानाशाह, देशद्रोहपूर्ण व प्रतिक्रियावादी

शासन लागू करेंगे। दूसरी तरफ शांति के ये ढोंगी पुजारी अहिंसा का प्रवचन दे रहे हैं कि माओवादियों को हथियार और हिंसा छोड़कर सरकार के साथ वार्ता के लिए आगे आना चाहिए। ज्यों-ज्यों काउंटर इंसर्जेन्सी आपरेशन्स में तेजी आने लगी है, मनोवैज्ञानिक युद्ध का महत्व इस हद तक बढ़ा है कि पहले कभी ऐसा नहीं था। इस प्रतिक्रियावादी मनोवैज्ञानिक युद्ध का पलटा जवाब देने के लिए क्रांतिकारी आंदोलन के इलाकों तथा देश के अंदर और बाहर बड़े पैमाने पर क्रांतिकारी प्रचार युद्ध चलाना चाहिए। असली युद्ध में जीत हासिल करने के लिए प्रचार युद्ध में प्रभावशाली तरीके से लड़ना बेहद जरूरी है।

प्रतिक्रियावादी शासक राज्य और सभी साधनों को अपनी मुट्ठी में रखकर श्वेत आतंक के साथ जोड़कर जो झूठा प्रचार कर रहे हैं वह देश की अत्यधिक जनता और देश के हितों के पूरी तरह खिलाफ है। इसीलिए यही आखिरकार जनता से उनके अलग-थलग पड़ जाने और उनकी पराजय को गति देने का कारण बनेगा। चूंकि क्रांतिकारी प्रचार वास्तविक होता है, देश की व्यापक जनता के हितों का वह प्रतिनिधित्व करता है तथा उसके द्वारा ही चलाया जाता है, इसलिए जनता की जीत और दुश्मन की पराजय का आधार भी इसमें होता है। दुश्मन जब एलआईसी नीति पर अमल कर रहा हो, हमें मनोवैज्ञानिक युद्ध के रणनीतिक महत्व को पहचानना चाहिए। युद्ध और गैर-युद्ध के तरीकों में, देश और विदेश में तथा जनता के बीच और दुश्मन के बीच व उनके भाड़े के बलों के बीच में भी हमें दुश्मन के मनोवैज्ञानिक युद्ध का प्रतिरोध करना बेहद जरूरी है।

दुश्मन ने अपने हमले का लक्ष्य, अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए लागू एलआईसी की नीति, अपनी रणनीतिक योजना और अपनाई जाने वाली रणनीति-कार्यनीति के बारे में अब तक कई बार खुलेआम घोषणा कर रखी है। हमारी पार्टी को इन सबका मुकाबला करना होगा। इन सभी क्षेत्रों में हमसे टक्कर लेकर हमें पराजित करने के लिए ही दुश्मन युद्ध के मौजूदा हालात को ध्यान में रखते हुए जब-तब अपनी नीतियों में सुधार कर रहा है। हमें भी दुश्मन को और आज के युद्ध के ठोस हालात को ध्यान में रखते हुए जब-तब अपनी नीतियों में जरूरी सुधार करना चाहिए और उन्हें समृद्ध कर लेना चाहिए।

दुश्मन द्वारा देश भर में अभूतपूर्व स्तर पर चलाए जा रहे चौतरफा और भारी सैनिक हमले से बचाव के लिए हमें अत्मरक्षात्मक युद्ध जारी रखना चाहिए। हमारा आत्मरक्षात्मक युद्ध चौमुखी है। यह सभी मोर्चों में दुश्मन का मुकाबला करने वाला युद्ध है। हमारा उन्मूलन कर और हमें खदेड़कर अपनी पुरानी प्रतिक्रियावादी व्यवस्था और शासन स्थापित करने के लक्ष्य से दुश्मन ने जो 'क्लियर एण्ड होल्ड' नीति अपनाई है, उसे पराजित कर एकता कांग्रेस द्वारा निर्देशित लक्ष्यों को हासिल करना ही हमारे आत्मरक्षात्मक युद्ध का लक्ष्य है। हमारी केन्द्रीय कमेटी के नेतृत्व में सभी पार्टी कमेटियों, सैन्य कमिशनों, कमाण्डों और जन संगठनों को चाहिए कि वे दुश्मन के हमले को पराजित कर आत्मरक्षात्मक युद्ध को विकसित करने के लिए सभी जरूरी तैयारियां पूरी करें।

हमें सक्रिय आत्मरक्षात्मक युद्ध को ही महत्व देना चाहिए ताकि दुश्मन द्वारा जारी भारी सैन्य हमले को पराजित कर जीत हासिल की जा सके। जिस प्रकार हमारे आत्मरक्षात्मक युद्ध में आत्मसमर्पण और पलायन के लिए कोई जगह नहीं है, उसी प्रकार ऐसे दावपेंचों के लिए भी कोई जगह नहीं है जो करो या मरो वाली लड़ाइयों की हिमायत करते हैं। हमारे दावपेंच ऐसे होने चाहिए जो बुनियादी तौर पर ठोस राजनीतिक हालात के साथ-साथ विभिन्न इलाकों में आंदोलन के असमान विकास पर आधारित हों। भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के आत्मरक्षात्मक चरण में आज के ठोस हालात को ध्यान में रखते हुए हमें प्रधान रूप से गुरिल्ला युद्ध ही चलाना चाहिए। गुरिल्ला युद्ध को चलायमान युद्ध में विकसित करने के भरसक प्रयास करने चाहिए।

रणनीतिक तौर पर देखा जाए तो हमारा युद्ध दीर्घकालीन होगा। युद्ध की कार्रवाइयों का संचालन करने का तरीका तुरत-फुरत नतीजे देने वाला होना चाहिए। यानी युद्ध की कार्रवाइयां कम समय में खत्म हों और तुरत-फुरत परिणाम देने वाली हों। बलों के केन्द्रीकरण और विकेन्द्रीकरण में हमें महारत हासिल करना चाहिए। दुश्मन का सफाया करने वाली युद्ध कार्रवाइयों और हथियार जब्त करने को महत्व देना चाहिए। दुश्मन हमारे बलों को छोटे-छोटे इलाकों में सीमित कर नाश करने की कोशिश करेगा। इतना ही नहीं, वह हमारे मजबूत इलाकों में अपने बेस कैम्प लगाकर लगातार काउंटर इंसर्जेन्सी अभियानों से उन्हें बांटकर और छोटे इलाकों में बदलकर गुरिल्ला बलों का विनाश करने की कोशिश करेगा। इसलिए अपने बलों को चाहिए कि वे व्यापक क्षेत्र में लड़ने का प्रयास करें। इस तरह हम दुश्मन द्वारा चलाए जाने वाले 'घेराव-तलाश-दमन' अभियानों का प्रभावी रूप से मुकाबला कर सकेंगे। अपने बलों की गतिविधियों का विस्तार व्यापक क्षेत्र में करना चाहिए ताकि हम खुद दुश्मन का घेराव कर हमला कर सकें। आत्मरक्षा और प्रत्याक्रमण की कार्रवाइयों के साथ-साथ पूरे आत्मरक्षात्मक युद्ध में उत्पीड़ित जनता को सक्रिय रूप से गोलबंद करने की जीतोड़ कोशिश करनी चाहिए। अपने जनाधार व जनता की नई राजसत्ता का सम्पूर्ण उपयोग करते हुए हमें जन मिलिशिया और गुरिल्ला बलों को व्यापक व मजबूत बनाना चाहिए। आज के युद्ध के स्तर को ध्यान में रखते हुए इनके लड़ाकू स्तर को बढ़ाने की तीव्र कोशिश करनी चाहिए। जनताना सरकारों को संगठित करने और व्यापक बनाने के कार्यभार की पूर्ति (युद्ध के मैदान में हासिल करने वाले नतीजों पर आधारित होकर लहर-दर-लहर या धीमे से) को विशेष महत्व देना चाहिए। नई राजनीतिक सत्ता से युद्ध में कामयाबियां हासिल करने की गारंटी मिल जाती है।

भारत के शासक वर्गों द्वारा लागू जन विरोधी, देश विरोधी, साम्राज्यवाद-अनुकूल और विस्तारवादी नीतियों के कारण तथा क्रांतिकारी आंदोलन के दमन के नाम से जनता पर प्रतिक्रांतिकारी युद्ध को थोपने के कारण भारतीय समाज में सभी अंतरविरोध

भाकपा (माओवादी) के महासचिव कॉमरेड गणपति के साथ माओइस्ट इन्फॉर्मेशन बुलेटिन द्वारा लिया गया साक्षात्कार

(10 सितम्बर 2009 को एमआईबी द्वारा लिए गए इस साक्षात्कार में पार्टी के हमारी पार्टी के महासचिव कॉमरेड गणपति ने लालगढ़ संघर्ष, एलटीटीई की पराजय, नेपाल के परिणाम और पार्टी को हो रहे नुकसानों समेत वर्तमान दौर के विभिन्न राजनीतिक मुद्दों पर पार्टी का दृष्टिकोण रखा। पाठकों की समझदारी के लिए हम इसका हिंदी रूपांतरण पेश कर रहे हैं। - सम्पादकमण्डल)

एमआईबी (माओइस्ट इन्फार्मेशन बुलेटिन)– लालगढ़ विद्रोह पश्चिम बंगाल में एक नयी क्रान्तिकारी चिन्गारी बन चुका है। कुछ लोगों ने इसे नया नक्सलबाड़ी कहा है। इस आन्दोलन में आपकी पार्टी की क्या भूमिका है?

कॉमरेड गणपति– लालगढ़ जन उभार ने वास्तव में शोषित जनता और पश्चिम बंगाल में समस्त क्रान्तिकारी समूह के बीच नयी आशा का संचार किया है। इसने न सिर्फ पश्चिम बंगाल की जनता पर बल्कि देश की समूची जनता पर महान सकारात्मक असर डाला है। हमने इससे पहले इस तरह के आन्दोलन, सेना के अत्याचार और एफएसपीए के खिलाफ मणिपुर में देखा है, कश्मीर में देखा है, दण्डकारण्य में देखा है और कुछ हद तक ओड़िशा में, टाटा के हितों की रक्षा करते हुए नवीन पटनायक सरकार द्वारा कलिंगनगर हत्याकाण्ड के बाद देखा है।

इसके बाद सिंगूर और नन्दीग्राम में जनान्दोलन हुआ। लेकिन इन आन्दोलनों में शासक वर्ग के एक तबके की भूमिका भी महत्वपूर्ण थी। इन आन्दोलनों को शासक वर्ग की पार्टियों ने अपने खुद के चुनावी हितों के लिए इस्तेमाल कर लिया। लेकिन लालगढ़ आन्दोलन ज्यादा व्यापक और ज्यादा स्थायी जन राजनीतिक आन्दोलन है, जिसने सभी संसदीय राजनीतिक पार्टियों को बहिष्कृत करते हुए इन्हें पूरी तरह से अप्रासंगिक बना दिया है। लालगढ़ की जनता ने हाल में हुए लोक सभा चुनाव का बहिष्कार करते हुए इन सभी प्रतिक्रियावादी शासकवर्ग की पार्टियों के खिलाफ अपने गुस्से और असंतोष का इजहार किया है। इसने तथाकथित संसदीय मुख्यधारा से एक स्पष्ट विभाजन रेखा खींची है और इसके आत्मनिर्भर स्वरूप के कारण ही लालगढ़ के जनान्दोलन के प्रति इन पार्टियों में कोई रुचि नहीं है। लालगढ़ आन्दोलन में कुछ और विशेषताएं हैं जैसे महिलाओं की व्यापक संख्या में हिस्सेदारी, इसका ईमानदार लोकतान्त्रिक चरित्र और आदिवासियों की बड़े पैमाने पर लामबन्दी। अतः यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि पश्चिम बंगाल में क्रान्तिकारी जनवादी ताकतों के बीच यह ध्रुवीकरण बिन्दु बन चुका है।

जहां तक हमारी पार्टी की भूमिका का सम्बन्ध है, हम 1980 से ही जंगलमहल कहे जाने वाले इस क्षेत्र, पश्चिम मिदनापुर, बांकुरा और पुरुलिया में काम कर रहे हैं। हमने स्थानीय सामन्ती ताकतों, सीपीएम और तृणमूल कांग्रेस के गुण्डों और वनाधिकारियों, ठेकेदारों तथा निर्मम सूदखोरों के शोषण व उत्पीड़न के खिलाफ लड़ाई लड़ी है। विशेषतौर पर शासकवर्गीय सीपीएम इस क्षेत्र में आदिवासियों का दमन और उत्पीड़न करता रहा है और उसने उसकी सत्ता के खिलाफ आवाज उठाने वालों का दमन करने के लिए हरमदवाहिनी जैसी गुण्डा वाहिनी भी खड़ी की है। राज्य प्राधिकार के साथ मिलकर और पुलिस के सहयोग से यह देश के दूसरे क्षेत्रों के क्रूर सामन्तों से भी ज्यादा खराब भूमिका अदा कर रही है।

इस पृष्ठभूमि में कोई भी जो सीपीएम के इस दमन व उत्पीड़न के खिलाफ लड़ सकता है, वह जनता का विश्वास और सम्मान आसानी से प्राप्त कर सकता है। चूंकि हमारी पार्टी सीपीएम गुण्डों के अत्याचारों के खिलाफ समझौताविहीन संघर्ष चला रही है, तो स्वाभाविक रूप से इसने क्षेत्र की जनता का सम्मान और विश्वास हासिल कर लिया है।

यह जन विद्रोह हमारी पार्टी द्वारा इस क्षेत्र में लम्बे कृषि क्रान्तिकारी कामों, अलग झारखण्ड राज्य के लिए होने वाले जुझारु आन्दोलन के साथ–साथ सीपीएम और पुलिस द्वारा किये गए अत्याचारों के खिलाफ

जनता के स्वतःस्फूर्त गुस्से का परिणाम है। 2 नवम्बर 2008 के बारूदी सुरंग विस्फोट के बाद हुए पुलिस अत्याचारों ने एक उत्प्रेरक का काम किया। जिसने जनता के संचित गुस्से को बेहद मुखर बना दिया है। और इसने दीर्घकालीन जनान्दोलन का रूप ले लिया। उपरोक्त कारकों के चलते जनता राज्य के खिलाफ स्वैच्छिक रूप से सामने आ खड़ी हुयी और हमारी पार्टी ने इसमें उत्प्रेरक की भूमिका अदा की। संक्षेप में कहें तो लालगढ़ जन विद्रोह के पीछे हमारी पार्टी का लम्बे समय तक किया गया सचेत काम और स्वतःस्फूर्तता का तत्व दोनों काम कर रहे हैं। हमें इसे दिमाग में रखना चाहिए।

एमआईबी– ऐसा आरोप है कि सीपीआई (माओवादी) ने पश्चिम बंगाल में तृणमूल से लड़ने के लिए शासक वर्गीय सीपीएम से हथियार व गोली–बारूद लिए और बाद में सीपीएम से लड़ने के लिए तृणमूल से हथियार और गोली–बारूद लिये। सीपीआई (माओवादी) के एक पोलितब्यूरो सदस्य ने मीडिया को दिए एक साक्षात्कार में इसे स्वीकार भी किया है। एक क्रान्तिकारी पार्टी के लिए इन शासक वर्ग की पार्टियों से हथियार लेना कहां तक उचित है?

कॉमरेड गणपतिः– यह सिर्फ आंशिक सत्य है। भूतपूर्व सीपीआई (एमएल) (पीडब्ल्यू) की 1995–96 के बीच हुयी एक सीसी मीटिंग में हमें यह पता चला कि हमारे स्थानीय कार्यकर्ता ने उस क्षेत्र की सीपीएम यूनिट से कुछ गोली–बारूद लिये हैं। हालांकि इस सन्दर्भ में सीपीएम के नेतृत्व से हमारी ऐसी कोई समझदारी नहीं थी। उस समय हमारा एप्रोच यह था कि उस क्षेत्र में तृणमूल की गुण्डागर्दी और दमन के खिलाफ शोषित जनता के सभी हिस्सों को नीचे के स्तर से संगठित किया जाए और चूंकि शोषित जनता का एक हिस्सा उस समय सीपीएम के प्रभाव में था अतः तृणमूल के खिलाफ हमने साथ–साथ लड़ाई लड़ी। फिर भी, पश्चिम बंगाल की समस्त स्थितियों को ध्यान में रखते हुए जबकि अन्तरविरोध बुनियादी रूप से प्रतिक्रियावादी शासक वर्गों के दो तबकों के बीच था, स्थानीय स्तर पर भी सीपीएम से हथियार व गोली–बारूद लेना सही कदम नहीं था।

हमारी सीसी ने इस पर चर्चा की और इस निर्णय के लिए जिम्मेदार कामरेड की आलोचना की और सम्बन्धित कामरेड से इसे तुरन्त रोकने को कहा। जहां तक तृणमूल कांग्रेस से हथियार लेने का सम्बन्ध है, मुझे याद है कि हमने इसे सीधे तृणमूल से नहीं खरीदा था बल्कि जिससे खरीदा था उसका तृणमूल से सम्बन्ध था। हमारी सीसी का निर्णय था कि हथियार सिर्फ हथियार स्मगलरों से ही न खरीदा जाए बल्कि उन सभी से खरीदा जाए जो हमें बेचने को तैयार हों चाहे उनकी पार्टी सम्बद्धता कुछ भी हो। हथियार बेचने वालों के साथ कोई समझौता या शर्त नहीं होगी। अभी तक की हमारी यही समझदारी है। जहां तक हमारे पीबी सदस्य के साक्षात्कार का सवाल है हम देखेंगे कि वास्तव में उन्होंने क्या कहा था।

एमआईबी– लालगढ़ में केन्द्रीय व राज्यबलों के भारी आक्रमण के बाद अब आपकी क्या कार्यनीति होगी?

कॉमरेड गणपतिः– सबसे पहले मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि हमारी पार्टी लालगढ़ और समस्त जंगलमहल की जनता के साथ मजबूती के साथ खड़ी होगी और जनता के हितों और उसकी इच्छा के अनुसार ही कार्यनीति तय की जाएगी। हम राज्य के खिलाफ संघर्ष को हर दिशा में फैलाएंगे और व्यापक जनता को जन उद्देश्यों के साथ खड़ा करेंगे। हम राज्य आक्रमण का मुकाबला, सीपीएम गुण्डों, हरमदवाहिनी और पुलिस के खिलाफ जनता को कहीं अधिक जुझारू तरीके से लामबन्द करते हुए, करेंगे। आन्दोलन के विकास का मार्ग निस्संदेह उस क्षेत्र की जनता की चेतना के स्तर और उसकी तैयारी पर निर्भर करेगा। पार्टी अपनी कार्यनीति सूत्रबद्ध करते समय इसे ध्यान में रखेगी। जनता की पहलकदमी पूरी तरह खोली जाएगी। हमारी पार्टी को भी लालगढ़ की जनता से बहुत कुछ सीखना है। उनका यह उभार हमारे अनुमानों से कहीं ज्यादा था। वास्तव में क्रान्तिकारी राजनीति से प्रभावित अगुआ तत्वों के सहयोग से यह सामान्य जनता ही थी जिसने कार्यनीति को सूत्रबद्ध करने में निर्णायक भूमिका अदा की। उन्होंने अपने खुद के संगठन बनाए, मांग पत्र रखा, संघर्ष के विभिन्न नए रूपों को जन्म दिया और पुलिस तथा सामाजिक फासीवादी हरमद गैंग के क्रूर आक्रमणों के बावजूद डटकर खड़ी रही। लालगढ़ आन्दोलन को न सिर्फ पश्चिम बंगाल के बल्कि पूरे देश के क्रान्तिकारी और जनवादी ताकतों का समर्थन प्राप्त है। हम देश के सभी क्रान्तिकारी और जनवादी ताकतों से अपील करते हैं कि वे पश्चिम बंगाल के बुद्धदेव सरकार और केन्द्र की यूपीए सरकार के फासीवादी हमलों का एकजुट होकर मुकाबला करें। व्यापक संघर्षशील मोर्चा बना कर और जुझारू जन राजनीतिक आन्दोलन की कार्यनीति के साथ जनता के सशस्त्र संघर्ष और हमारे पीएलजीए को उचित रूप में मिला कर, हम केन्द–राज्य बलों के भारी आक्रमण को परास्त कर सकते हैं। आज की तारीख में मैं इस मुद्दे पर और ज्यादा कुछ नहीं कह सकता।

एमआईबी– केन्द्र की यूपीए सरकार ने सीपीआई (माओवादी) को आतंकवादी संगठन करार देकर और पार्टी पर अखिल भारतीय प्रतिबन्ध लगा कर एक चौतरफा युद्ध का ऐलान कर दिया है। सरकार ने यह कदम क्यों उठाया और इससे पार्टी और क्रान्तिकारी आन्दोलन किस हद तक प्रभावित होगा?

कॉमरेड गणपतिः– हमारी पार्टी भारत के कई राज्यों में पहले से ही प्रतिबन्धित है। पूरे देश में प्रतिबन्ध लगा कर सरकार, पश्चिम बंगाल में और कुछ दूसरे राज्यों में, जहां कानूनी अवसर कुछ हद तक मौजूद थे, हमारी सभी खुली गतिविधियों को कुचलना चाहती है। सरकार इस शैतानी यूएपीए कानून का इस्तेमाल करके माओवादी प्रभाव वाले क्षेत्रों में होने वाले झूठी मुठभेड़ों, बलात्कारों और दूसरे पुलिस अत्याचारों के खिलाफ उठने वाली हर आवाज़ को कुचलना चाहती है। जो कोई भी राज्य की क्रूरता पर सवाल उठाएगा उसे आतंकवादी घोषित कर दिया जाएगा।

असली आतंकवादी और देश की सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा और कोई नहीं, दिनप्रतिदिन जनता को आतंकित करने वाले, मनमोहनसिंह–चिदम्बरम–बुद्धदेव और दूसरे शासकवर्गीय नेता तथा दलाल बड़े पूंजीवादी घराने व सामन्ती ताकतें हैं। सलवा जुडूम, हरमदवाहिनी, शांति सेना, नागरिक सुरक्षा समिति और विभिन्न प्रकार के कोबरा, टाइगर व सेना आदि आतंकवादी दल हैं। इन विभिन्न गुण्डा गैंगों को प्रत्यक्ष रूप से राज्य द्वारा गठित किया जाता है व संचालित किया जाता है। पुलिस, सीआरपीएफ, बीएसएफ, दूसरे केन्द्रीय बल और भारतीय सेना की टुकड़ियां कश्मीर, उत्तरपूर्व, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, बिहार, उड़ीसा, आन्ध्रप्रदेश, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र और दूसरी जगहों की जनता के बीच बड़े पैमाने पर आतंक फैला रही हैं। यही ताकतें वास्तविक आतंकवादी हैं। दिल्ली और वाशिंगटन में बैठे इनके आका प्रभावित जनता के विरोध के हर तरीके को खत्म कर देना चाहते हैं। मनमोहन सिंह–चिदम्बरम और उनकी कम्पनी के दूषित दिमागों के लिए निर्दोष जनता पर इन गुण्डों द्वारा किया गया जनसंहार, बलात्कार और यातना 'कानून का शासन' है। जार्ज बुश, बराक ओबामा, राजपक्षे, मनमोहन सिंह, जरदारी और इन जैसे झूठे लोगों की डिक्शनरी के यह नए शब्द हैं।

यूपीए सरकार ने दूसरी बार सत्ता में आने पर तुरन्त ही यह घोषणा की कि वह माओवादी खतरे को कुचल देगी। और इस उद्देश्य के लिए उसने राज्यों को भारी मात्रा में धन देना शुरू कर दिया। इस कदम का तात्कालिक कारण दलाल नौकरशाह पूंजीपतियों और साम्राज्यवादियों विशेषकर अमरीकी साम्राज्यवाद का दबाव है जो हमारे देश के संसाधनों को बिना किसी बाधा के लूटना चाहते हैं। टाटा, मित्तल, रुइया, जिन्दल, बिरला, वेदान्ता, पोस्को और इन जैसी दूसरी कम्पनियों ने कांग्रेस को फंड दिया है और यूपीए सरकार से, भारतीय सेना के प्रति–क्रान्तिकारी विंग 'राष्ट्रीय रायफल्स' का इस्तेमाल करते हुए माओवादी आन्दोलन को कुचलने के लिए कह रही हैं। ये दैत्य जंगलमहल से लेकर उत्तरी आन्ध्र तक फैले विशाल क्षेत्रों में मौजूद अकूत खनिज सम्पदा और वन सम्पदा का दोहन करना चाहते हैं। यह क्षेत्र खनिज सम्पदा के मामले में जहां बहुत धनी है वहीं विकास के मामले में देश का सबसे पिछड़ा इलाका है। ये दैत्य इस सम्पदा को लूटना चाहते हैं और आदिवासी जनता को और गहरी गरीबी की ओर ढकेलना चाहते हैं।

शासक वर्गों द्वारा वर्तमान हमले का दूसरा महत्वपूर्ण कारण माओवादी आन्दोलन के तेज विस्तार का भय और भारतीय जनता के एक महत्वपूर्ण हिस्से में इसका बढ़ता प्रभाव है। दण्डकारण्य में जनताना सरकार और झारखण्ड, उड़ीसा और दूसरे राज्यों के कुछ भागों में क्रान्तिकारी जन कमेटी, जनवादी लोकतन्त्र और विकास का नया मॉडल बन चुकी है। शासक वर्ग विकास और लोकतन्त्र के इस नए मॉडल को कुचल देना चाहती है क्योंकि यह देश की जनता के सामने एक वास्तविक विकल्प के रूप में पैदा हो रही है।

एमआईबी– केन्द्रीय गृहमन्त्री चिदम्बरम ने घोषणा की है कि वर्तमान मानसून सत्र के अन्त में देश के माओवादी प्रभाव वाले क्षेत्रों के खिलाफ एक व्यापक सैन्य आक्रमण चलाया जाएगा। इस हमले का मुकाबला करने के लिए आपके पास क्या योजना है?

कॉमरेड गणपति– माओवादी आन्दोलन के खिलाफ पिछले पच्चीस सालों से भारत का प्रतिक्रान्तिकारी शासक वर्ग साम्राज्यवादियों की मदद से चौतरफा आक्रमण छेड़े हुए है। विभिन्न राज्य और केन्द्र में सभी सरकारों ने सालों साल इसके लिए योजनाएं बनायी हैं। लेकिन वह अपने क्रूर हमलों द्वारा हमारे सैकड़ों नेताओं और कार्यकर्ताओं की हत्या करने के बावजूद भी कोई महत्वपूर्ण सफलता हासिल नहीं कर सके। हमारी पार्टी और हमारा आन्दोलन संगठित हो रहा है। और नए क्षेत्रों में आगे बढ़ रहा है। दो या तीन राज्यों से शुरू होकर हमारा आन्दोलन आज 15 राज्यों में फैल चुका है, जिससे शासकवर्ग घबराया हुआ है। विशेष तौर से सितम्बर 2004 में भूतपूर्व एमसीसीआई और सीपीआई (एमएल) (पीडब्ल्यू) के विलय के बाद यूपीए सरकार ने माओवादी आन्दोलन के खिलाफ सबसे क्रूर और चौतरफा आक्रमण छेड़ दिया। फिर भी कुछ गम्भीर नुकसानों के बावजूद, हमारी पार्टी लगातार विकसित होती रही। विशेषतौर से पिछले तीन सालों में हमारी पीएलजीए ने कई महत्वपूर्ण जीतें हासिल की हैं। इसने छत्तीसगढ़ में सबसे क्रूर राज्य प्रायोजित आतंकवादी अभियान सलवाजुडूम, झारखण्ड में सेन्ड्रा और बिहार, पश्चिम बंगाल, ओड़िशा, महाराष्ट्र और अन्य राज्यों में विभिन्न गुण्डा समूहों को परास्त किया है। इन सभी अपमानजनक असफलताओं के बाद शासकवर्गों ने हमारे आन्दोलन को खत्म करने के लिए खून की नदी बहा देने का निर्णय लिया है। हम जनता के सक्रिय भागीदारी व समर्थन से दुश्मन के लगातार हमलों का

मुकाबला कर रहे हैं। हमारे बहादुर पीएलजीए योद्धा इस प्रतिरोध की अगली कतार में हैं और उन्होंने दुश्मन की ताकतों के खिलाफ अनेक सफल कार्यनीतिक प्रतिआक्रमण अभियान चलाए हैं। हम ऐसे बहादुराना प्रतिरोध गठित करके, समस्त पार्टी एवं पीएलजीए को तैयार करके तथा विभिन्न क्रान्तिकारी पार्टियों संगठनों व समस्त जनता के सहयोग से दुश्मन के इस नए हमले का मुकाबला करेंगे। हो सकता है कि शुरुआती चरण में दुश्मन को कुछ सफलता मिल जाए लेकिन अन्ततः हम देश भर की क्रान्तिकारी और जनवादी ताकतों के समर्थन से और व्यापक जनता की सक्रिय लामबन्दी से इस हमले को परास्त कर देंगे। इतिहास में कोई भी फासीवादी सत्ता या सैनिक तानाशाह जनता के न्यायपूर्ण व जनवादी संघर्ष को क्रूर ताकत द्वारा हमेशा के लिए कुचलने में सफल नहीं हो सका है। सभी तानाशाह व फासीवादी सत्ताएं जनप्रतिरोध ा की ऊंची लहरों द्वारा दूर फेंक दिये गये हैं। इतिहास बनाने वाली जनता हमारी पार्टी के नेतृत्व में एक तूफान की तरह उठ खड़ी होगी और देश पर शासन करने वाले इन प्रतिक्रियावादी खूनी दरिन्दों को उखाड़ फेंकेगी।

एमआईबी– आन्ध्रप्रदेश में पार्टी को लगे गम्भीर ध ाक्के से आप कैसे उबरेंगे? क्या आज आप यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि उन दूसरे राज्यों में जहां माओवादी आन्दोलन मजबूत है, यह दोहराया न जाए?

कॉमरेड गणपति– आन्ध्रप्रदेश में 60 के दशक के अन्त में श्रीकाकुलम में सशस्त्र जन उभार से लेकर आज तक क्रान्तिकारी आन्दोलन कई उतार–चढ़ावों से गुजरा है। 1971 में आन्दोलन को एक गम्भीर धक्का लगा लेकिन धीरे–धीरे इससे जरूरी सबक सीखते हुए हम इस धक्के से उबर सके और एक दशक के अन्दर हमने पूरे तेलंगाना में और बाद में पूरे राज्य में आन्दोलन को पुनर्जीवित कर दिया।

1985 में आन्ध्रप्रदेश में टीडीपी सरकार द्वारा प्रथम अघोषित युद्ध के दौरान हमारे आन्दोलन को पुनः एक ध ाक्का लगा। श्रीकाकुलम जन उभार के बाद पहली बार केन्द्रीय बल राज्य में तैनात किये गये और झूठी मुठभेड़ों में हत्यायें आम बात हो गयी। यह समय भूतपूर्व सीपीआई (एमएल) (पीडब्ल्यू) के अन्दर गम्भीर आन्तरिक संकट का काल भी था। 1889 तक उचित कार्यनीति अपनाते हुए और पूरे राज्य में संघर्ष की एक नयी लहर पैदा करते हुए हम इस धक्के से उबर चुके थे। नए क्षेत्रों में हमने विस्तार कर लिया था। 1989 तक उत्तरी तेलंगाना और दण्डकारण्य में गुरिल्ला जोन अस्तित्व में आ चुके थे।

एक बार फिर से 1991 में सरकार ने दूसरा बड़ा हमला शुरू किया। 1992 में हमारी पार्टी (भूतपूर्व पीडब्ल्यू) प्रतिबन्धित कर दी गयी और सैकड़ों की संख्या में झूठी मुठभेड़ों द्वारा की गयी हत्याओं से खून की नदी बहा दी गयी। यद्यपि शुरुआत में हमें गम्भीर नुकसान हुआ। लेकिन जल्दी ही हम इससे उबर गए और दुश्मन के हमले को परास्त कर दिया। 1998 में दुश्मन ने तीसरा बड़ा हमला किया। लेकिन अपने उद्देश्य को पाने में असफल रहा। इसी बीच हमारा आन्दोलन आन्ध्र प्रदेश से पूरे दण्डकारण्य में, उड़ीसा के कुछ हिस्सों में और दूसरे राज्यों में फैल गया। 2001 के बाद उत्तरी तेलंगाना में हमें गम्भीर धक्का लगा जबकि आन्ध्रप्रदेश के दूसरे हिस्सों में हम लगातार आगे बढ़ते रहे।

हमारी कई गम्भीर गल्तियों के कारण एपी के ज्यादातर हिस्सों में 2006 तक हमें गम्भीर नुकसान उठाना पड़ा। इसी समय हमें इस धक्के को दूसरे कोण से भी देखना चाहिए। दीर्घकालिक लोक युद्ध में आगे बढ़ना और पीछे हटना निहित होता है। यदि हम इस परिप्रेक्ष्य में आन्ध्र प्रदेश की स्थितियों पर नज़र डालें तो हम समझ सकते हैं कि यह एक प्रकार का पीछे हटना है। अपने से ताकतवर शत्रु का मुकाबला करते हुए हमने आन्ध्रप्रदेश के कुछ क्षेत्रों से अपनी ताकतों को अस्थायी रूप से पीछे हटाया, आसपास के दूसरे क्षेत्रों में अपने आधारों को विकसित और विस्तृत किया और फिर दुश्मन पर हमला किया।

हमारा क्रान्तिकारी आन्दोलन वस्तुगत परिस्थितियों से जन्मा और विकसित हुआ है। इन वस्तुगत परिस्थितियों को सही तरीके से इस्तेमाल करके और अनुकूल कार्यनीति अपना कर हमारी पार्टी एक कमजोर ताकत से एक हद तक महत्वपूर्ण ताकत में तब्दील हो चुकी है जिसका एक अखिल भारतीय चरित्र और राजनीतिक प्रभाव है। अतः हमें यह याद रखना चाहिए कि भले ही हमें धक्का लगा हो लेकिन यह धक्का अस्थायी है। आन्ध्रप्रदेश में हमारी क्रान्ति जिन वस्तुगत स्थितियों में पैदा हुयी उसमें कोई बुनियादी परिवर्तन नहीं आया है। यह बुनियादी तथ्य हमारे आन्दोलन के विकसित होने और घनीभूत होने के लिए लगातार एक महत्वपूर्ण आधार बना रहेगा। आज हमारे पास एक सुगठित जनाधार है, अपेक्षाकृत पहले से ज्यादा सुप्रशिक्षित जन गुरिल्ला सेना है और बुनियादी वर्गों में गहरे तक धंसी हुयी एक अखिल भारतीय पार्टी है जो क्रान्ति की रीढ़ है। यही कारण है कि देश के विभिन्न राज्यों में चल रहे हमारे क्रान्तिकारी युद्ध को प्रतिक्रियावादी शासक दबाने में असफल रहे है। जब हमारा आन्दोलन 1970 के शुरुआती वर्षों में लगे धक्के के बाद पुनः शुरू हुआ तो यह आन्ध्र प्रदेश (भूतपूर्व पीडब्ल्यू) और बिहार (भूतपूर्व एमसीसी) के कुछ हिस्सों में ही सीमित था। आज यह जनता के बीच गहरी जड़ें जमाते हुए एक व्यापक क्षेत्र में फैल चुका है। अतः आज हम आन्ध्र प्रदेश में आन्दोलन को पुनर्जीवित करने के लिए कुल मिला कर एक अच्छी स्थिति में हैं।

हमने आन्ध्रप्रदेश में पार्टी को लगे धक्के से उचित

सबक लिया है और, इस सबक पर आधारित होकर हमने अन्य राज्यों में अपनी कार्यनीति सुनिश्चित की है। फलतः हम दुश्मन के इस चौतरफा हमले से लड़ने में प्रभावी तरीके से सफल हो पाए हैं, अपनी आत्मगत ताकतों की सुरक्षा कर पाए हैं, अपनी पार्टी का सुदृढ़ीकरण किया है, एक जन मुक्ति गुरिल्ला सेना विकसित की है, कुछ पाकेटों में नयी जनवादी जन सरकारों के भ्रूण रूप को स्थापित कर पाए हैं, और जनयुद्ध को उच्चतर स्तर पर ले गए हैं। यहां तक कि पश्चिम बंगाल में, जहां कहा जाता था कि 70 के शुरुआती दशक के धक्के के बाद क्रान्तिकारी आन्दोलन को पूरी तरह से कुचल दिया गया है, हम लोकोक्ति के फीनिक्स पक्षी की तरह पुनः उठ खड़े हुए। उपरोक्त लाभकारी तत्वों के कारण आन्ध्रप्रदेश मे क्रान्तिकारी आन्दोलन के पुनर्जीवित होने में अपेक्षाकृत कम समय लगेगा। हमारी क्रान्ति लहरों की तरह आगे बढ़ती है और भाटे के काल के बाद ज्वार का समय आता है।

एमआईबी– श्रीलंका में एलटीटीई की पराजय के क्या कारण हैं? आप तमिल ईलम आन्दोलन के पुनर्जीवित होने की क्या संभावना देखते हैं?

कॉमरेड गणपति– श्रीलंका में एलटीटीई की पराजय के कई कारण हैं।

पहला, एलटीटीई अन्तरराष्ट्रीय खिलाड़ियों की वैश्विक रणनीति का शिकार हुआ है। अमेरिकी सम्राज्यवादी, यूरोपियन सम्राज्यवादी, बड़ी ताकत के रूप में उभरता चीन, और क्षेत्रीय ताकत भारत– इन सभी ने अपने–अपने रणनीतिक स्वार्थों के चलते, श्रीलंका के शासक वर्ग द्वारा एलटीटीई के खिलाफ उनके क्रूर आक्रमण का समर्थन किया। सिंहली अंधराष्ट्रवादी राजपक्षे शासन को इन सभी ताकतों द्वारा एवं साम्राज्यवादी संस्था – संयक्त राष्ट्र द्वारा खाली चेक दे दिया गया था। यूएन को, श्रीलंका सेना द्वारा चलाए जा रहे युद्ध अपराध एवं मानवता के खिलाफ किये जा रहे अपराधों के प्रति पूरी तरह से जानकारी थी, लेकिन उसने आवाज़ उठाने की जरूरत नहीं समझी। और, इसने तमिल नागरिक जनसंख्या पर होने वाले भयंकर अत्याचारों के लिए श्रीलंका सरकार को फटकार लगायी, जो केवल ढोंग था। एलटीटीई इन अन्तरराष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय खिलाड़ियों के रणनीतिक स्वार्थों का सही आकलन करने में नाकाम रहा और इस भ्रम में रहा कि इन ताकतों में से कुछ श्रीलंका सेना के आक्रमण को रोकने में हस्तक्षेप करेंगे।

दूसरा, सर्वहारा नेतृत्व का अभाव एवं बूर्जआ राष्ट्रवादी दृष्टिकोण के प्रभाव के कारण, श्रीलंका की जनता के साझे दुश्मन के खिलाफ एक व्यापक संयुक्त मोर्चा बनाने की दिशा में, एलटीटीई के नेतृत्व ने बहुत संकीर्णता से काम लिया। एलटीटीई तमिल ईलम के लिये लड़ने वाले अन्य समूहों को एकताबद्ध करने में नाकाम रहा। दूसरे तमिल राष्ट्रीय मुक्ति ताकतों के सफाए और उनकी मनमानी हत्या की इसकी नीति के कारण यह तमिल जनता के एक अच्छे–खासे हिस्से से अलगाव में पड़ गया था। वह पूर्व में मुसलमानों के साथ–साथ चाय बगानों में बड़ी संख्या में तमिल मजदूरों की जनसंख्या के साथ एकताबद्ध होने में भी नाकाम रहा।

एलटीटीई द्वारा कभी–कभी सिंहली जनता पर बिना सोचे समझे तरीके से किये गए हमलों का इस्तेमाल प्रतिक्रियावादी श्रीलंका शासकों द्वारा सिंहली जातीय अहंकार को जगाने एवं एलटीटीई के कब्जे वाले इलाके पर उनके नृशंस नरसंहार एवं बम वर्षा को सही ठहराने के लिए किया गया। एलटीटीई नेतृत्व के बूर्जआ वर्ग दृष्टिकोण के कारण लम्बे समय तक साम्राज्यवादी देशों के साथ–साथ भारत जैसे देशों पर भी इसकी निर्भरता बनी रही।

तीसरा, एलटीटीई द्वारा दुश्मन की कार्यनीति एवं तैयारियों में आने वाले परिवर्तनों को पकड़ने में असफल होना भी इसकी पराजय में एक प्रमुख भूमिका निभाता है। आरम्भ में, एलटीटीई की सैन्य कार्यनीति, मुख्यतः इसकी गुरिल्ला युद्ध की कार्यनीति से इसे अत्यधिक फायदा हुआ था। यह सिंहली अंधराष्ट्रवादी श्रीलंका सेना को गम्भीर क्षति पहुंचाने में सफल हो सकी थी। एक समय में, यह उत्तर एवं पूर्व में लगभग समूचे तमिल बहुल क्षेत्रों पर अपना नियंत्रण हासिल कर लिया था। लेकिन इसने श्रीलंका में एवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर होने वाले परिवर्तनों एवं दुश्मन की समूची रणनीति एवं कार्यनीति में होने वाले परिवर्तनों का वस्तुपरक अध्ययन नहीं किया। अतः यह मोर्चाबन्द युद्ध में ही लगा रहा जबकि दुश्मन एक ज्यादा बड़ी ताकत था उसके पास आर्टिलेरी, नौसेना और हवाई हमले का असीमित भण्डार था और वह लगातार बिना रुके हवाई हमले कर रहा था। यदि वह पूरी तरह मोर्चेबन्द युद्ध पर निर्भरता तथा करो या मरो के युद्ध में शामिल होने की बजाय गुरिल्ला युद्ध की ओर लौटकर अस्थायी रूप से अपने क्षेत्रों से पीछे हट कर अपनी ताकतों को बचाता, तो यह दूरगामी तौर पर लाभ में रहता और दुश्मन के नए हमलों को परास्त करने में सफल रहता। 80 एवं 90 के दशक के दौरान श्रीलंका सेना के खिलाफ महान विजय और यहां तक कि 87–89 के बीच आईपीकेएफ के खिलाफ महान विजय के कारण एलटीटीई का नेतृत्व आत्मसंतुष्टि वाले भाव में आ गया था।

आखिर में, एलटीटीई के नेतृत्व के एक हिस्से के विश्वासघात ने एलटीटीई पर गम्भीर प्रभाव डाला है। विशेषतौर पर करुणा के विश्वासघात और विघटन ने एलटीटीई को कमजोर करने में निर्णायक भूमिका निभायी है। समूचा पूर्वी प्रान्त एलटीटीई के नियंत्रण से बाहर हो गया और सिंहली शासक वर्ग वहां एलटीटीई के एक गद्दार के अधीन एक कठपुतली सरकार बना सका।

इसमें कोई संदेह नहीं कि एलटीटीई की पराजय और

उसके लगभग खात्मे से, अलग सम्प्रभु तमिल ईलम के आन्दोलन को गम्भीर धक्का लगा है। तमिल जनता और राष्ट्रीय मुक्ति की ताकतें आज नेतृत्वविहीन हैं। लेकिन तमिल जनता के दिलों में अलग तमिल राज्य की राष्ट्रीय आकांक्षा हमेशा जीवित रहेगी। वह परिस्थिति जिसने तमिल ईलम के आन्दोलन को पैदा किया आज भी जिन्दा है। सिंहली अन्धराष्ट्रवादी श्रीलंकाई शासक वर्ग तमिल राष्ट्र, उसकी संस्कृति भाषा आदि के प्रति अपनी भेदभाव की नीति को कभी बदलने वाली नहीं। प्रभाकरन की मृत्यु और एलटीटीई की पराजय के बाद पूरे श्रीलंका में सरकार और सिंहली राष्ट्रवादी पार्टियों ने जिस तरीके से भड़काऊ रैलियां कीं और उत्सव मनाया उससे यह पता चलता है कि सिंहली संगठनों ने तमिलों के प्रति राष्ट्रीय घृणा का भाव इस हद तक भर दिया है कि सामान्य सिंहली जनता का दिमाग भी ऐसे अन्धराष्ट्रवादी उत्तेजना से जहरीला हो गया है। सिंहली शासकवर्ग द्वारा तमिल क्षेत्रों पर कब्जा करने का षडयन्त्र इजरायल के जियोनवादी शासकों जैसा ही है। जमीन की भूखी सिंहली जनता को अब तमिल क्षेत्रों पर बसाया जाएगा। समूचे क्षेत्र का जनसंख्या अनुपात बदलने वाला है। तमिल मुक्ति संघर्ष के पुनर्जीवन की जमीन उर्वर बनी हुयी है।

कुछ समय जरूर लग सकता है लेकिन एलटीआई की पराजय से सबक लेते हुए अलग तमिल ईलम के लिए युद्ध निश्चित रूप से पुनर्जीवित होगा। सर्वहारा दृष्टिकोण व विचारधारा को अपनाते हुए, नयी कार्यनीति अपनाते हुए और सभी राष्ट्रीय व जनवादी ताकतों का व्यापक मोर्चा बनाते हुए शोषित तमिल राष्ट्र की मुक्ति को पाना सम्भव है।

माओवादी ताकतों को इसे नेतृत्व देने और सम्प्रभु तमिल ईलम के जन लोकतांत्रिक गणराज्य को पाने के संघर्ष में इसे सही दिशा देने और साम्राज्यवाद विरोधी रुख देने के लिए विकसित होना होगा। सिर्फ इसी से श्रीलंका में तमिल राष्ट्र की मुक्ति को प्राप्त किया जा सकता है।

एमआईबी– क्या यह सही है कि आपने शुरू में एलटीटीई से सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त किया था?

कॉमरेड गणपतिः–नहीं, यह सही नहीं है। हमने इसे पहले भी कई बार स्पष्ट किया है। हमारी पार्टी और एलटीटीई के बीच कोई सम्बन्ध नहीं है। हमने कई बार एलटीटीई से सम्बन्ध बनाने की कोशिश की लेकिन उसका नेतृत्व भारत के माओवादियो से सम्बन्ध बनाने को अनिच्छुक था। अतः एलटीटीई द्वारा हमें प्रशिक्षण देने का सवाल ही नहीं पैदा होता। इसके बावजूद हमने तमिल ईलम के संघर्ष को अपना समर्थन देना जारी रखा। हालांकि, कुछ लोग जो एलटीटीई से अलग हो चुके थे, 80 के दशक के अन्त में हमारे सम्पर्क में आए और हमने अपने प्रशिक्षण में उनकी शुरुआती सहायता ली। हम पहले भी इसे कई बार स्पष्ट कर चुके हैं।

एमआईबी– क्या लश्कर–ए–तोएबा या पाकिस्तान से सम्बन्ध रखने वाले दूसरे इस्लामिक मिलिटेंट समूहों के साथ आपकी पार्टी का सम्बन्ध है?

कॉमरेड गणपतिः– नहीं, बिल्कुल नहीं। यह हमें बदनाम करने और फलतः माओवादी आन्दोलन के खिलाफ उनके क्रूर हमलों को औचित्य प्रदान करने के लिए पुलिस अधिकारियों, नौकरशाहों और प्रतिक्रियावादी राजनीतिक पार्टियों के नेताओं द्वारा चलाया गया एक सुनियोजित दुष्प्रचार है। हमारे देश के प्रतिक्रान्तिकारी शासक इस झूठ का प्रचार करके कि हमारी पार्टी का पाकिस्तान की आईएसआई से जुड़े समूहों के साथ सम्बन्ध है, यह सिद्ध करना चाहते हैं कि हम भी आतंकवादी हैं और इस तरह से वे माओवादियों के खिलाफ और सशस्त्र कृषि संघर्ष के क्षेत्रों की जनता के खिलाफ अपने क्रूर आतंकी अभियान के लिए औचित्य पाना चाहते हैं। सभी तरह के न्यायपूर्ण और लोकतांत्रिक संघर्षों में विदेशी हाथ सिद्ध करने का प्रयास करना और शोषितों के लिए लड़ने वालों को देश का गद्दार घोषित करना प्रतिक्रियावादी शासकों के मनोवैज्ञानिक युद्ध का भाग है।

एमआईबी– आपकी पार्टी की इस्लामिक जेहादी आन्दोलन के सम्बन्ध में क्या अवस्थिति है? क्या आप समझते हैं कि इन आन्दोलनों का विकास क्रान्ति के लिए सहायक है?

कॉमरेड गणपतिः– आज का इस्लामिक जेहादी आन्दोलन, साम्राज्यवादियों विशेषकर अमेरिकी सम्राज्यवादियों के, पश्चिम एशिया में तेल वाले इस्लामिक और अरब देशों तथा अफगानिस्तान, पाकिस्तान, सोमालिया आदि देशों में उसके आक्रमण, हस्तक्षेप, शोषण व दमन तथा समूचे मुस्लिम धार्मिक तबके के उत्पीड़न का परिणाम है। वैश्विक आधिपत्य की उसकी योजना के भाग के तौर पर सम्राज्यवादियों विशेषकर अमरीकी साम्राज्यवादियों ने अपने गोद लिए हुए राज्य इजरायल को सभी तरह का खुला हमला करने और क्रूर आक्रमण करने के लिए उकसाते रहते हैं। अमरीकी साम्राज्यवाद ने प्रत्यक्ष रूप से अफगानिस्तान और ईराक पर हमला किया और लीबिया, सोमालिया, सूडान, ईरान, पाकिस्तान और दूसरे देशों पर बमबारी की। 9/11 हमले के बाद पूरी दुनिया में खोज–खोज कर मुस्लिम तबके का उत्पीड़न किया जा रहा है। मुस्लिमों पर अत्याचार, हिटलर के अधीन यहूदियों पर हुए अत्याचार की याद दिलाता है। ग्वांतनामो बे, अबूगारिब, बगराम एयरबेस आदि, नाजियों के तहत आश्विज की याद दिलाता है। अमरीकी साम्राज्यवादियों के उकसावे पर मुस्लिमों और फिलीस्तीन के अरबों का कत्लेआम उसी तरह किया जा रहा है जैसे हिटलर के अधीन यहूदियों का किया गया था।

हमारी पार्टी अरब और मुस्लिम देशों और सामान्य रूप

से मुस्लिम तबकों पर ''वैश्विक आतंक के खिलाफ युद्ध'' के नाम पर साम्राज्यवादियों विशेषकर अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनके प्रतिक्रान्तिकारी पिट्ठुओं द्वारा किये गये प्रत्येक हमले का साफतौर पर विरोध करती है। वस्तुतः मुस्लिम धार्मिक कट्टरपन्थ को सम्राज्यवादी तब तक हवा देते हैं जबतक कि वह उनके हितों की सेवा करे। जैसे कि सउदी अरब और खाड़ी के देशों में, कुवैत, अफगानिस्तान, ईराक, पाकिस्तान में तथा दूसरे देशों में।

इस्लामिक जेहादी आन्दोलन के दो पहलू हैं। पहला, उनका साम्राज्यवाद विरोधी पहलू और दूसरा, समाजिक और सांस्कृतिक मामलों में उनका प्रतिक्रियावादी पहलू। हमारी पार्टी साम्राज्यवाद के खिलाफ मुस्लिम देशों और उसकी जनता के संघर्षों का समर्थन करती है वहीं दूसरी ओर मुस्लिम कट्टरपंथ के समाजिक दृष्टिकोण और उनकी प्रतिक्रियावादी विचारधारा की आलोचना करती है और उनके खिलाफ संघर्ष करती है। सिर्फ माओवादी नेतृत्व ही सही साम्राज्यवाद विरोधी रुख के साथ नेतृत्व दे सकता है और मुस्लिमों तथा दूसरे धार्मिक समूहों की जनता के बीच वर्ग एकता पैदा कर सकता है। जैसे–जैसे कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी और दूसरी जनवादी धर्मनिरपेक्ष ताकतें मुस्लिम जनता पर अपना वैचारिक प्रभाव बढ़ाती जाएंगी, मुस्लिम कट्टरपंथ की विचारधारा और नेतृत्व का प्रभाव घटता जाएगा। कम्युनिस्ट क्रान्तिकारियों को मुस्लिम जनता के ऊपर मुल्ला और मौलवियों के साम्प्रदायिक धार्मिक विचार व दृष्टिकोण के प्रभाव को निरन्तर कम करने का प्रयास करना चाहिए। वहीं, विश्व की जनता के साझे दुश्मन साम्राज्यवाद, विशेषकर अमरीकी साम्राज्यवाद के खिलाफ सभी को एकजुट करना चाहिए।

एमआईबी– नेपाल के वर्तमान घटनाक्रम को आप कैसे देखते है?

कॉमरेड गणपतिः– हमारी केन्द्रीय समिति ने नेपाल के घटनाक्रम पर विचार किया और उसकी यह राय बनी कि यूसीपीएनएम का नेतृत्व वर्तमान में दक्षिण अवसरवादी लाइन का अनुसरण कर रहा है। वस्तुतः सीपीएनएम नेपाल में संसदीय रास्ते से दलाल सामन्ती पार्टियों के गठजोड़ से जैसे ही सत्ता में आया, हमने नेपाल में साम्राज्यवाद और भारतीय विस्तारवाद के हस्तक्षेप के गहरे खतरे को रेखांकित किया और कहा कि यह सीपीएनएम के नेतृत्व वाली सरकार को उखाड़ फेंकने में कोई कोर कसर बाकी नहीं रखेंगे। जब तक प्रचण्ड ने भारत सरकार के निर्देशों की अवहेलना नहीं की, इसे चलने दिया गया और जब यह भारतीय आधिपत्य के खिलाफ जाने लगी तो इसे तुरन्त सत्ता से उतार दिया गया। सीपीएनयूएमएल ने अमेरिकी साम्राज्यवाद और भारतीय विस्तारवाद के कहने से प्रचण्ड के नेतृत्व वाली सरकार से समर्थन वापस ले लिया।

कार्यनीति के नाम पर यूसीपीएनएम जिस शान्तिपूर्ण संक्रमण की लाइन का अनुसरण कर रही है हम उससे इत्तेफाक नहीं रखते। हमने यूसीपीएनएम को एक खुलापत्र भेजने का निर्णय लिया, जो जुलाई 2009 में जारी हुआ।

हमने खुले पत्र में अपनी पार्टी की अवस्थिति को रखा। इसमें हमने यह राय रखी कि यूसीपीएनएम ने वर्तमान राज्य में, चुनी हुयी संविधान सभा द्वारा और बूर्जआ लोकतांत्रिक गणराज्य द्वारा सुधार करने का रास्ता चुना है। जबकि जरूरत इस बात की है कि मार्क्सवादी–लेनिनवादी समझदारी के साथ जुड़े रहते हुए, पुराने राज्य को नष्ट करके सर्वहारा राज्य (नेपाल की अर्धसामन्ती–अर्धऔपनिवेशिक ठोस परिस्थिति में जनता के जनवादी राज्य) का निर्माण किया जाए। समाज के और सभी शोषित वर्ग सम्बन्धों के क्रान्तिकारी रूपान्तरण के जरिये समाजवाद के लक्ष्य की ओर यह पहला कदम होता। ज्यादातर ग्रामीण क्षेत्रों में वास्तविक सत्ता मौजूद होने के बावजूद, यह एक महान त्रासदी है कि यूसीपीएन ने दीर्घकालिक लोकयुद्ध को छोड़ने का मार्ग चुना और संसदीय रास्ते का अनुसरण किया।

यूसीपीएनएम की महान और गौरवशाली क्रान्तिकारी विरासत रही है। भारत की शोषित जनता और समूचे दक्षिण एशिया की जनता नेपाल के जनयुद्ध में आयी ऐतिहासिक छलांग और देश के बड़े हिस्से में आधार क्षेत्र की स्थापना से उत्साहित रहे हैं। जब नेपाल का क्रान्तिकारी आन्दोलन रणनीतिक आक्रमण के चरण में पहुंचा तो समस्त क्रान्तिकारी कैम्प बेसब्री से प्रतीक्षा करने लगा कि सत्ता पर कब्जे के लिए कब लम्बी छलांग लगेगी और कब सचमुच का नवजनवादी राज्य स्थापित होगा। लेकिन दुर्भाग्य से इस निर्णायक मोड़ पर यूसीपीएन का नेतृत्व एमएलएम के सिद्धान्त से विचलित होने लगा और नेपाल के शासकवर्ग तथा भारतीय विस्तारवाद के शासकवर्ग के साथ समझौते में चला गया। यूसीपीएन के नेतृत्व ने दक्षिणपंथी अवसरवादी और वर्ग संश्रयवादी रास्ते का अनुसरण शुरू कर दिया है और इस तरह इसमें करीब 13 हजार बहादुर शहीदों की महान शहादत की कीमत पर प्राप्त की गयी जनयुद्ध की ऐतिहासिक उपलब्धियों को हवा में फेंक दिया।

यह सुनकर अच्छा लगा कि यूसीपीएन के नेतृत्व के एक हिस्से ने कामरेड प्रचण्ड और दूसरे लोगों द्वारा अपनायी गयी संशोधनवादी अवस्थिति के खिलाफ संघर्ष शुरू कर दिया है। यूसीपीएनएम की महान क्रान्तिकारी विरासत के कारण हम आशा करते हैं कि पार्टी का यह अन्दरूनी संघर्ष नेतृत्व द्वारा अपनाए जा रहे दक्षिणपन्थी अवसरवादी लाइन को खत्म करने मे सफल रहेगा, संशोधनवादी अवस्थिति एवं व्यवहार से बाहर निकलेगा और एक बार पुनः एमएलएम के सिद्धान्तों पर मजबूत पकड़ बनाते

हुए नेपाल की ठोस स्थितियों में इसे रचनात्मक तरीके से लागू करेगा। हम आशा रखते हैं कि वह दिन आएगा जब यह दुनिया भर की एमएलएम ताकतों विशेष कर भारत की एमएलएम ताकतों के साथ बिरादराना सम्बन्धों को बहाल करेगा। और समाजवाद और साम्यवाद की ओर पहले कदम के रूप में नवजनवादी राज्य की स्थापना के लिए अपने लम्बे डग भरेगा।

एमआईबी– अभी हाल में केन्द्र और राज्य स्तर पर पार्टी नेतृत्व को गम्भीर नुकसान उठाना पड़ा है, इसके अलावा यह भी कहा जाता है कि कुछ वरिष्ठ माओवादी नेता जिसमें आप भी शामिल हैं काफी बूढ़े हो चुके हैं और गम्भीर बीमारियों से जूझ रहे हैं। आत्मसमर्पण के लिए इसे भी एक कारण के रूप में गिनाया जा रहा है। इन नुकसानों और आत्म समर्पणों से आन्दोलन पर कितना प्रभाव पड़ा है? बढ़ती उम्र और बीमारियों से होने वाली समस्याओं से आप कैसे निपट रहे हैं?

कॉमरेड गणपतिः–(मुस्कुराते हुए) इस तरह का प्रचार विशेषतौर पर आन्ध्रप्रदेश के एसआईबी द्वारा लगातार चलाया जा रहा है। यह माओवादी आन्दोलन के समर्थकों को निरुत्साहित करने और उन्हे भ्रमित करने के उद्देश्य के साथ खुफिया अधिकारियों और उच्च पुलिस अधिकारियों द्वारा चलाया जा रहे मनोवैज्ञानिक युद्ध का भाग है। यह सच है कि केन्द्र और राज्य स्तर के कुछ पार्टी नेता सरकारी मापदण्ड के अनुसार (जो साठ वर्ष की अवस्था पार कर चुके हैं) वरिष्ठ नागरिक हो चुके हैं। कुछ महीनों बाद आप मुझे भी वरिष्ठ नागरिक कह सकते हैं। (मुस्कुराते हुए) लेकिन अभी तक वृद्धावस्था और खराब स्वास्थ्य पार्टी के लिए कभी भी गम्भीर समस्या नहीं बनी। आप देख सकते हैं कि हमारी पार्टी के 'वरिष्ठ नागरिक' प्रतिदिन 16 से 18 घण्टे काम करते हैं और पैदल ही लम्बी यात्राएं करते हैं।

जहां तक आत्मसमर्पण की बात है तो यह बहुत बड़ा झूठ है कि कुछ समर्पण का कारण वृद्धावस्था और बुरा स्वास्थ्य रहा है।

जब हमारी सीसी के भूतपूर्व सदस्य लंका पापीरेड्डी ने साल के शुरू में आत्मसमर्पण किया तो मीडिया ने प्रचार किया कि हमारी पार्टी के और भी नेता बुरे स्वास्थ्य के कारण आत्मसमर्पण करेंगे। सच यह है कि पापीरेड्डी ने अपनी राजनैतिक प्रतिबद्धता खत्म होने और अपने निम्नपूंजीवादी झूठी प्रतिष्ठा और अहंकार के कारण समर्पण किया। जब सीसी ने उसे एक महिला कामरेड के साथ उसके अराजक व्यवहार के कारण सीसी से पदावनत किया तो वह पार्टी का सामना नहीं कर पाया।

हमारी पार्टी के कुछ वरिष्ठ नेता जैसे कामरेड सुशील रॉय और कामरेड नारायण सान्याल पैसठ साल से ऊपर की उम्र होने पर भी शासक वर्ग के लिए दुःस्वप्न बने हुए थे। उन्हें गिरफ्तार किया गया, यातनाएं दी गयीं और उनकी बढ़ती उम्र और खराब स्वास्थ्य के बावजूद उन्हें कैद में रखा गया। सरकार सभी सम्भव प्रयास कर रही है कि उन्हें जमानत न मिल पाए। हमारी पार्टी में बूढ़े होने के बाद भी, वह जो भी काम सम्भव है उसे करते हुए क्रान्ति की सेवा करता है। उदाहरण के लिये कामरेड निरंजन बोस की मिसाल सामने है, अभी हाल में जिनकी मृत्यु 92 वर्ष की उम्र में हुयी। निरंजन बोस शहीद होने तक क्रान्तिकारी प्रचार का काम करते रहे। सामाजिक फासीवादी शासक इस चिरयुवा माओवादी क्रान्तिकारी से इस कदर डरे हुए थे कि उन्होंने 4 वर्ष पहले उन्हें गिरफ्तार कर लिया था। माओवादी क्रान्तिकारियों की भावना और मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओवाद की ताकत इतनी बुलन्द है। गम्भीर बीमारी या शारीरिक मानसिक सीमाओं के कारण जब सामान्य काम करना सम्भव नहीं होता है तब ऐसे कामरेडों को यथोचित काम दिया जाता है।

जहां तक नेतृत्व की लगातार हो रही क्षति का सवाल है, यह एक तथ्य है कि हमने पिछले चार या पांच सालों में राज्य और केन्द्र स्तर के कुछ वरिष्ठ नेताओं को खोया है। कुछ नेताओं को गुप्त तरीके से गिरफ्तार किया गया और बहुत ही कायराना तरीके से उनकी हत्या कर दी गयी। जैसे केन्द्रीय स्तर पर कामरेड वडकापुर चन्द्रमौलि, सन्दे राजमौलि, पटेल सुधाकर और राज्य स्तर पर कामरेड सोमन्ना, मस्तान राव, रामचन्दर। इसके अलावा विभिन्न स्तरों के पार्टी कमेटी के अनेक कामरेडों, पीएलजीए कमाण्डरों, योद्धाओं को इसी तरीके से मार डाला गया। कई केन्द्रीय और राज्य नेताओं को विगत में झारखण्ड, बिहार, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, हरियाणा और दूसरे राज्यों में गिरफ्तार किया गया है। सम्पूर्णता में कहें तो नेताओं और कार्यकर्ताओं का यह नुकसान पार्टी और भारतीय क्रान्ति पर गम्भीर असर डालेगा। हम लगातार हो रही इन हानियों की समीक्षा कर रहे हैं और इसे रोकने के तरीके ढूंढ रहे हैं। कार्य की गुप्त प्रणाली को कठोरता से अपना कर, भूमिगत ढांचे को मजबूत बना कर, अपना जनाधार बढ़ाकर, निगरानी और स्थानीय खुफिया ढांचे का निर्माण करके, दुश्मन के खुफिया नेटवर्क को ध्वस्त करके और उसकी योजनाओं और कार्यनीति का अध्ययन करते हुए हम यह आशा करते हैं कि आगे हम इन नुकसानों को रोक सकेंगे। और इसी समय हम इन नुकसानों की क्षतिपूर्ति के लिये सभी स्तर पर नए क्रान्तिकारी नेतृत्व को प्रशिक्षित और विकसित कर रहे हैं।

एमआईबी– जार्ज बुश के बाद बराक ओबामा के आने पर अमेरिकी नीति में परिवर्तनों को आप कैसे देखते हैं?

कॉमरेड गणपतिः– पहली बात तो यह है कि यदि

कोई यह उम्मीद करता है कि जार्ज बुश के बाद बराक ओबामा के आने पर अमेरिकी नीति चाहे वह भीतरी हो या बाहरी, में कोई गुणात्मक फर्क आएगा तो वह कल्पनालोक में जी रहा है। तथ्य यह है कि ओबामा पिछले आठ महीनों से राष्ट्रीय सुरक्षा और विदेशी मामलों में जिन नीतियों का अनुसरण कर रहे हैं वह उनके पूर्ववर्ती की ही निरन्तरता दिखलाता है। घरेलू मामलों में प्रगतिविरोधी नीति, और बाहरी मामलों में आक्रामक नीति का वैचारिक और राजनीतिक औचित्य आज भी वही है जो बुश प्रशासन रखता रहा है– झूठ और कुत्साप्रचार पर आधारित तथाकथित आतंक के खिलाफ वैश्विक युद्ध की यह नीतियां वस्तुतः और बुरी हुयी हैं। ओबामा अपनी योजनाबद्ध आक्रामक नीति के तहत अफगानिस्तान में अमेरिकी नेतृत्व वाले आक्रामक युद्ध को पाकिस्तान के क्षेत्र तक ले गया है। साम्राज्यवादियों के, नये हत्यारों के इस मुखिया का हाथ हजारों महिलाओं और बच्चों के खून से सना हुआ हैं, जिन्हें अफगानिस्तान और पाकिस्तान में ड्रोन मिसाइल के आक्रमण द्वारा मार डाला गया है। अमेरिका के अन्दर भी छोटे कारपोरेट अभिजात्य वर्ग को बेलआउट देने और अमेरिकी नागरिकों के लोकतान्त्रिक व मानव अधिकारों पर हमले की नीति बिना किसी परिवर्तन के जारी है।

हमारी पार्टी ने नवम्बर 2001 में जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में इसे साफ रेखांकित किया था कि दुनिया का सरगना रिपब्लिकन बुश बने या डेमोक्रेट ओबामा, दुनिया पर इससे कोई फर्क पड़ने वाला नहीं। सत्ता और प्रभुत्व किसी व्यक्ति के हाथ में नहीं होती, चाहे वह कितना भी ताकतवर क्यों न प्रतीत होता हो, बल्कि छोटे, परजीवी, सैन्य–औद्योगिक, कारपोरेट–वित्तीय अभिजात्यों के प्रभुत्व वाले शासकवर्ग के हाथ में होती है। अमेरिकी सैन्य मशीन की प्रोग्रामिंग इस तरह से की गयी है कि वह वैश्विक आधिपत्य के उद्देश्य से, बिना परिणाम की परवाह किये आक्रमण व घुसपैठ करे और जनसंहार को अंजाम दे। बुश और ओबामा इन लालची उद्देश्यों को पूरा करने के वाले एक उपकरण मात्र हैं। इनके बीच का फर्क मात्र इनकी इस कुशलता में है कि यह वैश्विक आधिपत्य के अपने प्रोजेक्ट को कैसे लागू करते हैं और इसके लिए दूसरों को धोखा देने में यह कितने कुशल हैं। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि ओबामा की प्रशासनिक टीम में राबर्ट गेट्स, हिलेरी क्लिंटन, लैरी समर्स और इन जैसे अनेकों कुख्यात शोषकों के गिरोह हैं। ओबामा प्रशासन में विदेश सचिव हिलेरी क्लिंटन ईराक पर आक्रमण के मजबूत समर्थक के रूप में विख्यात है। और उन्होंने उस समय अपनी परपीड़क नाजी दिमाग का परिचय दिया था जब उन्होंने ईरान को धमकाते हुए कहा था कि यदि उसने इज़रायल पर आक्रमण किया तो उसे 'धरती के नक्शे से' मिटा दिया जाएगा।

ओबामा पश्चिम एशिया में तानाशाही फासीवादी और प्रतिक्रियावादी शासकों को समर्थन देने की उसी पुरानी नीति पर चल रहा है। और आतंकवादी राज्य इजरायल को सभी तरह का समर्थन दे रहा है। यह सिर्फ जारी ही नहीं है बल्कि इसमें इजाफा हो रहा है। अफगानिस्तान में अपने आतंकवादी अभियान के तहत नागरिक जनता का व्यापक नरसंहार किया जा रहा है, बलात्कार किया जा रहा है, यातना दी जा रही है और समूचे क्षेत्र का सम्पूर्ण विध्वंस किया जा रहा है। बुश से एक कदम आगे बढ़ते हुए अफगानिस्तान में अमेरिकी बलों को लगभग दुगुना कर दिया गया है और निर्दोष जनता पर ड्रोन हमला काफी बढ़ गया है। अमेरिका के सैन्य–औद्योगिक शासकवर्ग के लिए केन्द्रीय एशिया में गैस एक बड़ा लालच है। और ओबामा इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए उनका सबसे अच्छा मोहरा है। इन शार्कों का तात्कालिक उद्देश्य, रूस और ईरान को अलग रखते हुए,कैस्पियन समुद्र से तुर्कमेनिस्तान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान और भारत से होते हुए हिन्द महासागर तक गैस पाइपलाइन बनाना है। यह उसका दिवास्वप्न साबित होगा क्योंकि तीसरी शताब्दी में सिकन्दर से लेकर 1980 में सोवियत संघ तक मानव इतिहास में कोई भी विदेशी आक्रामक अफगान जनता की स्वतन्त्रता की आकांक्षा को कुचलने में सफल नहीं हुआ है। 2001 में माईकेल बर्डसन ने सही ही कहा कि अफगानिस्तान की धरती सभी साम्राज्यों के लिए कब्रगाह साबित हुयी है और यह अमरीकी साम्राज्यवाद के लिये भी यही साबित होगी।

कैस्पियन सागर की गैस को नियंत्रित करने और अफगान जमीन पर स्थायी सैन्य अड्डा बनाते हुए चीन को घेरने का ओबामा का सपना मृगतृष्णा ही साबित होगा। अफगानिस्तान में अस्थिरता समूचे अमेरिकी साम्राज्य में अस्थिरता को जन्म देगी और अफगानिस्तान निश्चित रूप से अमरीकी साम्राज्य के निर्माणकर्ताओं के लिए कब्रगाह साबित होगी। लगभग सभी दूसरे देशों द्वारा अफगानिस्तान से अपनी फौजें वापस बुला लिए जाने के बाद ओबामा प्रशासन बुरी स्थिति का सामना कर रहा है। जितनी ज्यादा सेना वह अफगानिस्तान में भेजेगा उतना ज्यादा वह अफगान–प्रतिरोध के दलदल में धंसता जाएगा जिससे अमेरिका के अन्दर ही एक विस्फोटक स्थिति पैदा हो जाएगी। ओबामा को सबसे पहले सैन्य–औद्योगिक गुट के हितों संतुष्ट करना होगा जो अमेरिका में भीषण आर्थिक संकट से निकलने के लिए और अधिक दुस्साहसपूर्ण युद्ध और सैन्य खर्च को बढ़ाने की मांग कर रहा है। जियोनवादी लॉबी का दक्षिणपंथी धड़ा पूरी तरह ओबामा के साथ है। ओबामा ने अपने चुनाव अभियान में ही उन्हें यह आश्वासन दिया था कि वह निशस्त्र फिलीस्तीनी जनता के खिलाफ इजरायल की आक्रामक कार्यवाइयों का साथ देगा।

दुनिया की शोषित जनता और राष्ट्र, आज विश्व की सबसे ताकतवर सैन्य मशीन के अफ्रीकन–अमेरिकन राष्ट्रपति

के रूप में ज्यादा भयानक और खतरनाक दुश्मन से मुकाबला कर रहे हैं। दुनिया की जनता को बराक ओबामा के नेतृत्व वाले अमरीकी हत्यारों के खिलाफ अनवरत, ज्यादा जुझारू और ज्यादा ठोस संघर्ष चलाने के लिए एकजुट होना होगा और दुनिया में शान्ति, स्थायित्व और न्यायपूर्ण लोकतन्त्र लाने के लिए उन्हें पराजित करने का संकल्प लेना होगा।

एमआईबी– एक अन्तिम सवाल, आपकी ताकतों और भारतीय राज्य के बीच वर्तमान चरण के युद्ध को आप कैसे देखते हैं?

कॉमरेड गणपति– हमारा युद्ध रणनीतिक रक्षा के चरण में है। कुछ क्षेत्रों में हम बेहतर स्थिति में हैं जबकि दूसरी जगहों पर दुश्मन बेहतर स्थिति में है। कुल मिलाकर पिछले कुछ सालों में अपने गुरिल्ला जोन में दुश्मन के खिलाफ हमारी ताकतों ने श्रृंखलाबद्ध कार्यनीतिक प्रतिआक्रमणकारी अभियान सफलता पूर्वक चलाए हैं।

यह सच है कि हमारी पार्टी ने कुछ नेतृत्व को खोया है किन्तु हम दुश्मन को भी गम्भीर नुकसान पहुंचा पाने में सफल रहे हैं। वस्तुतः पिछले तीन सालों में दुश्मन ताकतों के लोग हमसे ज्यादा संख्या में मारे गए हैं। दुश्मन हमारी पार्टी और आन्दोलन को कमजोर करने, बिखरने और कुचलने का हर सम्भव प्रयास कर रहा है। वह कोवर्ट एजेण्ट और मुखबिरों का इस्तेमाल कर रहा है, क्रान्तिकारी कैम्प के कमजोर तत्वों को खरीदने के लिए बड़ी राशि बहा रहा है और क्रान्तिकारी कैम्प से लोगों को बाहर निकालने के लिए पुनर्वास पैकेज और दूसरे भौतिक प्रलोभनों का लालच दे रहा है। पुलिस आधुनिकीकरण, प्रशिक्षण और अतिरिक्त कमाण्डो बलों के गठन के लिए तथा केन्द्रीय बलों को बढ़ाने के लिए, प्रतिक्रान्तिकारी युद्ध में केन्द्र और राज्य बलों के प्रशिक्षण के लिए, हमारे गुरिल्ला जोन में अपने सिपाहियों की तेज गतिशीलता के लिए सड़क, संचार नेटवर्क और दूसरे आधारभूत संरचना के निर्माण के लिए हजारों करोड़ रुपया आवंटित किया गया है। भारतीय राज्य ने सशस्त्र गुण्डा समूहों का निर्माण किया है और इन सशस्त्र समूहों द्वारा जनता पर किये जाने वाले अवर्णनीय अत्याचारों को पूरा समर्थन दिया है। माओवादियों के खिलाफ मनोवैज्ञानिक युद्ध अप्रत्याशित सीमा तक बढ़ गया है।

इसके बावजूद, दुश्मन माओवादी आन्दोलन को रोकने या इसे कोई महत्वपूर्ण हानि पहुंचाने में असफल रहा है। हम लगातार आगे बढ़े हैं, पार्टी को सुदृढ़ किया है, और सभी स्तरों पर क्रान्तिकारी जन कमेटी को मजबूत किया है, पीएलजीए को गुणात्मक और मात्रात्मक रूप से मजबूत किया है, कई क्षेत्रों में दुश्मन के खुफिया नेटवर्क को ध्वस्त किया है, दुश्मन द्वारा छेड़े गए गन्दे मनोवैज्ञानिक–युद्ध प्रचार का प्रभावी तरीके से मुकाबला किया है, दुश्मन द्वारा हमारे आन्दोलन को नष्ट करने के उसके सभी प्रयासों को असफल किया है। पिछले कुछ समय में देश भर में, कई कार्यनीतिक प्रतिआक्रमण अभियानों में मिली सफलता, कई राज्यों में जनता के ज्वलंत मुद्दों पर, और विशेषकर विस्थापन के खिलाफ जुझारू जनान्दोलन, और विभिन्न क्षेत्रों में हमारी क्रान्तिकारी जनसरकारों द्वारा ली गयी पहलकदमी– इन सबने मिलकर देश की जनता पर काफी अच्छा असर डाला है, वहीं दुश्मन की ताकतों का मनोबल तोड़ा है। ऐसी रिपोर्ट है कि माओवादी प्रभाव वाले क्षेत्रों में जवान आदेशों का उल्लंघन कर रहे हैं और नौकरियां छोड़ रहे हैं। कुछ मामलों में उन्होंने जंगल वारफेर का प्रशिक्षण लेने से मना कर दिया या हमारे क्षेत्रों मे पोस्टिंग लेने से मना कर दिया और इस तरह से उन्हें निलम्बन का भी सामना करना पड़ा। यह प्रवृत्ति जनयुद्ध के विस्तार के साथ और बढ़ेगी। कुल मिला कर हमारी पार्टी का प्रभाव मजबूती से बढ़ा है। और जनता आज इसे एकमात्र सही विकल्प के रूप में पहचानने लगी है।

रणनीतिक रक्षा का वर्तमान चरण कुछ और समय तक बना रहेगा। यह अनुमान लगाना कठिन है कि यह चरण रणनीतिक संतुलन या रणनीतिक गतिरोध तक पहुंचने में कितना समय लेगा। यह हमारे गुंरिल्ला जोनों के, आधार इलाके में रूपान्तरण, कई और गुरिल्ला जोनों की स्थापना, पूरे देश में लाल प्रतिरोध क्षेत्रों की स्थापना, पीएलजीए का पीएलए में बदलना और गुरिल्ला युद्ध का चलायमान युद्ध में बदलने पर निर्भर करता है। सभी क्षेत्रों में, साम्राज्यवादी–सामन्ती सरकारों की जनविरोधी नीतियों के कारण संकट गहरा होता जा रहा है और प्रतिक्रियावादी शासक वर्गों की लूट–खसोट एवं लालच की नीति द्वारा जनता में बड़े पैमाने पर गुस्सा और असंतोष भड़क रहा है। अतः हमें विश्वास है कि जनता की बड़ी संख्या क्रान्ति की कतारों में शामिल होगी और भारतीय क्रान्ति को दूसरे चरण में ले जाएगी। ★

चादगांव एरिया में रूसी क्रांति दिवस

7 नवम्बर 2009 को महान रूसी क्रांति दिवस के मौके पर गड़चिरोली जिले के चातगांव इलाके में आमसभा का आयोजन किया गया। 1917 में हुई रूसी समाजवादी क्रांति के बारे में वक्ताओं ने बोलते हुए कहा कि रूस की क्रांति ने पहली बार पूरे विश्व के उत्पीड़ित जनता के सामने एक नया विकल्प प्रस्तुत किया। भले ही आज रूस में समाजवाद का पतन हुआ, लेकिन विश्व सर्वहारा ने उससे जो सबक लिया, उसके आधार पर पूरे विश्व में समाजवादी क्रांति को सफल बनाने के लिए कई देशों में मार्क्सवादी–लेनिनवादी–माओवादी ताकतों की अगुवाई में आंदोलन जारी हैं। रूसी क्रांति हमेशा–हमेशा के लिए दुनिया भर के मेहनतकश वर्गों के लिए प्रेरणा देती रहेगी। ★

तीखे हो रहे हैं। इससे महान संभावनाएं बन रही हैं कि माओवादी क्रांतिकारी ताकतें, प्रगतिशील जनवादी ताकतें, देशभक्तिपूर्ण ताकतें, राष्ट्रीय मुक्ति के लिए आंदोलनरत ताकतें, व्यापक आदिवासी, दलित, महिला, धार्मिक अल्पसंख्यक आदि उत्पीड़ित सामाजिक जन समूह तथा भारतीय विस्तारवाद से उत्पीड़ित ताकतें एकजुट हो जाएं और व्यापक व जुझारू प्रतिरोध करें। इसके बावजूद भी कि दुश्मन अत्यंत निरंकुशता के साथ फासीवादी तरीके से हमला कर रहा है, इस महान क्रांतिकारी परिस्थिति में आज पार्टी को चाहिए कि वह आगे रहते हुए जनता को व्यापक व जुझारू तरीके से विभिन्न संघर्षों में गोलबंद करे और विभिन्न संगठनों, विशेषकर संयुक्त मोर्चे के मंचों में एकजुट करे। इस क्षेत्र में दृढ़ संकल्प के साथ प्रयास करने से देश में व्यापक संयुक्त मोर्चे के लिए हालात परिपक्व होंगे जिसके केन्द्र में माओवादी आंदोलन रहेगा। ये अनुकूल हालात अपने आत्मरक्षात्मक युद्ध में विजय का आधार बनेंगे।

दुश्मन द्वारा थोपे जा रहे अन्यायपूर्ण युद्ध को पराजित करने के लिए जारी आत्मरक्षात्मक युद्ध में हासिल होने वाली कामयाबियां और नाकामयाबियां भारत की क्रांति को लम्बे समय तक प्रभावित करेंगी। इसलिए हमें इस आत्मरक्षात्मक युद्ध में जरूर जीत हासिल करनी चाहिए। दुश्मन द्वारा जारी इस क्रूरतापूर्ण युद्ध को पराजित कर एकता कांग्रेस द्वारा निर्देशित लक्ष्यों को हासिल करने के लिए हमें कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं पर सही रुख अपनाना होगा। वे हैं: दुश्मन हम पर भारी सैन्य हमला चला रहा है। और यह चौतरफा हमला है। हम आत्मरक्षात्मक युद्ध चला रहे हैं। इसमें फौजी कार्य और गुरिल्ला युद्ध का खासा महत्व रहेगा। यही अहम और प्रधान है। पर हमें अपना आत्मरक्षात्मक युद्ध कई प्रकार के मोर्चों पर चलाना होगा। कई मोर्चों में आत्मरक्षात्मक युद्ध को प्रभावी ढंग से चलाना राजनीतिक व रणनीतिक पहलू है। हमें आत्मरक्षात्मक युद्ध को सुचारू रूप से संचालित करने के साथ-साथ अपनी आत्मगत ताकतों को खासा बढ़ा लेना होगा। इसे हासिल करना इस बात पर निर्भर होगा कि हम आज की आत्मगत ताकतों और आंदोलन की किस हद तक रक्षा कर सकेंगे और नई ताकतों को किस हद तक गोलबंद कर सकेंगे। लालगढ़ से सूर्जागढ़ तक फैले हुए व्यापक आदिवासी-बहुल इलाकों में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों (एमएनसी) और भारत की दलाल नौकरशाह पूंजीपति संस्थाओं की घुसपैठ और कब्जे पर रोकथाम लगाना एक प्रमुख राजनीतिक कार्यभार है जो हमारे कंधों पर है। इस कार्यभार की पूर्ति इस बात पर निर्भर होगी कि हम इन संस्थाओं के खिलाफ आदिवासी और स्थानीय जनता को किस हद तक आंदोलन में उतार सकेंगे और इस इलाके के बाशिंदों के समर्थन में और सुरक्षा में पीएलजीए किस हद तक टिक पाएगी। दुश्मन जो प्रतिक्रांतिकारी युद्ध चला रहा है वह सिर्फ माओवादियों तक सीमित नहीं होगा। वह व्यापकतम जनता पर हमला है। इस हमले का मुकाबला करना इस बात पर निर्भर है कि व्यापक जनता अपने जनवादी नागरिक अधिकारों की रक्षा के लिए किस हद तक आंदोलन करेगी; विभिन्न जनवादी व नागरिक संगठनों के साथ मिलकर विभिन्न समस्याओं के साथ तथा विभिन्न समस्याओं को लेकर आंदोलनरत संगठनों के साथ किस हद तक एकजुटता हासिल कर सकती है; और दुश्मनों के बीच मौजूद अंतरविरोध का किस हद तक उपयोग कर सकती है। केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा जारी बर्बर हमले को साम्राज्यवादियों का पूरा समर्थन मिला हुआ है। हम अपने न्यायपूर्ण आत्मरक्षात्मक युद्ध के लिए देश की व्यापक जनता व विश्व की जनता का समर्थन जिस हद तक जुटा सकेंगे, उस हद तक संघर्ष के इलाकों की जनता का आत्मविश्वास बढ़ेगा और वह विजय हासिल करने के लिए उन्हें प्रेरित करेगा। दुश्मन द्वारा जारी यह युद्ध क्रूरतापूर्ण व हिंसात्मक है। करोड़ों लोगों को असीम तकलीफें और मुश्किलें लाने वाला है। लेकिन वह विशाल जनता के अंदर अभूतपूर्व स्तर पर गुस्से की आग भड़काकर डटकर लड़ने की प्रेरणा देने वाला भी है। इसके अलावा वह लड़ने वाली जनता को देश व दुनिया की जागरूक जनता की तरफ से सहानुभूति व सहायता पहुंचाने वाला भी है। इसलिए पार्टी के सामने जरूरत यह है कि वह माओवादी क्रांतिकारी ताकतों, देशभक्तों, उत्पीड़ित जन समुदायों, राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष की ताकतों और विस्तारवाद-विरोधी ताकतों की गोलबंदी का केन्द्र बनकर खड़े हो। अगर यह काम सुचारू रूप से हो जाता है तो इस अन्यायपूर्ण युद्ध की पराजय और आत्मरक्षात्मक युद्ध की विजय सुनिश्चित है। मजबूत पार्टी, जन सेना, संयुक्त मोर्चा, अधार क्षेत्र और संघर्ष के व्यापक इलाके अस्तित्व में आने के लिए हालात में उल्लेखनीय बदलाव आएगा।

हम पर दुश्मन के क्रूरतापूर्ण युद्ध का अर्थ है, वह हमारे लिए असीम मुश्किलें ला रहा है। दुश्मन का यह हमला क्रूरतापूर्ण है। इस मौके पर हमें एक बात जरूर ध्यान में रखनी होगी कि हमारा लक्ष्य महान जरूर है लेकिन उसे हासिल करने का कोई नजदीकी व सीधा रास्ता हमारे सामने नहीं है। टेढ़े-मेढ़े रास्ते से ही आगे बढ़ना होगा। दुश्मन के हमले की योजनाओं, रणनीतियों और दावपेंचों का लगातार जवाबी योजनाओं, रणनीतियों और दावपेंचों से पलटा जवाब देने पर हमारा ध्यान केंद्रित होना चाहिए। सेना और जनता ही जनयुद्ध में निर्णायक भूमिका निभाएंगी। जनयुद्ध में कामयाबी हम तभी हासिल कर सकते हैं जब हमारे पास पर्याप्त सैन्य ताकत होगी और जनता सक्रिय भूमिका निभाएगी। हम इस आत्मरक्षात्मक युद्ध में दुश्मन को पराजित कर जरूर विजय हासिल कर सकते हैं बशर्ते कि पार्टी सही नीति और दावपेंच अपनाए तथा जनसेना और जनता का सक्षम नेतृत्व करे। और इस तरह हम जनयुद्ध को एक और नए उन्नत चरण में ले जा सकेंगे।

जनता - जनता ही युद्ध के संचालन के लिए महान लड़ाकू शक्ति है!

जनता - जनता ही असली वीर है!

जनता - जनता ही इतिहास का निर्माता है!

साम्राज्यवादी और सभी किस्म की प्रति-क्रांतिकारी ताकतें कागजी बाघ हैं!

अंतिम विजय जनता की है! *26 दिसम्बर 2009*

तमिल राष्ट्र के मुक्ति संग्राम के महानायक प्रभाकरण और उनके साथियों की मौत से तमिलों का संघर्ष नहीं रुकेगा! तमिल ईलम संघर्ष की पराजय से शिक्षा हासिल कर साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष को तेज करो!!

18 मई 2009 को विश्व की उत्पीड़ित जनता को एक बड़ा झटका लगा। तीन दशकों तक तमिल राष्ट्र की आजादी के लिए लड़ाई का परचम ऊंचा उठाए रखने वाले और उस मुक्ति संग्राम के लोकप्रिय नायक प्रभाकरण अपने कई साथियों के साथ श्रीलंकाई अंधराष्ट्रवादी सैनिकों के फासीवादी हमले में मारे गए। इस खबर से जहां दुनिया भर में उत्पीड़ित जनता और उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं को गहरा सदमा लगा, तो वहीं दूसरी ओर दुनिया भर में लुटेरे वर्गों ने जश्न मनाया। 20 मई को श्रीलंका की सिंहली अंधराष्ट्रवादी सरकार ने राष्ट्रीय अवकाश की घोषणा की ताकि 'जीत का जश्न' मनाया जा सके। पूरी दुनिया में इस घटना की प्रतिक्रिया में विरोध प्रदर्शन किए गए। लाखों तमिलों ने अपने प्यारे नेता प्रभाकरण को श्रद्धांजली दी। यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि श्रीलंका की सरकार ने एलटीटीई पर निर्णायक जीत हासिल की। दुनिया के शक्तिशाली गुरिल्ला संगठनों में से एक एलटीटीई को पराजय क्यों झेलनी पड़ी? श्रीलंकाई सेना उसे कैसे हरा सकी? क्या इस पराजय से आत्मनिर्णय के अधिकार के लिए पिछले साढ़े तीन दशकों से जारी सशस्त्र संघर्ष का अंत हो गया? क्या श्रीलंकाई सरकार ईलम जनता की न्यायसम्मत राष्ट्रीय आकांक्षाओं की पूर्ति कर सकेगी? श्रीलंका के तमिल सिंहली लोगों के बराबर नागरिकों की तरह जी सकेंगे? ये सारे सवाल तमिल ईलम के न्यायपूर्ण उद्देश्यों का समर्थन करने वालों और जनता के जनवाद, राष्ट्रीय मुक्ति व आजादी के लिए लड़ने वालों के जेहन में उठने वाले अहम सवाल हैं। तमिल ईलम के लिए जारी संघर्ष को समझने के लिए उसकी जड़ों और उसके विकासक्रम को समझना जरूरी है।

प्रभाकरण

तमिल ईलम का इलाका

पृथक तमिल ईलम की मांग - उसका इतिहास

ईसा पूर्व 500 के आसपास इस द्वीप में भारत से राजकुमार विजय के आगमन को सिंहली लोग अपनी जड़ों की शुरूआत मानते हैं। राजकुमार विजय के आगमन से पहले से ही इस द्वीप में तमिल निवासरत थे। सिंहली इतिहासकार और केंब्रिज के विद्वान पाल पेयरिस के मुताबिक, "... भारत से महज 30 मील की दूरी पर, समुद्र में मछली पकड़ने के लिए जाने वाले मछुवारों की नजरों में पड़ सकने वाली दूरी पर स्थित इस द्वीप में इंसान ने ज्यों ही नावों पर सफर करना सीखा तुरंत बाद यहां आकर आवास बनाए होंगे, ऐसी कल्पना करना तर्कसंगत ही होगा... राजकुमार विजय के आगमन के काफी पहले से ही श्रीलंका में मान्यता प्राप्त पांच शिव मंदिर मौजूद थे। पूरे भारत में इन्हें मान्यता प्राप्त थी...."।

1505 में जब पुर्तगाली उपनिवेशवादियों ने इस द्वीप पर

कदम रखा था तब वहां तीन राज्य थे - जाफना में तमिल आधारित राज्य, कोट्टे में सिंहली आधारित राज्य और तीसरा कांडी में था। 1619 में पुर्तगालियों ने तमिल राजा को पराजित कर जाफना राज्य पर कब्जा किया था। 1656 में डच वहां पहुंचे थे। उसके बाद 1796 में ब्रिटिशों ने इस द्वीप पर कब्जा किया। 1802 में सिलोन ब्रिटिश राज का उपनिवेश (क्राउन) बना था। 1833 में पहली बार समूचा सिलोन ब्रिटिशों की अगुवाई में एकल प्रशासन तंत्र के तहत आया था। लगभग उसी समय ब्रिटिशों ने तमिलनाडु से चाय, कॉफी और नारियल के बागानों में काम करवाने के लिए मजदूरों को लाना शुरू किया।

एक करोड़ 70 लाख आबादी वाले इस द्वीप में करीब पांचवां हिस्सा तमिलों का है और तीन चौथाई से थोड़ा कम सिंहली हैं। जहां तमिल मुख्य रूप से उत्तरी व पूर्वी इलाकों और मध्य भाग की पहाड़ियों में स्थित बागानों में निवासरत हैं, वहीं सिंहली दक्षिण व पश्चिम के साथ-साथ मध्य भाग में भी निवासरत हैं। उत्तर और पूर्व में तमिलों की मातृभूमि का क्षेत्रफल 7,500 वर्ग मील है, जबकि पूरे द्वीप का क्षेत्रफल 19,509 वर्ग मील है।

1919 में अरुणाचलम पोन्नांबलम, जो एक तमिल थे, के नेतृत्व में सिलोन नेशनल कांग्रेस (सीएनसी) का गठन किया गया था, जिसमें तमिल और सिंहली दोनों शामिल थे। बाद में 1921 में उन्होंने यह आरोप लगाते हुए सीएनसी छोड़ दिया कि वह सिर्फ सिंहलियों का प्रतिनिधित्व करती है। 1947 में सोलबरी संविधान लागू हुआ जिसमें उपनिवेशी शासन के तहत ऐकिक (यूनिटरी) राज्य पर जोर दिया गया। 1948 में ब्रिटिश वाले सत्ता को सिंहली दलालों के हाथों में सौंपते हुए सिलोन से चले गए थे। सिंहली शासक वर्गों ने माना कि श्रीलंका द्वीप सिंहलियों का विशेष स्थान है और तमिल लोग 'बाहरी' हैं जिन्हें ऐकिक सिंहली बौद्ध राज्य के दायरे में समाविष्ट करना है और अधीन कर लेना है।

1949 में सत्ता में आते ही सिंहली शासक वर्गों ने तमिलनाडु से आए बागान मजदूरों का मताधिकार रद्द कर दिया। 1949 में पारित नागरिकता कानून ने 10 लाख से ज्यादा भारतीय मूल के तमिल बागान मजदूरों का मताधिकार रद्द किया और उन्हें देशविहीन कर दिया। 1949 में एसजेवी चेल्वनायगम की अगुवाई में, जिन्हें तमिल ईलम का पिता माना जाता है, तमिल फेडरल पार्टी (एफपी) की स्थापना हुई थी। उसका पहला अधिवेशन 1951 में हुआ था जिसमें शासन के संघीय स्वरूप के लिए और उत्तर व पूर्व में निवासरत तमिलों को क्षेत्रीय स्वायत्तता के लिए अभियान लेने की घोषणा की गई। 1956 में सिंहली राष्ट्रवाद की लहर से सोलोमन बंडारनाइके ने चुनाव जीता। सिंहली भाषा को सिलोन की एक मात्र अधीकृत भाषा के रूप में घोषणा की गई। सरकार ने सिंहली और बौद्ध अंध राष्ट्रवाद को बढ़ावा देते हुए कुछ अन्य कदम भी उठाए। 1980 के दशक में श्रीलंका का राष्ट्रपति बने जेआर जयवर्धने ने खुलेआम सिंहली अंधराष्ट्रवाद का बखान किया था। "...समूची सिंहली नस्ल को, जो 2500 सालों से अस्तित्व में रहकर अपनी भाषा और धर्म की उत्सुकतापूर्वक रक्षा करती आई है, उठ खड़े होकर बेझिझक अपने जन्मसिद्ध अधिकार की रक्षा के लिए लड़ने का वक्त आ गया। मैं इस अभियान का नेतृत्व करूंगा...."। (जेआर जयवर्धने, सिंहली विपक्षी नेता, श्रीलंका ट्रिब्यून, 30 अगस्त 1957)

1958 में बंडारनाइके और तमिल नेता सेल्वानायगम ने संघीय समाधान से एक समझौते पर दस्तखत किए थे (जिसे बी-सी समझौता कहा जाता है)। यह सिलोन के उत्तरी और पूर्वी इलाकों के तमिलों को व्यापक अधिकार प्रदान किए। लेकिन समझौते पर दस्तखत करने के एक हफ्ते के भीतर ही सिंहली व बौद्ध अंधराष्ट्रवादियों के दबाव में आकर उसे एकतरफा ढंग से रद्द किया गया। इसके विरोध में एफपी ने एक शांतिपूर्ण असहयोग आंदोलन शुरू किया। सरकार ने उस आंदोलन के दमन के लिए पुलिस व अर्द्ध-सैन्य बलों को रवाना किया। उसके साथ-साथ सिंहली बहुल इलाकों में तमिल-विरोधी हमलों का सिलसिला शुरू किया। 200 से ज्यादा तमिल मारे गए। हजारों विस्थापित हो गए।

1959 में एक बौद्ध सन्यासी ने सोलोमन बंडारनाइके की हत्या की। उसके बाद उसकी पत्नी सिरिमावो बंडारनाइके दुनिया की पहली महिला प्रधानमंत्री बन गई। उसने सिंहली अंध राष्ट्रवादी कदमों को जारी रखा। 1972 में सिलोन का नाम श्रीलंका में बदलकर बौद्ध धर्म को देश के प्रमुख धर्म का दर्जा दिया गया। इन कदमों से द्वीप के तमिलों में विरोध और अलगाव और ज्यादा बढ़ गए। 1964 में देशविहीन बागान मजदूरों को भारत भेजने पर सिरिमावो-शास्त्री समझौता हुआ था। 1965 में डड्ली-चेलुवा समझौते पर दस्तखत हुए, जोकि बी-सी समझौते का धुंधला संस्करण था। सिंहली अंधराष्ट्रवादियों और बौद्ध सन्यासियों के विरोध के कारण यह समझौता अमल के पहले ही रद्द कर दिया गया। इस पर विरोध जताते हुए स्थानीय सरकार का मंत्री एफपी के तिरुचेल्वम ने मंत्रीमण्डल से इस्तीफा दे दिया।

22 मई 1972 को सिलोन एक गणतंत्र बना और अधीकृत रूप से उसका नाम श्रीलंका गणतंत्र बदल गया। संयुक्त मोर्चा सरकार ने देश के लिए सिंहली-सर्वोच्चतावादी 'गणतांत्रिक संविधान' लागू कर दिया जिसने वस्तुतः बौद्ध धर्म को सरकारी धर्म और तमिलों को - ईलम तथा प्लांटेशन मजदूरों को - दूसरी श्रेणी के नागरिक बना दिया।

बढ़ते राज्य-प्रायोजित अंधराष्ट्रवाद के खतरे के मद्देनजर तमिल पार्टियों ने तमिल युनाइटेड फ्रंट (टीयूएफ) का गठन किया जिसमें एफपी, जीजी पोन्नाम्बलम के नेतृत्व वाली तमिल कांग्रेस (टीसी) और तोण्डामन के नेतृत्व वाली सिलोन वर्कर्स कांग्रेस (सीडब्ल्यूसी) शमिल हुईं। बाद में 1976 में इसका नाम

बदलकर टीयूएलएफ रखा गया। नौजवानों के एक छोटे गुट ने तमिल न्यू टाइगर्स (टीएनटी) के नाम से एक जुझारू संगठन बनाया। बाद में 1976 में जाफना में 17 वर्षीय वेलुपिल्लाई प्रभाकरण के नेतृत्व में तमिलों के अधिकारों के लिए लड़ने के लिए इसका नाम बदलकर लिबरेशन टाइगर्स ऑफ तमिल ईलम (एलटीटीई - तमिल ईलम के मुक्ति चीते) रखा गया।

1974 में सिंहली पुलिस के साथ सांठगांठ से सिंहली अंध राष्ट्रवादियों ने जाफना में आयोजित प्रतिष्ठात्मक अंतर्राष्ट्रीय तमिल सांस्कृतिक अधिवेशन में भाग लेने आए तमिलों पर हमला कर 9 लोगों की हत्या की और कई अन्य को घायल किया। विश्वविद्यालयों में प्रवेश के लिए तमिल छात्रों को समान अवसरों से वंचित करने वाले 'प्रामाणीकरण' को लागू करने के साथ ही तमिलों के प्रति भेदभाव बेहद बढ़ गया। इस कदम ने न सिर्फ तमिलों को उच्च शिक्षा और रोजगार से दूर रखा, बल्कि इसकी मंशा सरकारी प्रशासन, पुलिस और सेना में मौजूद तमिलों को धीरे-धीरे निकाल बाहर करने की थी। 1976 में टीयूएलएफ ने 'आत्मनिर्णय के अधिकार पर आधारित एक स्वतंत्र, सार्वभौमिक, धर्म-निरपेक्ष व समाजवादी तमिल ईलम राज्य' की स्थापना हेतु 'वड्डुकोड्डाइ प्रस्ताव' पारित किया ताकि श्रीलंका में तमिल राष्ट्र की रक्षा की जा सके। 1977 में आयोजित आम चुनावों में टीयूएलएफ ने पृथक तमिल ईलम राज्य के नारे के साथ चुनाव लड़ा। तमिलों के भारी बहुमत ने, 90 प्रतिशत से ज्यादा तमिलों ने पृथक ईलम के लिए वोट दिया। यह तमिलों में मौजूद आत्मनिर्णय के अधिकार की आकांक्षाओं पर शांतिपूर्ण तरीके से चलाया गया जनमत सर्वेक्षण ही था। लेकिन सिंहली-बौद्ध अंध राष्ट्रवादियों ने तमिलों के अधिकारों और आकांक्षाओं को मानने से इनकार किया। बल्कि उनके बुनियादी अधिकारों को कुचलने के लिए और ज्यादा सरकार-प्रायोजित हिंसा का प्रयोग किया। तमिलों की पहचान व उनके इतिहास को कुचलने की कोशिश में श्रीलंकाई सशस्त्र बलों ने जाफना सार्वजनिक ग्रंथालय को जला दिया। उस ग्रंथालय में मौजूद 95 हजार से ज्यादा अनमोल व दर्लभ ग्रंथ तथा तमिल भाषा की कई महत्वपूर्ण सांस्कृतिक पांडुलिपियां, जिन्हें दुबारा हासिल करना असंभव है, सब जलकर राख हो गए। इस जघन्य अपराध को दो मंत्रियों गामिनी दिस्सानाइके और सिरिल मैथ्यू के निर्देश पर अंजाम दिया गया था।

मुक्ति संग्राम के पूर्व दौर में, जुलाई 1983 में (जिसे 'काला जुलाई' कहा जाता है) एक सुनियोजित तरीके से तमिल विरोध ी नरसंहार किया गया था। यह अत्यंत बर्बर व व्यापक पैमाने पर किया गया नरसंहार था। तमिल बहुल उत्तरी व पूर्वी इलाकों के साथ-साथ पूरे देश में तमिलों का नरसंहार किया गया था। 4 हजार से ज्यादा तमिलों की हत्या कर दी गई थी और हजारों बेघर हो गए थे। उनकी सम्पत्तियां या तो लूट ली गईं या फिर नष्ट कर दी गयीं। इस तरह उनकी आजीविका के साधन तबाह कर दिए गए। जेलों में भी कई तमिल बंदियों की हत्या कर दी गई और उनकी आंखें निकाल ली गईं। डेढ़ लाख से ज्यादा लोग श्रीलंका छोड़कर शरणार्थी बनकर भारत व पश्चिमी देश चले गए। इन दंगों को खुलेआम बढ़ावा देते हुए राष्ट्रपति जयवर्धने ने कहा, "तमिल जनता की राय पर मुझे कोई चिंता नहीं... अब उनके बारे में हम सोच नहीं सकते, न उनकी जिंदगियों के बारे में न ही उनकी राय के बारे में... उत्तर में आप जितना दबाव डालेंगे उतना ही यहां के सिंहली खुश हो जाएंगे... अगर मैं तमिलों को भूखों मरवाता हूं तो सिंहली जनता खुश हो जाएगी।"

आत्मनिर्णय के अधिकार के लिए तमिल ईलम जनता के संघर्ष में यह घटना एक अहम मोड़ थी। श्रीलंका के 'संसदीय लोकतंत्र' में तमिल जनता का भरोसा टूट गया, जिसका मकसद है द्वीप में सिंहली-बौद्ध दबदबा मजबूत बनाना। मताधिकार रद्द करने जैसे कई शासनात्मक व प्रशासनिक कानूनों से, उत्तरी व पूर्वी इलाकों में सुनियोजित तरीके से सिंहली लोगों को बसाकर तमिल मातृभूमि का सरकार-प्रायोजित उपनिवेशीकरण कर, भाषा के प्रति भेदभाव, रोजगार की नीतियों में भेदभाव और विश्वविद्यालयों के प्रवेश में 'प्रामाणीकरण' आदि से यह 'संसदीय लोकतंत्र' तमिलों की नजरों में नंगा हो गया।

संघर्ष अपने अहिंसात्मक व शांतिपूर्ण स्वरूप से सशस्त्र स्वरूप अख़्तियार कर चुका था। हजारों नौजवान कई जुझारू संगठनों में शामिल हो गए। शुरू में उन्हें भारत में भारत सरकार ने फौजी प्रशिक्षण दिया था। भारतीय विस्तारवादी (जो उस समय सोवियत सामाजिक साम्राज्यवाद के प्रभाव में थे) चाहते थे कि इसका इस्तेमाल कर श्रीलंकाई सरकार (जो उस समय अमेरिकी साम्राज्यवाद के प्रभाव में थी) पर दबाव बनाया जाए और अपनी विस्तारवादी मांगों के अनुरूप उसे झुका लिया जाए। जनता ने समझ लिया कि संसदीय व शांतिपूर्ण तरीकों ने न सिर्फ उनके सम्मान और अधिकारों को खत्म किया, बल्कि एक सम्मानपूर्वक जिंदगी जीने का अधिकार भी छीन लिया। इसलिए उन्होंने संसदीय राजनेताओं को ठुकरा दिया और सशस्त्र संघर्ष का तहेदिल से समर्थन किया। इन सच्चाइयों को छुपाते हुए भारत सरकार और मीडिया, खासकर अंग्रेजी अखबार और टीवी चैनल अपने 'आतंकवाद' शब्द का अंधाधुंध प्रयोग करते हुए सशस्त्र संघर्ष पर लगातार हाय तौबा मचा रहे हैं। तमिल ईलम के लिए संघर्ष के इतिहास के बारे में तथ्यों को तोड़-मरोड़कर जानबूझकर झूठों का प्रचार कर रहे हैं। तब से, चंद सालों के अंदर ही, एलटीटीई पृथक ईलम के लिए संघर्ष का प्रतिनिधित्व करने वाला सबसे महत्वपूर्ण संगठन के रूप में उभरा। इस दरमियान उन्होंने दूसरे संगठनों को हिंसात्मक तरीके से दबा डाला क्योंकि वे भारत सरकार या श्रीलंकाई सरकार के दलाल बन चुके थे।

गृहयुद्ध और शांति वार्ता

जुलाई 1983 में एलटीटीई ने देश के उत्तरी भाग में 13 सैनिकों को मारकर सेना के खिलाफ अभियान छेड़ दिया। श्रीलंकाई सरकार ने अंधराष्ट्रवादी भावनाओं को

भड़काकर कोलम्बो समेत देश के दूसरे भागों में कत्लेआम और नस्लकशी मचवाई। करीब 4 हजार तमिलों की हत्या कर दी गई। हजारों तमिलों को सिंहली बहुल इलाकों से भागना पड़ा। यहीं से गृहयुद्ध या ईलम युद्ध-1 की शुरूआत होती है।

1983 में गृहयुद्ध की शुरूआत के बाद से हाल में हुई एलटीटीई की पराजय तक कुल चार युद्ध और चार शांति वार्ताएं हुईं। पहली शांति वार्ता भारतीय विस्तारवादियों के हस्तक्षेप से 1985 में भूटान की राजधानी थिम्पू में हुई थी। एलटीटीई और दूसरे संगठनों ने तमिलों की पृथक सार्वभौमिक राज्य की मांग को त्यागकर तमिलों को एक राष्ट्रीयता के रूप में पहचान देने की मांग तथा श्रीलंका के उत्तरी व पूर्वी इलकों को एक इकाई के रूप में देखने और अलग होने का अधिकार समेत तमिलों के आत्मनिर्णय के अधिकार की स्वीकृति की मांग उठाई। वार्ता विफल हो गई क्योंकि श्रीलंकाई सरकार ने तमिलों की वास्तविक आकांक्षाओं को पूरा करने से इनकार किया।

लेकिन भारत व श्रीलंकाई सरकारों ने 29 जुलाई 1987 को एक समझौते पर दस्तखत किए जिसमें ईलम जनता या राष्ट्रीय मुक्ति युद्ध लड़ रहे लड़ाकुओं का कोई प्रतिनिधित्व नहीं था। इसके उलट भारतीय विस्तारवादियों ने, जिन्होंने लड़ाकू संगठनों को तमिलनाडु में अपने अड्डे बनाने की अनुमति दी थी और हथियार, गोलाबारूद और प्रशिक्षण मुहैया करवाए थे, यह समझौता उन पर थोप दिया। श्रीलंका सरकार ने संविधान में 13वां संशोधन किया जिसमें तमिलों को अधिकारों का हस्तांतरण शामिल था। एलटीटीई और ईलम जनता ने इस समझौते को खारिज किया क्योंकि उसमें सिर्फ सिंहली सरकार के ऐकिक राज्य के तहत एक प्रादेशिक परिषद का प्रावधान था जो उनकी आत्मनिर्णय की असली मांग से कहीं से भी मेल नहीं खाता था। और तो और, इस समझौते को लागू करवाने के लिए भारत सरकार ने 'शांति रक्षक' बल के नाम से श्रीलंका के उत्तरी और पूर्वी इलाकों में 1 लाख 40 हजार सेना भेजी क्योंकि भारत-श्रीलंका समझौते से भारत के रणनीतिक हित सुरक्षित हो रहे थे। श्रीलंका सरकार ने भारत से वादा किया, "ट्रिंकोमली या श्रीलंका के किसी भी बंदरगाह का फौजी तौर पर उपयोग करने की अनुमति ऐसे किसी भी देश को नहीं दी जाएगी जिससे कि भारत के हितों को नुकसान पहुंचता हो।"

राष्ट्रीय मुक्ति के लिए न्यायपूर्ण संघर्ष कर रहे लड़ाकुओं के मन में भारत सरकार की भूमिका को लेकर कई शंकाएं उत्पन्न हुईं। उन्होंने महसूस किया कि भारत सरकार ने उनके साथ गद्दारी की और उनकी पीठ में छुरा घोंपा। भारत और एलटीटीई के बीच सम्बन्ध काफी बिगड़ गए जबकि शांति वार्ता जारी ही थी। 4 अक्टूबर 1988 को श्रीलंकाई नौसेना ने पाइंट पेड्रो के पास एक नाव को पकड़ा और एलटीटीई के 17 कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया जिनमें पुलेंद्रन और कुमारप्पा जैसे अग्रणी नेता भी शामिल थे। एलटीटीई ने भारत सरकार से इसमें हस्तक्षेप कर उन्हें छुड़वाने का आग्रह किया। भारत की छलकपट की भूमिका का विरोध करते हुए एलटीटीई के राजनीतिक विभाग के नेता लेफ्टिनेंट कलनल थिलीपन ने भूख हड़ताल शुरू की और अंततः उनकी मृत्यु हो गई। लेकिन भारत सरकार ने छुप्पी साधकर श्रीलंका सरकार का समर्थन किया जिसने बंदियों को कोलम्बो ले जाना शुरू किया। इसके परिणामस्वरूप जेल में बंद सभी एलटीटीई काडरों ने सामूहिक आत्महत्या की जिससे विरोध प्रदर्शनों और झड़पों का सिलसिला फूट पड़ा। शांति वार्ता टूट गई और गृहयुद्ध दोबारा भड़का। श्रीलंका सरकार ने आईपीकेएफ (भारतीय शांति रक्षक बल) से विद्रोह को कुचलने का आग्रह किया। 9 अक्टूबर 1988 को आईपीकेएफ ने एलटीटीई के खिलाफ एक आक्रमण शुरू किया जिसका सांकेतिक नाम 'ऑपरेशन पवन' था।

उन्होंने पूरे ऑपरेशन को चंद हफ्तों में पूरा करने की उम्मीद लगाई थी। हुआ इसके उलट। आईपीकेएफ युद्ध में बुरी तरह फंस गया जिसमें उसके 1700 सैनिक मारे गए और कई हजार अन्य घायल या अपंग हुए। आखिरकार मार्च 1990 में उन्हें अपमानजनक तरीके से वहां से वापस आना पड़ा।

भारत व श्रीलंका सरकारों ने संयुक्त रूप से बंदूक की नोक पर उत्तर-पूर्व प्रादेशिक परिषद का चुनाव करवाया। एलटीटीई ने चुनावों का बहिष्कार किया, जबकि ईपीआरएलएफ जैसे लड़ाकू संगठनों ने जो भारतीय विस्तारवादियों की कठपुतली बन गए थे, चुनावों में भाग लिया। आज भी भारत सरकार और उसका ढोल बजाने वाले 'जातीय संघर्ष' के हल के लिए तथाकथित राजनीतिक समाधान का सुझाव देते नहीं थकते जिसका केन्द्र बिंदु वही समझौता है जिसे 1987 में भारतीय विस्तारवादियों ने तमिलों पर थोपा था। हालांकि सिंहला-बौद्ध अंधराष्ट्रवादियों ने तमिलों को नाम के वास्ते 'अधिकार का हस्तांतरण' करने वाले इस समझौते का भी विरोध किया। बाद में, श्रीलंकाई सर्वोच्च अदालत ने 13वें संशोधन को 'गैर-संवैधानिक' करार देते हुए उसे रद्द कर दिया।

समझौते का विरोध और श्रीलंका में भारतीय सशस्त्र बलों की मौजूदगी के चलते सिंहलियों में भी हलचल मची हुई थी। प्रेमदासा सरकार ने यहां तक कि अपने कट्टर दुश्मन एलटीटीई को हथियार दिए ताकि वह भारतीय सशस्त्र बलों के खिलाफ लड़ सके। अपनी सत्ता को खतरे में पाकर प्रेमदासा सरकार ने आईपीकेएफ को पीछे हटाने का आग्रह किया। 1989 के आम चुनावों में राजीव गांधी की पराजय के बाद तमिलनाडु से बढ़ रहे दबाव को देखते हुए वीपी सिंह सरकार ने मार्च 1990 में आईपीकेएफ की वापसी का आदेश दिया। आईपीकेएफ के हटने के बाद एलटीटीई और श्रीलंका सरकार के बीच एक अस्थाई युद्धविराम हुआ था। लेकिन जून 1990 में फिर युद्ध भड़का और इस तरह शुरू हुआ **ईलम युद्ध-2**।

आईपीकेएफ की वापसी के बाद एलटीटीई ने उत्तरी और पूर्वी इलाकों में अपनी स्थिति को मजबूत बनाया। एलटीटीई के साथ शांति का नारा लगाकर चंद्रिका कुमारतुंगा का नेतृत्व वाला पीपुल्स एलिएन्स (पीए) सत्ता में आने के बाद जनवरी 1995

में युद्धविराम के समझौते पर हस्ताक्षर किए गए और वार्तालाप शुरू हुआ। लेकिन श्रीलंकाई सरकार के दुराग्रही रवैये के चलते यह भी विफल हो गया। अप्रैल 1995 में **ईलम युद्ध-3** शुरू हुआ। श्रीलंकाई सरकार का फौजी हमला काफी क्रूर रहा जबकि लंकाई वायुसेना के जेट विमानों ने नवाली के पास सेंट पीटर्स गिरिजाघर पर बमबारी की जिसमें 125 नागरिक मारे गए और 150 लोग घायल हो गए। सात हफ्तों तक चली तीखी लड़ाई के बाद, करीब एक दशक में पहली बार जाफना पर नियंत्रण हासिल करने में सरकारी सेना सफल रही। 5 दिसम्बर 1995 को 'विजय' की निशानी के तौर पर श्रीलंकाई रक्षा मंत्री अनिरुद्ध रटवट्टे ने जाफना किले पर राष्ट्रीय झण्डा फहराया। सरकार का अनुमान था कि इस आक्रमण में करीब 2,500 सैनिक व विद्रोही मारे गए थे और करीब 7 हजार घायल हो गए।

1999 में एलटीटीई ने 'ऑपरेशन अनसीजिंग वेव्स' के नाम से दुश्मन पर एक जवाबी आक्रमण छेड़कर और 17 अन्य हमले कर अपने खोए हुए सभी इलाकों पर दोबारा कब्जा किया। तीन दिनों तक चली उस एक मात्र ऑपरेशन में एलटीटीई ने 1200 से ज्यादा श्रीलंकाई सैनिकों को मार डाला। वह दो राष्ट्रों के बीच हो रहा परम्परागत युद्ध जैसा ही था। उसने एलिफेंट पास (हाथी दर्रा) पर भी सफलतापूर्वक कब्जा (ऑपरेशन फ्राग) कर लिया। इस तरह किलिनोच्चि और आसपास के इलाकों में मौजूद श्रीलंकाई सेना के जमीनी व समुद्री रास्ते सभी सप्लाई लाइनों को काट दिया। 22 अप्रैल 2000 को एलिफेंट पास सैन्य कॉम्प्लेक्स, जिसने जाफना प्रायद्वीप को वन्नी इलाके से पिछले 17 सालों से अलग किया हुआ था, एलटीटीई के हाथ में आ गया। जाफना में मौजूद करीब 40 हजार श्रीलंकाई सैनिक एलटीटीई की घेराबंदी में बुरी तरह फंस गए। उनके सामने आत्मसमर्पण करने या मारे जाने के अलावा कोई रास्ता नहीं बचा था। सिर्फ भारतीय और अमेरिकी सरकारों की दखलंदाजी के जरिए ही यह टला था। वाजपेयी सरकार ने एलटीटीई को आगे न बढ़ने वरना बुरे अंजाम होने की खुलेआम धमकी दी थी। उसने श्रीलंकाई सैनिकों को बचाने के लिए जहाज भी भेजे थे। अमेरिकी और भारतीय सरकारों की चेतावनियों को खारिज न कर पाने के कारण एलटीटीई आगे नहीं बढ़ी।

तमिल जनता की राष्ट्रीय समस्या का फौजी समाधान ढूंढ़ने में श्रीलंकाई शासक वर्गों की असमर्थता के कारण रनिल विक्रमसिंघे के नेतृत्व वाले यूनाइटेड नेशनल फ्रंट ने शांति के नारे पर चुनाव लड़कर जीत दर्ज की। दिसम्बर 2001 में नार्वे की मध्यस्थता से शांति प्रक्रिया की शुरूआत हुई। एलटीटीई ने 30 दिनों तक युद्धविराम की घोषणा की और उसके जवाब में श्रीलंकाई सरकार ने भी युद्धविराम की घोषणा की। 22 फरवरी 2002 को दोनों पक्षों के बीच संधि-पत्र पर हस्ताक्षर किए गए और स्थाई युद्धविराम समझौता (सीएफए) लागू हो गया। युद्धविराम का पर्यवेक्षण करने के लिए एक विशेषज्ञ कमेटी, श्रीलंका मानिटरिंग मिशन का गठन किया गया जिसमें नार्वे और अन्य नार्डिक देश शामिल थे। थाईलैण्ड के फुकेट में 16 सितम्बर 2002 को शांति वार्ता का पहला दौर चला। इसके बाद कई दौर चले। ईलम सवाल के हल के लिए संघीय समाधान पर एलटीटीई सहमत हो गई। इस तरह उसने अपनी पृथक तमिल ईलम मांग से पीछे हटते हुए एक अंतरिम स्वयं-शासित प्राधिकार (आईएसजीए - इंटेरिम सेल्फ-गवर्निंग अथॉरिटी) का प्रस्ताव सामने रखा। सरकार ने भी अपनी तरफ से तमिलों को न्यूनतम अधिकारों के हस्तांतरण से बढ़कर पहली बार एक संघीय समाधान पर सहमति जताई। चीतों ने प्रस्ताव रखा कि आईएसजीए पर एलटीटीई का पूरा नियंत्रण होगा और उत्तरी व पूर्वी इलाके में सत्ता उसके हाथ में होगी। दक्षिणी श्रीलंका में सिंहली-बौद्धों ने यह आरोप लगाते हुए कि विक्रमसिंघे उत्तरी व पूर्वी क्षेत्र को एलटीटीई के हवाले कर रहा है, इस पर काफी शोर-शराबा मचाया। और उन्होंने सरकार पर इस शांति समझौते का स्वीकार न करने का दबाव डाला।

राष्ट्रपति चंद्रिका कुमारतुंगा ने आईएसजीए का विरोध किया और देश में आपातकाल की घोषणा की। भारतीय विस्तारवादी और उनके जूते चाटने वाले 'दि हिंदु' का सम्पादक एन. राम, सुब्रह्मण्य स्वामी आदि तथ्यों और सच्चाई (कि एलटीटीई समझौते के लिए भी तैयार थी) को भारतीय जनता से छुपा रहे हैं। वे ढिंढ़ोरा पीटते हुए चिल्ला रहे हैं कि एलटीटीई एक 'आतंकवादी' संगठन है और उसे सिर्फ विघटनकारी गतिविधियों में ही दिलचस्पी है और बातचीत से काई समाधान निकालने में कतई नहीं है। भारतीय 'लोकतंत्र' के 'चौथे स्तम्भ' ने तमिल जनता के वास्तविक अधिकारों और एलटीटीई के नेतृत्व में जारी उनके न्यायपूर्ण सशस्त्र संघर्ष के खिलाफ जनमत को मोड़ने में भारतीय दलाल पूंजीपतियों और श्रीलंकाई अंध राष्ट्रवादियों के दलाल की तरह काम किया। इसके बावजूद भी कि राष्ट्रीय समस्या का कोई समाधान नहीं निकाला जा सका और शांति वार्ता में काई खास प्रगति नहीं थी, फिर भी युद्धविराम जुलाई 2006 तक जारी रहा।

महिंदा राजपक्से जिसने कट्टर अंधराष्ट्रवादी जेवीपी के साथ चुनावी गठजोड बनाया था, 2004 में विक्रमसिंघे को हराकर सत्ता में आया। राजपक्से ने शांति प्रक्रिया का खुलेआम विरोध करते हुए एलटीटीई के खिलाफ एक बड़े आक्रमण की हिमायत की। उसने पूर्व में हुई अपनी पराजयों से सबक लेते हुए और दोस्ताना देशों से, खासकर भारत और चीन से आवश्यक आर्थिक, सैन्य व राजनीतिक समर्थन लेते हुए अपनी फौजों को अंतिम युद्ध के लिए तैयार किया। उसने खासकर पश्चिमी देशों में एलटीटीई पर कूटनीतिक हमला भी छेड़ा क्योंकि वहां की तमिल जनता में एलटीटीई को मजबूत समर्थन प्राप्त था। इसके अलावा, सरकार ने एलटीटीई में एक फूट की साजिश भी रचकर करुणा नामक शख्स को अपने पक्ष में कर लिया जिसने ईलम जनता के साथ गद्दारी की। इससे न सिर्फ पूर्वी इलाके में एलटीटीई कमजोर पड़ गई, बल्कि सरकार को उसके कई

फौजी रहस्यों के बारे में जानकारी मिल गई जिनके बारे में उसे तब तक कोई जानकारी नहीं थी।

एलटीटीई द्वारा बंद की गई मविल आरु नहर के फाटक खुलवाने के बहाने 26 जुलाई 2006 को श्रीलंकाई वायुसेना ने हमला किया और उसके साथ ही **ईलम युद्ध-4** की शुरूआत हुई। यह कथित रूप से पूर्वी इलाके के सरकार द्वारा नियंत्रित 15,000 गांवों को सिंचाई का पानी पहुंचाने के लिए था। श्रीलंकन मानिटरिंग मिशन (एसएलएमएम) ने एलटीटीई पर नहर के फाटक खोलने का दबाव डाला। लेकिन श्रीलंकाई सरकार ने आक्रमण को बंद करने से यह कहकर इनकार किया कि 'सुविधाओं को मोलभाव के साधनों के रूप में इस्तेमाल नहीं किया जा सकता'। एसएलएमएम ने हमलों का खण्डन किया और माना कि "यह काफी सुस्पष्ट है कि उन्हें (सरकार को) पानी में दिलचस्पी नहीं है। उन्हें कुछ दूसरी चीज में दिलचस्पी है।"

2006 के बाद से सरकारी सेनाओं ने धीरे-धीरे पर लगातार आगे बढ़ते हुए एक के बाद एक एलटीटीई द्वारा नियंत्रित इलाकों पर कब्जा करना शुरू किया। पहले उन्होंने पूर्वी भाग पर जोर लगाया और जुलाई 2007 तक उस पर पूरा नियंत्रण हासिल किया। फौजी तौर पर जीत हासिल करने के बाद सरकार ने राजनीतिक रूप से भी अपनी सत्ता मजबूत करते हुए चुनाव का ढकोसला कर गद्दार करुणा की तमिल मक्कल विडुतलाई पुलिगल (टीएमवीपी) को गद्दी पर बिठाया। सितम्बर 2007 में उसने उत्तरी क्षेत्र पर ध्यान केन्द्रित किया। पहले मन्नार पर कब्जा कर अंततः एलटीटीई के नियंत्रण वाले सभी इलाकों पर कब्जा किया।

गृहयुद्ध शुरू होने के बाद से पिछले 25 सालों में युद्ध के विकासक्रम के मुताबिक एलटीटीई द्वारा नियंत्रित इलाके घट-बढ़ जाते थे। इस ताजा युद्ध में मिली पराजय के समय तक हमेशा उसका अपना कुछ इलाका हुआ करता था। अपने इलाकों में एलटीटीई ने समानांतर सरकार चलाई। न्यायव्यवस्था, पुलिस, राजस्व, टीवी और रेडियो स्टेशन, वित्त प्रबंधन व बैंकिंग, आप्रवासन, व्यापार, कृषि आदि उसके ढांचे हुआ करते थे। फौजी रूप से 1983 में एलटीटीई 30 सदस्यों का गुरिल्ला बल था जो हजारों बलों के साथ एक परम्परागत स्थिर सेना के रूप में उभरा। उसके थलसैनिक ब्रिगेड थे, महिला ब्रिगेड थे, कमाण्डो यूनिटें और बारूदी सुरंगें लगाने, निशानेबाजी, मोर्टार व अर्टिलरी के गोले दागने और टैंकों और बख़्तरबंद गाड़ियों का मुकाबला करने आदि में विशेषज्ञता हासिल डिवीजन थे। सी टाइगर्स के नाम से एलटीटीई का नौसैनिक विभाग भी था। और वह दुनिया की इकलौता गुरिल्ला सेना थी जिसके पास एअर टाइगर्स के नाम से एक वायुसैनिक विभाग भी था। उसके पास कई समुद्री जहाज भी थे और सीमित संख्या में छोटे विमान भी थे। **(बाकी अगले अंक में....)**

एसटीएफ पर पीएलजीए का जबरदस्त हमला - 13 आतंकियों का सफाया

धमतरी जिले के नगरी विकासखंड के अंतर्गत रिसगांव के जंगल में 10 मई की शाम को पीएलजीए ने एसटीएफ के विशेष प्रशिक्षण प्राप्त आतंकियों पर घात लगाकर हमला किया। इस हमले में 14 आतंकियों को मौके पर ही ढेर कर दिया गया जबकि 12 अन्य घायल हो गए। इनमें से एक पुलिस का मुखबिर था। इसमें पीएलजीए ने पुलिस के अत्याधुनिक हथियारों (3 एके-47, 3 एसएलआर और दो इंसास रायफलें) को भी अपने कब्जे में ले लिया। हमला अंधेरा होने तक जारी रहा। ज्ञात रहे कि ये सभी जवान कांकेर के जंगलवार प्रशिक्षण शिविर से प्रशिक्षित हत्यारे थे।

यह हमला तब हुआ जब कांकेर की पुलिस पार्टी चार वहानों के काफिले में सवार होकर फरसगांव खल्लारी ग्रामों की सर्चिंग कर वापस नगरी की ओर आ रही थी। मांदागिरी एवं संदाबाहरा गांवों के बीच पहाड़ी पर पीएलजीए के लाल योद्धा घात लगाए बैठे थे। पीएलजीए ने बारूदी सुरंग का विस्फोट किया जिस कारण टाटा 407 वाहन तथा एक टाटा सुमो वाहन उसकी जद में आ गए और उनके परखचे उड़ गए। हमला पांच बजे शुरू हुआ और रात होने तक चलता रहा। इस जबरदस्त हमले से पुलिस वालों में हड़कंप मच गया जिसके बाद वे जंगलों की तरफ भाग गए और बिखर गए। कांकेर से निकली इस पुलिस पार्टी में 47 जवान थे जो सभी एसटीएफ के थे। घटना के 18 घंटे बीत जाने के बाद भी धमतरी पुलिस व कांकेर पुलिस के एक भी अफसर की हिम्मत नहीं हुई कि वह घटना स्थल तक जाकर भी देखे।

रिसंगांव हमले में पीएलजीए द्वारा छीने गए हथियार व अन्य साजोसामान

हमले की गूंज दिल्ली तक सुनाई दी। इस हमले से बौखलाकर चिंदबरम से लेकर रमन व ननकीराम कंवर तक ने बयान दिए कि नक्सलियों को 1 साल में खत्म कर दिया जाएगा। राजनीतिक हल्कों में इस हमले से हड़कंप मच गया जबकि नए क्षेत्र में पहले बड़े व सफल हमले से दण्डकारण्य की जनता में खुशियों की लहर साफ देखी जा सकती थी। ★

तकनीकी विभाग की वरिष्ठ साथी कॉमरेड नर्मदा (गंगा) को लाल सलाम!

11 सितम्बर 2009 को दण्डकारण्य के तकनीकी विभाग की वरिष्ठ सदस्य कॉमरेड नर्मदा का बीमारी के कारण आकस्मिक निधन हो गया। उनकी मृत्यु के साथ डीके के तकनीकी विभाग ने एक समर्पित कार्यकर्ता और डाक्टर खो दी। पिछले दो सालों से कॉमरेड नर्मदा पार्किन्सन बीमारी से पीड़ित थीं। इसके कारण उन्हें दिमागी दौरे पड़ रहे थे। मई 2008 में पहली बार उन्हें दौरा पड़ा था। तबसे एक पैर और एक हाथ निष्क्रिय हो चले थे। स्थानीय डॉक्टरों ने दवाई दी जिससे कुछ हद तक वह ठीक हुई थीं। लेकिन अगस्त 2009 से फिर से उन्हें दौरे पड़ने लगे जिससे उनके शरीर के अंग निष्क्रिय बनने लगे थे। इससे उन्हें खाना और निगलना भी मुश्किल होने लगा था। इसके बावजूद भी वह तकनीकी कामकाज में जहां तक हो सके भाग लेने लगी थीं। इस बीच 11 सितम्बर को अचानक उनकी मृत्यु हो गई। उन्हें बचाने के लिए साथियों और दस्ता डॉक्टर के द्वारा की गई सारी कोशिशें नाकाम रह गईं।

कॉमरेड नर्मदा का जन्म 1969 में उत्तरी तेलंगाना के करीमनगर जिले के गांव मोती में हुआ था जोकि जगित्याल कस्बे से लगा हुआ था। गरीब किसानी परिवार में मां पोशव्वा और पिता नरसैया की एकलौती बेटी के रूप में पैदा हुई थीं। माता-पिता ने उन्हें गंगा नाम रखा था। जब वह एक साल की भी नहीं हुई थीं तब बीमारी से उनके पिता का निधन हो चुका था। बाद में उनकी मां पर पूरे परिवार को पालने की जिम्मेदारी आ गई। गरीबी के चलते बचपन से ही उन्हें मजदूरी काम करना पड़ता था। नर्मदा और उनका भाई दोनों भी मजदूरी करते थे। छोटी उम्र में ही उनकी शादी ममेरे रिश्ते में करा दी गई। शादी के दो साल बाद से ससुराल जाकर वहां मेहनत करने लगी थीं। उस परिवार में वह एक बेटी के रूप में शामिल हो गई। चूंकि ससुराल में पार्टी की राजनीति का प्रभाव था और उनके पति रैडिकल युवा संगठन में काम करते थे, इसलिए वह भी पार्टी के करीब आ गई। अपनी सास के साथ मिलकर उन्होंने मशाल जुलूस में भाग लिया। उनके घर में आने वाले पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ वह बतियाती थीं और इस तरह उन्हें क्रांतिकारी राजनीति से लगाव हो गया। फसलों के सीजन में खेतिहर मजदूरी करने के साथ-साथ देशाई बीडी कम्पनी के लिए बीडियां बनाने का काम भी करती थीं। इस तरह वह बीडी मजदूर संगठन में सदस्या बन गईं। वहां होने वाले अन्याय के खिलाफ कॉमरेड नर्मदा ने अपनी आवाज बुलंद की। बीड़ी मजदूरों की कई समस्याओं को लेकर किए गए संघर्षों में उन्होंने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। बीडी उद्योग में काम करने वाली महिलाओं पर कई अत्याचार होते थे जिसके खिलाफ मजदूरों ने कई बार हड़तालें की थीं। और अत्याचारी शेरदारों को सजा देने में वह आगे रहीं।

1980 के दशक में उत्तरी तेलंगाना किसान आंदोलन उस समय काफी तेजी से आगे बढ़ने लगा था। गांव-गांव में संगठनों के नेतृत्व में सामंतवाद-विरोधी संघर्ष बड़े जोर शोर से चलाए जा रहे थे। सरकारी दमन का भी पूरा जोर लगाया हुआ था। पुलिस वाले गांवों में हमले कर नौजवानों को बड़ी संख्या में उठाकर ले जाया करते थे और खूब यातनाएं देते थे। एक बार अल्लीपुर गांव में रैडिकल युवा संगठन के कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर ले जाते समय गांव की समूची जनता ने उसका मुकाबला किया। महिला-पुरुष और बच्चे-बूढ़े सभी ने अपने परम्परागत हथियारों को लेकर पुलिस का मुकाबला कर सभी गिरफ्तार नौजवानों को छुड़वा लिया था। इस जन-प्रतिरोध ी कार्रवाई में कॉमरेड नर्मदा ने सक्रिय भूमिका निभाई थी। बीड़ी मजदूरों के बीच उन्होंने सक्रिय काम करते हुए सरकारी दमन का प्रतिरोध किया। गिरफ्तार लोगों को छुड़वाने के लिए सभी को एकजुट करने में कॉमरेड नर्मदा की सराहनीय भूमिका रही। इन संघर्षों के दौरान उनकी समझदारी बढ़ने लगी कि इस व्यवस्था में आमूलचूल बदलाव के लिए संघर्ष किए बिना समस्याओं का हल करना नामुमकिन है। इस तरह संघर्ष को अपना जीवन-पथ के रूप में स्वीकारते हुए वह 1991 में पार्टी में पूर्णकालीन कार्यकर्ता बन गईं। 1992 में पार्टी ने उन्हें सदस्यता प्रदान की।

जब कॉमरेड नर्मदा के पति को, जो युवा संगठन के सक्रिय सदस्य थे, पुलिस ने एक झूठे केस में गिरफ्तार किया तो कॉमरेड नर्मदा अपने माइके चली गई थी। और वहां अपने भाई के साथ मिलकर मजदूरी काम करने लग गईं। उस समय उनकी मां ने उन पर यह कहते हुए दबाव डाला कि पार्टी में काम करने वाले पति के साथ जिंदगी गुजारने से कई दिक्कतें आएंगी इसलिए उन्हें छोड़ दे और दूसरे किसी से शादी करवाएगी। लेकिन कॉमरेड नर्मदा ने सरकारी दमन के साथ-साथ पारिवारिक दबाव का भी खूब मुकाबला किया। जब उनके पति जेल से रिहा हो गए, नर्मदा फिर ससुराल चली गईं। उसके बाद दोनों ने सरकारी दमन के बीचोबीच ही दृढ़ संकल्प के साथ अपनी-अपनी जिम्मेदारियां निभाने का सिलसिला जारी रखा। पति रैडिकल युवा संगठन में और कॉमरेड नर्मदा बीड़ी मजदूर संगठन में काम

करने लगे थे। इस दरमियान उनके दो बेटे हुए।

शत्रु दमन के तहत झूठी मुठभेड़ों का सिलसिला जोर पकड़ने लगा था। उस समय पार्टी ने इन दोनों को भूमिगत होकर तकनीकी काम संभालने को कहा। पार्टी के फैसले को स्वीकारते हुए अपने छोटे बेटे को रिश्तेदारों को सौंपकर बड़े बेटे को साथ लेकर भूमिगत हो गए। बिल्कुल अनपढ़ कॉमरेड नर्मदा ने दृढ़ संकल्प के साथ पढ़ना-लिखना सीख लिया। शहर में रहकर तकनीकी काम करने में पेश आने वाली तरह-तरह की परेशानियों का सामना करने के लिए आवश्यक चतुराई सीखने में वह कभी पीछे नहीं रहीं। अड़ोस-पड़ोस के लोग पूछने पर उन्हें क्या-क्या बताना है और कैसे बताना है ताकि उन्हें कोई शक न हो, ऐसे मामलों में वह जल्द ही माहिर हो गईं। इस तरह रोज घरेलू कामकाज करते हुए ही पार्टी के संपर्कों से मिलने का काम देखती थीं। उनके घर में आने वाले पार्टी के साथियों से आंदोलन के सम्बन्ध में जानकारियां और रिपोर्टें पूछ लेती थीं और इस तरह अपनी प्रतिबद्धता को और मजबूत बना लेती थीं। अपने पति के व्यस्त कामकाज को देखते हुए वह अपने बेटे को साथ लेकर शहरों से देहाती इलाकों में आती थीं और कारतूस आदि छापामार दस्तों तक पहुंचाया करती थीं। सिर्फ एक आश्रयदाता की तरह नहीं, बल्कि एक कुरियर के रूप में भी उन्होंने अपना योगदान दिया। शहर में पार्टी के संपर्क में आने-जाने और इंतजार करने के दौरान पीछे पड़ने वाले गुण्डों और बदमाशों से निपटने में उन्होंने अनुभव हासिल किया। इस तरह उन्होंने इस समाज में व्याप्त पितृसत्तात्मक शोषण व दमन को अच्छी तरह पहचान लिया।

1997 में उन्हें पार्टी ने एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपने का फैसला लिया। उसके लिए उन्हें अपने 8 साल के बेटे को परिवार वालों के पास छोड़ आना जरूरी था। फिर भी बिना किसी हिचकिचाहट के वह अपने बेटे को रिश्तेदारों के पास छोड़ आई थीं। खून का रिश्ता वर्गीय रिश्ते से बढ़कर नहीं, इस सच्चाई को न सिर्फ समझ लिया बल्कि उसे व्यवहार में लागू भी किया। पार्टी द्वारा तय काम में जुट गईं। अपनी मातृभाषा वाले इलाके से दूर जाकर दूसरे इलाके में काम शुरू किया। उस दौरान दुश्मन की निगरानी में आने से उन्हें सब कुछ छोड़कर वहां भागना पड़ा था। फिर भी कॉमरेड नर्मदा ने अपने पति को भी हिम्मत बताते हुए कई मुश्किलों को सह लिया। फिर से पार्टी के साथ संपर्क कायम करने में काफी समय लगा, फिर भी कॉमरेड नर्मदा ने हिम्मत नहीं हारी।

पार्टी से संपर्क कायम होने के बाद पार्टी ने उन्हें दण्डकारण्य भेज दिया। दण्डकारण्य की जनता के बीच घुलमिल जाने में उन्हें ज्यादा समय नहीं लगा। जनता के बीच रहते हुए ही हथियार बनाने वाली यूनिट में सदस्य के रूप में काम शुरू किया। हालांकि उन्हें इस काम में कोई प्रशिक्षण या अनुभव नहीं था, फिर भी एक-एक पुरजे को बनाने के साथ-साथ उन्हें जोड़ने का काम भी धीरे-धीरे सीख गईं।

तकनीकी विभाग में काम करने के दौरान वह काफी बीमार भी हुई थीं। लेकिन इलाज करवाने से ठीक हुई थीं। ठीक होने के बाद उन्होंने खुद दस्ते में डॉक्टरी काम सीख लिया। और अपने साथी कॉमरेड बीमार पड़ने से दवाई देती थीं और इलाज करती थीं। इससे बढ़कर वह मरीज कॉमरेडों से आत्मीय बरताव करते हुए समय पर दवा देती थीं और खानपान का खयाल रखती थीं। जनता और कॉमरेडों के प्रति सेवा की भावना उनमें कूट-कूटकर भरी होती थी। इस तरह एक डॉक्टर के रूप में भी वह तकनीकी विभाग के साथियों पर अपनी छाप छोड़ गईं।

शहादत के समय तक कॉमरेड नर्मदा 40 वर्ष की थीं। छोटी उम्र में ही पार्टी की क्रांतिकारी राजनीति से प्रेरित होकर बीड़ी मजदूर संगठन में सदस्या के रूप में शुरू कर एक तकनीशियन के रूप में जनसेना की जरूरतों को पूरा करने वाली सुदृढ़ कार्यकर्ता बनने वाली कॉमरेड नर्मदा की जिंदगी तमाम महिला-पुरुष कार्यकर्ताओं के लिये प्रेरणादायक है। क्रांतिकारी आंदोलन की जरूरतों को तवज्जो देकर अपने बच्चों को छोड़ने में और कई सालों तक बच्चों से मिलने का अवसर न आने से भी विचलित न होने में उन्होंने एक आदर्श पेश किया। शोषित जनता के मुक्ति संग्राम में लगे सभी साथियों में अपने बच्चों को देखने वाली एक आदर्शपूर्ण मातृमूर्ति थीं वह। कई बार बीमार पड़ने से भी और समय पर इलाज की सुविधाएं न मिल पाने से भी सभी मुश्किलों को सहकर पार्टी और क्रांति के लिए आखिरी दम तक काम करने वाली एक कर्मठ कार्यकर्ता थीं वह। एक कार्यकर्ता ही नहीं, बल्कि एक डॉक्टर और एक मां के रूप में जनता और साथियों को प्यार बांटने वाली एक उत्तम कम्युनिस्ट थीं वह। आइए, कॉमरेड नर्मदा के सपनों को साकार बनाने के संकल्प के साथ इस बीमारू व्यवस्था को जड़ से खत्म कर एक खुशहाल समाज की स्थापना के लिए जारी जन संग्राम को तेज करें। ★

(...पेज 49 का शेष)

पढ़ना दूभर बना दिया था। कइयों को जबरन पकड़ कर एसपीओ बनाया जा रहा था। लेकिन कॉमरेड हड़मे को यह बिल्कुल भी मजूंर नहीं था कि अपने ही लोगों पर हमले करने वाले जुडूम का साथ दिया जाए। उन्होंने इसका विरोध किया। वह स्कूल से भाग आईं।

जब वह गांव में आईं तो चारों ओर तबाही के मंजर तैर रहे थे। लोगों का सब कुछ बर्बाद कर दिया गया था। और जबरन बंदी शिविरों में हांककर ले जाया जा रहा था। उन्होंने देखा कि 'सरकार' किस तरह 'विकास' कर रही है। कैसे एसपीओ महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार कर उनके जीवन पिंजर बना रहे हैं। कैसे संयुक्त अभियानों से गांव के गांव उजाड़े जा रहे हैं। इस सबके खिलाफ उन्होंने हथियारबंद आंदोलन में शामिल होने के बारे में सोचा।

इससे पहले बचपन से ही वह क्रांतिकारी आंदोलन को नजदीक से देख रही थीं। गांव में आने वाले दस्तों से वे जरूर

(शेष पेज 28 में...)

मड़कमगुड़ेम शहीद कॉमरेड्स भास्कर (कोरसा सन्नू), राजू और सन्नू को लाल-लाल सलाम!

अप्रैल 2009 में 15वीं लोकसभा के चुनावों की ड्रामेबाजी हो रही थी। पार्टी ने उसका बहिष्कार करने का आव्हान जनता को दिया हुआ था। उसी आव्हान को सफल बनाने के लिए कॉमरेड भास्कर अपने दो अन्य साथियों कॉमरेड राजू और कॉमरेड सन्नू के साथ गांव में गए हुए थे। उस दिन दरभा डिवीजन के ओमलवार गांव में शादी हो रही थी। ये तीनों कॉमरेड जनता के साथ मिलकर शादी के समारोह में शामिल हुए थे। अचानक वहां आए अर्ध-सैनिक बलों, पुलिस व एसपीओ ने उनको पकड़ लिया। उन्हें मार-मार कर लहू-लुहान कर दिया। बाद में तीनों कॉमरेडों को मड़कमगुड़ेम गांव के पास ले जाकर शाम को साढ़े चार बजे पहाड़ी पर गोलियों से भून डाला। कॉमरेड भास्कर, राजू और सन्नू जनता के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर गए हैं। इनकी शहादत से प्रेरणा लेकर हजारों युवक-युवितयां पीएलजीए में भर्ती होंगे और जनयुद्ध को तेज करेंगे। दण्डकारण्य को आधार इलाका बनने के उनके सपनों को जरूर परवान चढ़ाएंगे। आइए, इन कॉमरेडों की जीवनी पर नजर डाली जाए।

कॉमरेड भास्कर

कॉमरेड भास्कर दक्षिण बस्तर डिवीजन (बीजापुर जिला) के गांव डल्ला में गरीब आदिवासी परिवार में जन्म लिए थे।

कोरसा परिवार में जन्मे भास्कर को अपने माता-पिता ने प्यार से सन्नू नाम रखा था। तालपेरू नदी के किनारे पहाड़ों की गोद में बसा हुआ यह गांव बस्तर के कई अन्य गांवों की तरह गरीबी, अशिक्षा, कुपोषण, मुखियाओं के दबाव व पुलिस दमन का शिकार था। कॉमरेड भास्कर बचपन से ही पार्टी द्वारा गांव में आयोजित की जाने वाली सभाओं में अपने पिता के साथ भाग लेते थे। अपने माता-पिता की तीन संतानों में से वह सबसे बड़े थे। और बचपन में ही उनके पिता गुजर गए थे। बचपन से कॉमरेड भास्कर गांव में बाल संगठन का सदस्य बने थे। गाय चराते हुए, बच्चों के साथ खेलते हुए चेतना नाट्य मंच के गीत गुनगुनाया करते थे। अपने सुरीले स्वर में गीत गाते हुए जनता का दिल जीत लिया करते थे। बड़े होकर चेतना नाट्य मंच के कार्यकर्ता बनने के अरमान दिलों में संजाए हुए थे। दस्ता गांव में आने पर एक झोला लेकर दस्ता के पास आते थे और कहते थे - "आप मुझे छोटा कहकर दल में भर्ती नहीं करते, मैं बंदूक चला सकता हूं और गीत गा सकता हूं। मुझे क्यों नहीं आप भर्ती करते।" इस तरह दल कमांडर के साथ बहस में उलझ जाते थे। तब कमांडर उन्हें कहते थे "बाबू पहले तुम बड़े हो जाओ, और अच्छे से क्रांतिकारी राजनीति के बारे में समझ जाओ, तब तुम्हें दस्ता में भर्ती करेंगे।" तब कॉमरेड भास्कर का चेहरा मुरझा जाता था। पेशेवर क्रांतिकारी बनने के लिए हमेशा उनका दिल बेताब रहता था। जनता के दिलों में कॉमरेड भास्कर का जोशीला स्वर हमेशा गूंजता रहेगा।

कॉमरेड भास्कर जुलाई 2001 में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के बतौर सीएनएम का सदस्य बने थे। दक्षिण बस्तर डिवीजन सीएनएम टीम में शामिल होकर वे पूरी डिवीजन में घूम-घूमकर क्रांति की अलख जगाई। सभी जनसभाओं में कॉमरेड भास्कर अपनी टीम के साथी कलाकारों के साथ पूरे जोशो-खरोश के साथ नाच-गाने में भाग लेते थे और जनता को भी जोश से ओतप्रोत कर देते थे। गांव के सीएनएम कलाकारों को प्रशिक्षण देकर नये-नये कलाकार पैदा करते थे। अपने मासूम चेहरे के साथ, बिना घमंड के आम जनता में आसानी से घुलमिल जाते थे। सीएनएम दस्ता के अनुशासन को वे कड़ाई के साथ पालन करते थे। पार्टी में भर्ती होकर ही कॉमरेड भास्कर ने पढ़ना-लिखना सीखा। नये-नये गीतों को अपनी नोट बुक लिखकर गाने का अभ्यास करते थे। सीएनएम की पत्रिका 'झंकार' को वे बहुत ही ध्यान से पढ़ते थे। साथी कलाकारों को अपनी समझ के अनुसार विषयों को बताकर उनकी राजनीतिक चेतना को बढ़ने का प्रयास करते थे।

मलिंगेर में डीएकेएमएस के संगठनकर्ता - कॉमरेड भास्कर का पार्टी ने 2006 में दरभा डिवीजन में तबादला किया। पार्टी के इस प्रस्ताव को उन्होंने खुशी से स्वीकार किया। नये इलाके में आंदोलन का विस्तार करने के लिए कई तमन्नाओं को लेकर वे इस इलाके में आए थे। जनता को संगठित करने व जनाधार को बढ़ाने के लिए उन्होंने अथक प्रयास किया। पहले-पहल में कुछ दिनों तक कटेकल्याण एरिया में काम किया। बाद में डीवीसी ने मलिंगेर एरिया में उनकी बदली करने का प्रस्ताव रखा। 2006 नवंबर में ही उनकी राजनीतिक चेतना और कार्यशैली को देखते हुए पार्टी ने मलिंगेर एरिया कमेटी के सदस्य के रूप में उनको पदोन्नत किया। मलिंगेर में एरिया कमेटी में रहते हुए बडेसेट्टी और कोर्रा एरिया में जनता को डीएकेएमस में संगठित करने की उन्होंने बेहद कोशिशें कीं। जब 2006 में लुटेरी सरकार ने दंतेवाड़ा जिले के कोंटा और सुकमा एरिया में सलवा जुडूम दमन अभियान शुरू किया था, तब भास्कर एरिया में नया होने व जनाधार कम होने के बावजूद भी जनता पर अटल विश्वास रखा। क्रूर दमन के बीच ही जनता के

बीच काम किया। जब बड़ेसट्टी इलाके में दुश्मन ने सलवा जुडूम दमन लाया तब गांव के जनविरोधी मुखियाओं और पुलिस के अत्याचारों से स्थानीय जनता में डर बैठ गया था। कई लोग गांव से छोड़कर दोरनापाल जुडूम शिविर में जाने पर मजबूर हुए थे। गांव में जनसंगठनों की कमेटियां भी कमजोर पड़ गई थीं। ऐसी कठिन परिस्थितियों में भी कॉमरेड भास्कर टस से मस नहीं हुए थे। और गांव-गांव में जाकर कमेटियों को संगठित किया था। जनता को क्रांतिकारी आंदोलन के पक्ष में खड़ा किया। बाद में 2007 के अंत में मलिंगेर एरिया में रेंज स्तर का डीएकेएमएस सम्मेलन आयोजित किया गया। संगठन का जनाधार बढ़ाने और दमन में संगठन को खड़ा क टिकाये रखने में कॉमरेड भास्कर का दृढ़ संकल्प और मेहनत हैं। वहां आज जनाधार बढ़ा है और जनता दमन के खिलाफ सीना तान के उठ खड़ी हुई है। वह लड़ रही है। पीएलजीए में युवक-युवितयों की भर्ती में बढ़ोतरी हुई है।

किरंदुल एरिया की जनता में - 2008 से कॉमरेड भास्कर को किरंदुल एरिया में संगठनकर्ता की जिम्मेदारी पार्टी ने सौंपी थी। तबसे लेकर अपनी शहादत तक उन्होंने बैलाडिला के आसपास की जनता को संगठित किया। किरंदुल के आसपास की जनता को एनएमडीसी तथा एस्सार कंपनी ने गांव में सामुदायिक भवन निर्माण, नलकूप खनन, कंबल बांटना, साइकिल वितरण आदि लुभावन योजनाओं से दिग्भ्रमित करने की कोशिशें कीं। संगठन में जनता को संगठित करते हुए कॉमरेड भास्कर ने उनकी पोलपट्टी खोल दी। उनके झूठों का जनता के सामने पर्दाफाश किया। किरंदुल के आसपास की जनता मजबूरी में ठेकेदारों के पास कम मजदूरी में काम करती है। इसके खिलाफ नौजवान युवक-युवतियों को उन्होंने संगठित किया। एरिया कमान के सदस्य के रूप में काम करते हुए संघर्ष को आगे बढ़ाने में उन्होंने योगदान दिया। बस्तर की जनता के लिए अभिशाप बनी एस्सार कंपनी की संपत्ति पर अप्रैल 2008 में दो दफा हमला किया गया और उनकी दर्जनों गाड़ियों को जलाकर रख कर दिया गया था। उनको करोड़ों का नुकसान पहुंचाने वाली इन कार्रवाइयों में कॉमरेड भास्कर के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने किरंदुल के आसपास के जन मिलिशिया और संगठन सदस्यों का सुचारू नेतृत्व किया।

सरकार की बर्बर दमनकारी नीतियों और झूठे सुधार कार्यक्रमों व योजनाओं की असलियत उन्होंने जनता को बखूबी समजझाया। कॉमरेड भास्कर ने तेंदूपत्ता मजदूरी को बढ़वाने, गांवों में जन विरोधी मुखियाओं की सामाजिक लूटपाट व दबाव के विरोध के साथ-साथ जनता को 8 मार्च, 28 जुलाई, पीएलजीए सप्ताह आदि राजनीतिक गतिविधियों में भी जनता को संगठित किया। सभाओं में वक्ता के रूप में जनता में जोशपूर्ण भाषण देकर जनता की क्रांतिकारी चेतना को उन्नत किया। कॉमरेड भास्कर की शहादत से इस इलाके के जन आंदोलन को काफी नुकसान हुआ। आज वह हमारे बीच जीवित नहीं हैं, पर 'कॉमरेड भास्कर अमर हैं' का नारा हमेशा बैलाडीला के पहाड़ों में गूंजता रहेगा।

कॉमरेड मडकाम हिड़मा (राजू)

कॉमरेड मड़काम राजू (हिड़मा) 20 वर्ष पहले दंतेवाड़ा जिला के कुआकोंडा ब्लॉक में स्थित गांव जबेली में जन्म लिए थे। गरीब आदिवासी परिवार में जन्मे कॉमरेड हिड़मा अपने माता-पिता की छह संतानों में से सबसे बड़े थे। कॉमरेड हिड़मा ने अपने गांव के मिडिल स्कूल में आठवीं तक पढ़ाई की। इसके बाद अपनी पढ़ाई को जारी रखने के लिए पालनार के हाई स्कूल में भर्ती हुए थे। वहां से उन्होंने 10वीं तक पढ़ाई की। अपने भाई -बहनों को भी कॉमरेड राजू ने पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

छात्र जीवन से दरभा डिवीजन के मलिंगेर एरिया में चल रहे आंदोलन, गांव में सामंती मुखियाओं के खिलाफ चल रहे संघर्ष और पार्टी द्वारा जारी वर्ग संघर्ष से कॉमरेड राजू बहुत प्रभावित हुए थे। पार्टी द्वारा जारी सभी पर्चों और अन्य साहित्य को बहुत ध्यान से पढ़ते थे। स्कूली छुट्टियों के दौरान वह गांव में डीएकेएमएस के साथियों से मिलकर काम करते थे और क्रांतिकारी राजनीति को समझने की कोशिश करते थे। क्रांतिकारी गीतों को काफी चाव से सुनते थे और अपने साथियों को भी गाकर सुनाते थे। कॉमरेड राजू ने अपने स्कूल और छात्रावास में छात्रों को सुविधाएं न मिलने के विरोध में और छात्रों की छात्रवृत्ति गबन करने के खिलाफ संघर्ष में छात्रों का नेतृत्व किया। कॉमरेड राजू सरल स्वभाव के छात्र थे जो अपने साथियों के साथ दोस्ताना व्यवहार रखते थे। जनता से मिलजुलकर रहते थे। आदिवासी समाज पर हो रहे अत्याचारों और चल रहे भयंकर दमन अभियान सलवा जुडूम के खिलाफ उनके दिल में सदा गुस्सा भरा रहता था। आदिवासी जनता के जीवन में नया सूरज लाने के लिए चल रहे माओवादी जनयुद्ध के अलावा उनको आदिवासी समाज को समस्याओं से निजात दिलाने के लिए कोई रास्ता नहीं दिखता था। 10वीं की पढ़ाई पूरी होते ही उन्होंने सीधे आपने गांव के जन संगठन के नेताओं से पीएलजीए में भर्ती करवाने का आग्रह किया।

पढ़ाई छोड़ने के बाद गांव में डीएकेएमएस की सदस्यता लेकर किसानों को संगठित करने का काम किया। गांव के रेंज कमेटी सदस्य को पुलिस गिरफ्तार करके ले गई थी। पुलिस

जुल्म गांव वालों पर बरस रहा था, पालनार सीआरपीएफ कैंप में ले जाकर कई लोगों को यातनाएं दी गई थीं। तब कॉमरेड राजू ने गांव वालों को इसके खिलाफ संगठित करने की कोशिश की।

कॉमरेड राजू शहीदों की जीवनियों को बेहद ध्यान से पढ़ते थे और उनसे प्रेरणा लेते थे। 28 जुलाई शहीद स्मृति सप्ताह के दौरान जरूर सभा-सम्मेलनों में भागीदारी करते थे। मन ही मन शहीदों के सपनों को पूरा करने की कसम खाते थे।

जब पार्टी ने दिसंबर 2008 में पीएलजीए सप्ताह के दौरान पीएलजीए में भर्ती होने का आव्हान किया तो वह बहुत ही जोश के साथ पीएलजीए में भर्ती हुए। डिवीजनल कमेटी ने उन्हें मलिंगेर स्थानीय छापामार दस्ता में बतौर सदस्य जिम्मेदारी प्रदान की। उन्होंने तहेदिल से उस जिम्मेदारी को स्वीकार किया और छापामार जीवन, दस्ता के अनुशासन, सैनिक तकनीक आदि को सीखने के भरपूर प्रयास किये। 8 जनवरी 2009 को सिंगारम जनसंहार हुआ था। उसके विरोध में पार्टी दण्डकारण्य बंद का आव्हान दिया। उसे सफल बनने के लिए एनएमडीसी पर हमला किया गया। उसमें कॉमरेड राजू शामिल रहे। उनमें वर्ग दुश्मन के खिलाफ तीखी घृणा थी जो उसे हर हमले के लिए तत्पर रखती थी। उनका स्वभाव बेहद सरल था। घमंड नाम की चीज उनके अंदर नहीं थी। वे 'प्रभात', 'पडियोरा पोल्लो', 'वियुक्का', व स्थानीय डिवीजनल पत्रिका 'मोयल गुड़रूम' को वह चाव से पढ़ते थे और अपनी राजनीतिक चेतना को बढ़ाने के लिए हमेशा कोशिश करते थे।

15वीं फर्जी लोकसभा के चुनावों के बहिष्कार अभियान को सफल बनने के लिए कॉमरेड भास्कर के नेतृत्व में टीम गठित की गई जिसमें कॉमरेड राजू भी थे। कॉमरेड भास्कर के साथ वह भी मड़कमगुड़ेम झूठी मुठभेड़ में शहीद हुए।

कॉमरेड राजू एक छात्र से क्रांतिकारी योद्धा बने थे। और जनता की सेवा करते हुए उन्होंने अपनी जान की कुरबानी दी। इस उत्साही युवा कॉमरेड की शहादत से दरभा डिवीजन के क्रांतिकारी आंदोलन को बहुत नुकसान हुआ है। लेकिन जनयुद्ध में शहादतें अनिवार्य हैं। आइए, उनकी शहादत के मकसद को पूरा करने के लिए पीएलीजीए में भर्ती हों। कॉमरेड राजू का जीवन जनता के साथ-साथ खासतौर से छात्रों के लिए बेहद प्रेरणादायक है। हम सभी छात्रों से आव्हान करते हैं की अपने दोस्त कॉमरेड राजू के दिखाए पथ पर आगे बढ़ें और जनता के जीवन में उजाला लाने के लिए जारी संघर्ष में भागीदारी लें।

कॉमरेड माडवी सन्नू

21 वर्ष के कॉमरेड माड़वी सन्नू अपने माता-पिता की तीन संतानों में से सबसे छोटे लड़के थे। पढ़ाई छोड़कर खेती-किसानी काम करने में अपने पिता व भाई की सहायता किया करते थे। एनएमडीसी में काम करते हुए उन्होंने गांव के डीएकेएमएस की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लिया। जब पार्टी द्वारा बंद, हड़ताल आदि का आव्हान दिया जाता था तो उसमें भी वह पोस्टर, बैनरों को लिखने व लगाने में सक्रिय हो जाते थे।

कॉमरेड माड़वी सन्नू ने मड़कामीरास में पढ़ाई की थी। दंतेवाड़ा जिला कुआकोंडा ब्लॉक के हिरोली गांव में उनका जन्म हुआ था। गरीब आदिवासी परिवार में जन्मे कॉमरेड सन्नू छात्र जीवन से ही क्रांतिकारी राजनीति से प्रेरित थे। जब वह सातवीं कक्षा में पढ़ रहे थे तबसे गांव में जनसंगठन डीएकेएमएस की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेना शुरू किया। आठवीं कक्षा के बाद उन्होंने पढ़ाई छोड़कर डीएकेएमएस के सदस्य के तौर पर कई राजनीतिक और आर्थिक संघर्षों में भाग लिया। पिछले साल जब कुछ एसपीओ ने एक स्कूली छात्रा से बलात्कार किया तो उसके विरोध में छात्रों व महिलाओं को लामबंद करने में कॉमरेड सन्नू की अगुवा भूमिका रही।

पढ़ाई छोड़ने के बाद गांव में खेती-किसानी करना शुरू किया। बाद में एनएमडीसी में खलासी मजदूर के रूप में काम करने लगे थे। फर्जी लोकसभा चुनावों के दौरान भी उन्होंने कॉमरेड भास्कर और राजू के साथ मिलकर टीम में सक्रिय काम किया था। तब भास्कर और सन्नू के साथ वे भी झूठी मुठभेड़ में शहीद हो गए। कॉमरेड सन्नू की लाश को किरंदुल थाना जाकर जनता पुलिस से लड़कर प्राप्त की। उनके अंतिम संस्कार में कई गांवों की जनता ने भाग लिया। और 'फर्जी मुठभेड़ बंद करो', 'रमन सिंह सरकार मुर्दाबाद', 'कॉमरेड सन्नू अमर हैं' के नारे लगाए। ★

(...पेज 25 का शेष)

आकर लाल सलाम करके जाती थीं। पार्टी साहित्य को भी उन्होंने पढ़ा था। आखिर में विकट परिस्थितियों को देखते हुए उन्होंने पार्टी में भर्ती होने का प्रस्ताव एरिया दस्ता के कमांडर के सामने रखा। एरिया कमेटी ने तुरंत उनके प्रस्ताव को मंजूरी प्रदान की और उन्हें लाने के लिए पेंटा जन मिलिशिया को जिम्मेदारी दी। उसको 11 अगस्त को कुमोमगुड़ा में आने के लिए समय दिया हुआ था। सुबह पेंटा जन मिलिशिया दस्ते ने डेरा डाल कर तीन कॉमरेडों को उन्हें लाने के लिए गांव में भेजा था।

दस्ता में भर्ती होने के लिए आई हड़मे को कुछ ही समय हुआ था कि डेरा पर पुलिस का हमला हुआ। अपनी राजनीतिक जिंदगी की पहली सुबह ही नौजवान कॉमरेड हड़मे क्रांति की बलिवेदी पर अपनी जान कुर्बान कर गई।

छोटी सी उम्र में कॉमरेड हड़मे ने हम सबके सामने बहुत महान आदर्श प्रस्तुत किया है। उनका बलिदान हिमालय से भी ऊंचा है। आइए उनके सपनों को जनमुक्ति की मंजिल तक पहुंचाने के लिए आगे बढ़ें। कॉमरेड हड़मे सदा अमर रहेंगी। ★

श्रद्धांजली

जन कलाकार और सांस्कृतिक योद्धा
कामरेड किशोर (जयराम कोडापे) व प्रमोद अमर रहें!

15वीं लोकसभा के झूठे चुनावों के दौरान बीएसएफ और सी-60 के दरिंदे कमांडों ने कॉमरेड किशोर को कोड़सेपल्ली गांव में पकड़ लिया। तब वह बीमार थे और अस्पताल में इलाज के लिए जा रहे थे। उनको जब पकड़ा गया तो वह निहत्थे ही थे। कोड़सेपल्ली गांव से पकड़ कर चौड़ेमपल्ली के नजदीक ले जाकर उनकी गोली मार कर हत्या कर दी। और अखबारों में 'नक्सलियों के साथ मुठभेड़' की झूठी कहानी रच कर छपवाई गई। यह सरासर झूठी मुठभेड़ थी।

35 वर्षीय सांस्कृतिक योद्धा कॉमरेड किशोर का जन्म अहेरी तहसील के गांव रेगुलवाया में हुआ था। उनके पिता का नाम सम्मैया और माता का नाम जोन्नी है। वह एक गरीब राजगोंड परिवार में पैदा हुए थे। घर पर रहते हुए ही उनकी शादी हो गई थी और उनकी तीन बच्चियां हैं। फिलहाल वह पार्टी में अहेरी एरिया कमेटी के सदस्य रहते हुए, चेतना नाट्य मंच के संचालन की जिम्मेदारी संभाले हुए थे। जनवरी 2009 में सफलतापूर्वक संपन्न हुए एरिया अधिवेशन में कॉमरेड किशोर को सीएनएम के एरिया अध्यक्ष के रूप में चुना गया था।

1980 में सिरोंचा इलाके से क्रांतिकारी आंदोलन की शुरूआत हुई थी। सबसे पहले क्रांतिकारी राजनीति को आत्मसात करते हुए जनांदोलन में शामिल होने वाली सिरोंचा व बाद में अहेरी की ही जनता है। अहेरी में शुरू से ही गांव-गांव में आदिवासी किसान संगठन की इकाइयां खड़ी हुईं। किसान आंदोलन के शुरूआती नेतृत्वकारी कॉमरेडों में रेगुलवाया के कॉमरेड थे। इसी गांव के कॉमरेड पोरतेट लिंगन्ना और लक्ष्मण नैताम थे। 1984 में कमलापुर गांव में ऐतिहासिक किसान अधिवेशन के आयोजन को सभी जानते हैं। महाराष्ट्र सरकार ने उसे विफल करने के लिए जीतोड़ प्रयास किए थे। उस अधिवेशन ने पूरे एरिया में एक नए क्रांतिकारी उत्साह को पैदा किया था। उस समय कॉमरेड किशोर की उम्र मात्र 8-10 साल थी। पोरतेट लिंगन्ना के साथ लाल झंडे को पकड़कर वे बहुत ही खुशी के साथ अधिवेशन में जाने के लिए तैयार हुए थे। वहां अधिवेशन में आए हुए लोगों पर पुलिस ने जमकर लाठीचार्ज किया। लोगों में इधर-उधर भगदड़ मच गई। उसका उन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। 1990 में पूरे इलाके में भंयकर अकाल पड़ा था। आम जनता को खाने के लाले पड़ गए थे। उस समय पार्टी ने जनता के साथ मिलकर फैसला लिया कि जमींदारों के गोदामों पर धावा बोला जाए। शोषक साहुकारों और सरकारी गोदामों को जब्त किया जाए। अकाल विरोधी संघर्ष खड़ा किया जाए। उस समय के संघर्ष में, रंगुय जमींदार के घर पर और कुछ साहुकारों के घरों पर किए गए हमलों में नौजवान किशोर ने भी जोश के साथ भाग लिया था। 1991 तक आते-आते दमन का स्वरूप बेहद क्रूर और फासीवादी हो गया था। 1991 से 1994 तक क्रांतिकारी जनसंगठनों के 70-80 नेताओं और जनता को पुलिस ने झूठी मुठभेड़ों में मार डाला था। पहले कभी इस तरह का दमन का तांडव न देखने वाली जनता एक समय बहुत डर गई थी। 1991 से 1996 तक लगभग सभी जनसंगठनों के ढांचे ध्वस्त हो गए थे।

1997 के बाद एक बार फिर धीरे-धीरे गांव-गांव में संगठनों का विकास होने लगा। उस समय कॉमरेड किशोर पार्टी की राजनीति व क्रांतिकारी लक्ष्य के बारे में बहुत कुछ जान चुके थे। अपने गांव में पुनर-निर्मित हुए संगठन में शामिल हुए। गांव में रहते हुए कॉमरेड किशोर ने एक अच्छे संगठक की भूमिका निभायी और गांव वालों को संगठित किया। उनके गांव से पांच-सात किलोमीटर की दूरी पर ही पुलिस थाना है। गांव में संगठन की थोड़ी सी भी हलचल दिखाई देने से या मीटिंग, सभा होने से पुलिस गांव वालों को पीटना, पकड़ कर ले जाना, जेलों में डाल देना, तरह-तरह की मुश्किलें खड़ी करती थी। लेकिन किशोर अपने गांव में 2000 तक डटे रहे। जब पुलिस का दमन बेहद बढ़ गया और गांव में रहकर काम करना मुश्किल हो गया तो वह पेशेवर क्रांतिकारी बन गए। वहां से लेकर अपनी शहादत तक लगभग एक दशक की अपनी क्रांतिकारी जिंदगी में आंदोलन में कितने भी उतार-चढाव आने पर भी वह मजबूती और दृढ़ता के साथ अपनी जिम्मेदारी लिए खड़े रहे।

कॉमरेड किशोर अपनी जिम्मेदारी को निभाने के लिए दिन-रात सोचते रहते थे कि काम को कैसे आगे बढ़ाना है। कॉमरेड किशोर के साथ टीम हो या न हो, वह अकेले भी गांव-गांव में घूमकर नौजवानों व बच्चों को जमा करते और अपने क्रांतिकारी गीतों से लोगों में जोश भरते और पार्टी के

लक्ष्यों, उद्देश्यों को जनता में प्रचारित करते थे। लोगों को कहानियां, गीत, नाच दिखाकर उनका दिल जीत लेते थे। गांव में अगर किशोर आ गया है तो इसका मतलब हलचल शुरू हो जाती थी। लोग खुश हो जाते थे। कॉमरेड किशोर एक सच्चे कम्युनिस्ट क्रांतिकारी थे। उन्होंने अपनी जिंदगी को जनता की सेवा में लगा दिया। उन्होंने चेतना नाट्य मंच को आगे बढ़ाने के लिए कड़ी मेहनत की।

2007 नवंबर में सीएनएम का जोन अधिवेशन हुआ था। उसमें उन्होंने प्रतिनिधि की हैसियत से भागीदारी की थी। दण्डकारण्य में चल रहे सांस्कृतिक आंदोलन को समझने के लिए उन्होंने वहां खूब ध्यान दिया। दण्डकारण्य में जोन स्तर पर हुई सांस्कृतिक कार्यशाला में भागीदारी कर वहां पर अपनी कलाकारी को उन्होंने और मांजा और गीत लिखना सीखा।

कॉमरेड किशोर को जनता और क्रांति के ऊपर दृढ़ विश्वास था। वह सदा जनता पर विश्वास कर प्रतिकूल परिस्थितियों में भी दृढ़ता के साथ मैदान में डटे रहे, न केवल डटे रहे बल्कि दूसरे कॉमरेडों के लिए भी आदर्श बन गए। कितनी भी कठिन परिस्थिति आने से वह अपने मन को छोटा नहीं करते थे, क्रांतिकारी जिद व उत्साह के साथ काम को अंजाम देते थे। वह एक साफ दिल व ईमानदार कॉमरेड थे। बात-बात पर मुहावरे बोलने वाले, कहानियां सुनाने वाले सांस्कृतिक योद्धा कॉमरेड किशोर की जुबान पर हमेशा गीत रहते थे। कोई भी मौका होता वह उसी मौके का गीत गाते थे।

जब दुश्मन के हाथों पड़ गए तो अपनी जान देने के लिए कॉमरेड किशोर तैयार हो गए, लेकिन पार्टी को नुकसान पहुंचाने वाला, क्रांति को नुकसान पहुंचाने वाला एक शब्द भी अपनी जुबान से नहीं निकाले। उन्होंने सभी गुरिल्लों के लिए बहादुरी की मिसाल कायम की है। कॉमरेड किशोर एक आदर्श पेशेवर क्रांतिकारी थे, आदर्श सांस्कृतिक योद्धा थे।

आइए, कॉमरेड किशोर की शहादत को ऊंचा उठाए रखें, उनके अधूरे सपनों को पूरा करने के लिए जारी जनयुद्ध में कूद पड़ें। गांव-गांव से नौजवान उनके गीतों को याद करते हुए पीएलजीए में भर्ती हो जाएं।

कॉमरेड प्रमोद

23 वर्षीय कॉमरेड प्रमोद एक युवा कलाकार थे। इस रोगग्रस्त लुटेरी व्यवस्था में व्याप्त अनेक बीमारियों में से किडनी की बीमारी एक है। इस बीमारी से कॉमरेड प्रमोद फरवरी 2009 में शहीद हो गए।

कॉमरेड प्रमोद केशकाल एरिया के मण्डानार गांव के थे। घर पर उनका नाम रामलाल पोयाम था। उस गांव से कॉमरेड प्रमोद के साथ और कुछ युवकों की बचपन से ही क्रांतिकारी आंदोलन में भागीदारी बढ़ी। उन्होंने युवावस्था में जन मिलिशिया सैनिक के रूप में वर्ग संघर्ष में भाग लेना शुरू किया। उनके बड़े भाई कॉमरेड प्रेमलाल मण्डावी भी एक बहादुर जन मिलिशिया योद्धा थे जिन्होंने 2003 में आमाबेड़ा हाटबाजार में एक सशस्त्र पुलिस वाले का सफाया कर उसकी एसएलआर छीन लाई थी। बाद में उस जांबाज कॉमरेड की दुखद मृत्यु तब हुई थी जब उन्होंने 27 सितम्बर 2004 को फिर एक बार ऐसी ही एक एकल कार्रवाई में फरसगांव के पास एक पुलिस वाले को घायल किया और उसकी एसएलआर छीन ली थी। पीछे से पुलिस द्वारा की गयी गोलीबारी में कॉमरेड प्रेमलाल शहीद हुए थे। 2003 से नौजवान कॉमरेड प्रमोद पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में पार्टी में कार्यरत थे। अपने बड़े भाई की शहादत से वह विचलित नहीं हुए, बल्कि उससे प्रेरणा पाकर दुगुने उत्साह के साथ काम करना शुरू किया। दुश्मन के प्रति नफरत से कॉमरेड प्रमोद ने अपने काम को आगे बढ़ाया।

क्रांतिकारी आंदोलन में उन्होंने चेतना नाट्य मंच की जिम्मेदारी ली। 2004 से सीएनएम ने एक जनसंगठन का रूप ले लिया। उस वक्त उन्होंने प्रतापपुर एरिया में सीएनएम पर अपना कामकाज केंद्रित कर कई अच्छे नतीजे प्राप्त किए। उस इलाके में सैकड़ों लड़के-लड़कियां, नौजवान सीएनएम के सदस्य बने। आदिवासी जनता में नाच और गाने के प्रति मौजूद बेहद चाव को उन्होंने सदुपयोग किया। गाने, बजाने व नाचने के ऊपर दण्डकारण्य सांस्कृतिक सबकमेटी द्वारा चलाई गई कार्यशाला में उन्होंने भाग लिया। विशिष्ट समस्याओं पर जनता के बीच आंदोलन का संदेश ले जाने के लिए सही ढंग से वक्ता तैयार करने की कार्यशाला में भी उन्होंने भाग लिया। इनसे वह एक अच्छे जन कलाकार व वक्ता बनकर जनता में अमिट छाप छोड़ गए। और उनका विश्वास हासिल किया।

2005 जून में केंद्र व राज्य सरकार के नेतृत्व में चलाए गए फासीवादी सलवा जुडूम दमन अभियान के भयानक विध्वंसकांड को समूचे देश में प्रचारित करके आदिवासी क्रांतिकारी जनता के न्यायपूर्ण आंदोलन को व्यापक जनता का समर्थन जुटाने वाली दण्डकारण्य की सांस्कृतिक टोली का कॉमरेड प्रमोद ने बढ़िया नेतृत्व किया था। उन्होंने अपनी टीम के साथ नाच-गीतों से, नाटकों से और जानदार भाषणों से सलवा जुडूम के फासीवादी चरित्र का जनता के सामने पर्दाफाश किया। दिल्ली, बंगलूरु, हैदराबाद, चंडीगढ़, रायपुर, भुवनेश्वर के साथ-साथ कई उत्तर-पूर्वी

राज्यों के शहरों में अपने साथियों की टीम के साथ किए गए कार्यक्रमों, पत्रकार वार्ताओं के द्वारा सलवा जुडूम की फासीवादी नीतियों को प्रभावी ढंग से उजागर किया। उन्होंने क्रांतिकारी बुद्धिजीवियों, जनवाद पसंद जनता का आदर-सत्कार हासिल किया। इस क्रम में उनकी तबियत धीरे-धीरे बिगड़ती गई। परंतु उन्होंने अपनी क्रांतिकारी उर्जा को थोड़ा सा भी घटने नहीं दिया। 2007 अप्रैल में दण्डकारण्य सीएनएम के जोन सम्मेलन में प्रतिनिधि के रूप में हाजिर होकर सभी कॉमरेडों का विश्वास हासिल किया। और जोन कमेटी का सदस्य चुने गए। परंतु दिन-ब-दिन उनकी तबियत और गंभीर होती गई। भ्रष्टाचारी, रिश्वतखोर और लुटेरी व्यवस्था में किसी भी अस्पताल में जाने पर गरीबों की बीमारियां ठीक नहीं हो पातीं, कॉमरेड प्रमोद की भी बीमारी ठीक नहीं हुई। वह पेशेवर क्रांतिकारी के रूप में, पार्टी में एरिया कमेटी सदस्य के रूप में, आदिवासी जनसंस्कृति को देश की विशाल जनता के बीच ले जाकर उनका समर्थन हासिल करने वाले आंदोलनकारी के रूप में, बीमारी के चलते अपना पूर्ण समय न दे सकने की सीमिताओं के बीच उन्हें अपनी क्रांतिकारी जिंदगी को जीना पड़ा। ऐसी जिंदगी को वह कभी नहीं चाहते थे, परंतु लुटेरी रोगग्रस्त व्यवस्था में इलाज न करवा पाने के कारण उन्हें इस जिंदगी को झेलना पड़ा। एक ओर बिगड़ती हुई तबियत और दूसरी ओर मानसिक पीड़ा के साथ 2009 फरवरी में उन्होंने अंतिम सांस ली।

भले ही कॉमरेड प्रमोद आज हमारे बीच न रहे, पर अपनी छोटी सी क्रांतिकारी जिंदगी में उन्होंने क्रांति के लक्ष्य के प्रति जो प्रतिबद्धता दिखाई और अपने काम में रचनात्मकता व पहलकदमी जो दिखाई वो आज सभी के लिए सीखने योग्य हैं। आइए, कॉमरेड प्रमोद द्वारा छोड़े गए लाल झण्डे को दिल्ली के लाल किले पर फहराकर ही दम लेने का संकल्प लें।

कॉमरेड कुंजाम भीमा

उस दिन तपती धूप थी। बैलाडिला लौहा खदान के मुख्य नगर किरंदुल में गाड़ियां लाल धूल और काला धुआं उड़ाते दौड़ रही थीं। मजदूर भी खदान में व्यस्त थे। लौह अयस्क के कन्वेयर बेल्ट से रेल के रेक भरने का काम जोर शोर से चल रहा था। बुर्जुआ पार्टियां कांग्रेस, भाजपा और संशोधनवादी भाकपा के चुनाव प्रचार का शोर-शराबा था। चुनावी पार्टियों के नेताओं की सुरक्षा में भाड़े के अर्ध सैनिक बल काफी चौकसी बरत रहे थे।

बैलाडिला के अरबों रुपये मूल्य के लोहे का दोहन कर एनएमडीसी जनांदोलन को दबाने के लिए सड़क निर्माण का कार्य कर रही थी। फर्जी लोकसभा चुनाव बहिष्कार करने के लिए पार्टी ने आव्हान किया था। इस अभियान को सफल बनाने के लिए जन मिलिशिया ने बड़े पैमाने पर भाग लिया। चुनाव बहिष्कार के दौरान पोस्टर चिपकाने और पर्चे बांटने के लिए एक जन मिलिशिया टीम 9 अप्रैल को किरंदुल गई थी। इस टीम के एक मिलिशिया सदस्य कॉमरेड भीमा मजदूरों, छात्रों और महिलाओं में पर्चे बांट रहे थे। पर्चे बांटते-बांटते अनजाने में भीमा ने एक सादी वर्दी वाले पुलिसकर्मी को पर्चा थमा दिया। तुरंत वह हरकत में आ गया। भीमा को भी समझने में देर नहीं लगी कि वह पुलिस वाला ही है। इसलिए उन्होंने वहां से भागने का प्रयत्न किया। कॉमरेड भीमा थोड़ी सी दूर ही भाग पाए थे कि पुलिस वाले ने अपने पिस्तौल से उनको घायल कर दिया। घायल कॉमरेड भीमा को पुलिस जीप में उठाकर ले गई और यातनाएं देकर मार डाला। और उनकी लाश तक को गयाब कर दिया। कॉमरेड भीमा की लाश को लेने के लिए जनता ने रैली निकाली। और उनकी लाश देने की मांग की।

कॉमरेड भीमा ने 21 वर्ष पहले हिरोली गांव में जन्म लिया था। उनके पिता कुंजामी हुंगा एक गरीब आदिवासी किसान हैं। कॉमरेड भीमा के चार भाई-बहन हैं। वे सबसे बड़ी संतान थे। उनकी शादी हुई थी, लेकिन उनकी पत्नी एक बच्ची को जन्म देकर बीमारी के कारण गुजर गई थीं।

कॉमरेड भीमा किरंदुल एनएमडीसी में ठेकेदार के पास दैनिक मजदूर के रूप में काम करते थे। साथ में अपने माता-पिता की खेती-किसानी में भी सहायता करते थे। 2005 में जबसे पार्टी का उनके गांव में आना-जाना शुरू हुआ था तभी से उन्होंने डीएकेएमएस की सदस्यता ले ली। उसके बाद 2006 में जन मिलिशिया में सदस्य रहते हुए कई बार बंद और हड़तालों को सफल करने में सहयोग किया। एस्सार और एनएमडीसी के ऊपर किए गए कई हमलों में भी उन्होंने सक्रिय भाग लिया।

2008 अगस्त में हिरोली में मिलिशिया ने एक गोपनीय सैनिक दिलीप सेठिया पर किरंदुल में हमला कर उसकी एके-47 राइफल छीन कर लाए थे। इस हमले में कॉमरेड भीमा ने हिम्मत के साथ भाग लिया था और हमले को सफलतापूर्वक अंजाम देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

कॉमरेड भीमा ने जनयुद्ध की सेवा में जनता के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया है। कॉमरेड भीमा ने दुश्मन के गढ़ में जाकर प्रचार कर उसको चुनौती दी थी। बहादुर मिलिशिया सदस्य कॉमरेड भीमा सदा किरंदुल के मजदूरों, गांव के किसानों और आदिवासी जनता के दिलों में बहादुरी की मिसाल बनकर जिंदा रहेंगे। वहां की जनता उनकी बहादुरी के किस्से आने वाली पीढ़ियों को सुनाएगी। और उनके सपनों को पूरा करेगी।

कॉमरेड लिंगा (मिडियामी राजू)

बैलाडिला की पहाड़ियों से बहती मलिंगेर नदी के किनारे,

पहाड़ों की गोद में बसा है गुमियापाल गांव। इस गांव में 35 साल पहले कॉमरेड लिंगाल का जन्म हुआ था। कोया आदिवासी परिवार में जन्मे राजू को उनके मां-बाप ने मिडियामी राजू नाम दिया। कॉमरेड लिंगा बहुत मेहनती कॉमरेड थे। अपने माता-पिता के साथ बचपन से ही हर काम में हाथ बंटाते थे। इनका बचपन मलिंगेर की बहती धारा में गीतों को गुनगुनाते हुए तथा बैलाडिला खदानों की बारूद की गड़गड़हटों के बीच बीता। जैसे-जैसे वह बड़े होते गए बैलाडिला की दलाल एस्सार एवं एनएमडीसी में मजदूरी का काम करते हुए कॉमरेड लिंगा ने गरीब आदिवासियों पर हो रहे शोषण और अत्याचार को नजदीक से देखा था, जो कि उनके सीने में बारूद बनकर सुलग रहा था।

2005 में जब पार्टी का उनके गांव में जाना हुआ तो कॉमरेड लिंगा बड़ी उत्सुकता के साथ डीएकेएमएस संगठन में सदस्य बन गए। शोषण और अत्याचार के खिलाफ चल रहे क्रांतिकारी आंदोलन का हिस्सा बनकर में आगे बढ़े। उसके बाद 2006 में गांव में जनता की हिफाज़त के लिए बने जन मिलिशिया दस्ते में सदस्य बनकर पुलिस व अर्धसैनिक बलों के खिलाफ कई कार्रवाइयों में शामिल हुए। कॉमरेड लिंगा पांच बच्चों के पिता थे। वह पूरे परिवार का खेती-किसानी और मजदूरी करके पालन-पोषण कर रहे थे। किंतु वह अपने छोटे-छोटे दूधमुंहे बच्चों को छोड़कर अप्रैल 2007 में पीएलजीए के सैकंडरी बल में भर्ती हुए।

भर्ती होने के समय से ही वह किरंदुल जन मिलिशिया सदस्य रहकर एक वीर लड़ाकू के रूप में उभरे थे। बंद और हड़तालों में जनता को संगठित करने में, एनएमडीसी व रेलवे की संपत्ति पर हमला करने में जनता की अगुवाई करते थे। जुलाई 2007 में पीएलजीए ने मलनार से आरनपुर रोड में किकिरगुडेम के नजदीक बम विस्फोट कर दो सीआरपीएफ जवानों को गंभीर रूप से घायल किया। इस घटना में कॉमरेड लिंगा शामिल थे। कॉमरेड लिंगा दुश्मन के साथ बहादुरी से लड़ते थे। क्रांतिकारी आंदोलन के प्रति अटल विश्वास रखते थे। छापामार कौशल को सीखने में बहुत दिलचस्पी और लगाव रखते थे। कॉमरेड लिंगा की राजनीतिक एवं सैनिक क्षमता के विकास को देखकर पार्टी ने 2008 मार्च महीने से जन मिलिशिया कमांडर की जिम्मेदारी दी थी। वह अपनी जिम्मेदारी को निष्ठा और लगन के साथ निभाते थे। कॉमरेड लिंगा प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति और जड़ी-बूटियों के अच्छे जानकार थे। वह बुखार तथा अन्य बीमारियों का जड़ी-बूटियों से इलाज भी किया करते थे। जब वह गांव में थे तो कुछ सिराह (पारंपरिक वैद्य) का काम भी सीखा था। किंतु सिराह काम छोड़कर आंदोलन में शामिल हुए थे। शुरू से ही किरंदुल जन मिलिशिया सदस्य रहकर एक वीर लड़ाकू के रूप में उभरे थे।

2008 में एस्सार कंपनी के ऊपर किए गए हमलों में उन्होंने भाग लिया। इन हमलों में कॉमरेड लिंगा की भूमिका महत्वपूर्ण और बहादुराना थी। किरंदुल शहर के अंदर जाकर किए गए हमले की टीम की उन्होंने अगुवाई की थी।

28 जुलाई शहीदी स्मृति दिवस हो अथवा पीएलजीए स्थापना दिवस हो, उस दौरान आयोजित जनसभाओं की सुरक्षा में अहम भूमिका अदा करते थे। कॉमरेड लिंगा अदम्य साहस वाले जांबाज योद्धा थे। कॉमरेड लिंगा पालनार से आरनपुर गश्त पर जा रही सीआरपीएफ की टुकड़ी पर लेकामपारा के पास घात लगाकर हमला किया। इस एंबुश में अर्धसैनिक बलों के साथ लड़ते हुए 15 अक्टूबर 2008 को बहादुरी से शहीद हो गए।

कॉमरेड लिंगा की शहादत पीएलजीए योद्धाओं के लिए एवं मेहनतकश किसान-मजदूरों तथा नौजवानों के लिए प्रेरणा स्रोत है। नव जनवादी क्रांति की सफलता के लिए कॉमरेड लिंगा ने अपने प्राणों को न्यौछावर किया है। कॉमरेड लिंगा के अधूरे सपनों को पूरा करेंगे। दण्डकारण्य को आधार इलाका बनाएंगे। कॉमरेड लिंगा को हमारा इंकलाबी सलाम!

कॉमरेड जूरू (जग्गु धुर्वा)

6 अप्रैल 2009 को गड़चिरोली जिले के मुगनेर गांव में आतंकी सी-60 कमाण्डो दस्ते पर पीएलजीए ने एक जबर्दस्त हमला किया। लोकसभा चुनावों के मौके पर गांवों में आतंक मचाने के लिए निकले बलात्कारी व अत्याचारी दरोगा मुन्ना ठाकुर की अगुवाई में आए उन दरिंदों पर पीएलजीए ने हमला कर 4 हत्यारों का सफाया कर 7 को घायल किया। घायलों में मुन्ना ठाकुर भी शामिल था। इस शौर्यपूर्ण लड़ाई में पीएलजीए के बहादुर सदस्य कॉमरेड जूरू शहीद हो गए। कॉमरेड जूरू टिप्रागढ़ एरिया के गांव कोसमी का निवासी थे। यह गांव कोटगुल-मुरूमगांव सड़क के किनारे बसा है। 130 घरों वाले इस गांव को महाराष्ट्र पुलिस नक्सलवादियों का गढ़ कहती है, जो झूठ भी नहीं है। इस गांव से लगभग ढाई दर्जन युवक-युवतियां पीएलजीए बलों में काम कर रही हैं। शहीद कॉमरेड राधा, कॉमरेड मैनाबाई नेताम और अब कॉमरेड जूरू शहीदों की सूची में शामिल हुए हैं। गड़चिरोली के कमांडो कई बार इस गांव को निशाना बना चुके हैं। 60 के लगभग लोग इस गांव से जेल में हैं। फिर भी यह गांव क्रांतिकारी संघर्ष में डटा हुआ है। ऐसे ही क्रांतिकारी गांव में कॉमरेड जूरू का जन्म 21 वर्ष पहले हुआ था। कॉमरेड जूरू का घर में नाम जग्गू था। कॉमरेड जूरू के दो बड़े भाई और दो छोटी बहनें हैं।

कॉमरेड जूरू जब छोटे थे तो बाल संगठन में शामिल हुए

थे। बच्चों के साथ क्रांति का खेल, पुलिस और नक्सलवादियों के बीच मुठभेड़ का खेल खेलते थे। इनके इस खेल में हमेशा पुलिस पूरी-पूरी खत्म हो जाती थी। 16 साल का होते ही ग्राम रक्षा दल और फिर प्रजा रक्षा दल में शामिल हुए। मिलिशिया द्वारा की गई हर कार्रवाई में वह शामिल होते थे। 2006 जनवरी में कॉमरेड जूरू पीएलजीए में भर्ती हो गए। कुछ महीने टिप्रागढ़ एलओएस में काम करने के बाद कॉमरेड जूरू टिप्रागढ़ एरिया में कार्यरत पलटन-15 का सदस्य बने। पार्टी सदस्यता इन्हें घर में रहते हुए ही हासिल हो गई थी। पलटन-15 के लिए कॉमरेड जूरू एक विश्वसनीय योद्धा बने थे। कभी न थकते हुए पार्टी के हर काम को पूरा करते थे। सभी साथियों से हमेशा हंसते-मुस्कराते हुए बातचीत करते थे। कमांडर से हमेशा अपने लिए काम मांगते थे।

मरकानार हमले की सफलता में कॉमरेड जूरू का बड़ा योगदान रहा। लड़ाई के दौरान खेतुल में जा छुपे पलिस वालों को घेरने के लिए अपने कमांडर के साथ दुश्मनों का सफाया करते हुए कॉमरेड जूरू तेजी से आगे बढ़े थे। दुश्मन को एकदम नजदीक से घेरने में उन्होंने पहलकदमी की थी। 6 अप्रैल 2009 को मुगनेर आपर्चुनिटी ऐंबुश में भी युद्ध के मैदान में कॉमरेड जूरू का शौर्य, वीरता, उत्साह सभी पीएलजीए के साथियों के लिए हमेशा प्रेरणास्रोत रहेंगे। मुगनेर में दुश्मन का घेराव करने के क्रम में अंधेरा हो चुका था। तब कॉमरेड जूरू को छाती में गोली लगी। गड़चिरोली की माटी का वीरसपूत धरती माता की गोद में गिर गया। पीएलजीए के साथियों ने कॉमरेड जूरू की लाश को युद्ध क्षेत्र से बाहर निकाला। बाद में दूसरे दिन सैकड़ों ग्रामीणों के सामने अपने वीर साथी को अंतिम विदाई दी। क्रांतिकारी सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार किया गया।

टिप्रागढ़ एरिया की जनता और कोसमी गांव की जनता अपने प्यारे सपूत कॉमरेड जूरू के शहीद होने की खबर सुनी तो शोक की लहर में डूब गई। साथ ही साथ उन्हें गर्व भी है कि उनके बेटे जूरू ने दशुमन के साथ आमने-सामने की लड़ाई में छाती पर गोली खाई है, पीठ पर नहीं। आइए, हम कॉमरेड जूरू की वीरता को व उनकी वीरतापूर्वक शहादत को इंकलाबी सलाम करें।

कॉमरेड सुकरू

उत्तर गड़चिरोली के चातगांव एरिया के गांव भेंडि जनताना सरकार के अध्यक्ष कॉमरेड सुकरू एक सड़क दुर्घटना में शहीद हो गए। 'प्रभात' कॉमरेड सुकरू को श्रद्धांजलि अर्पित करती है और उनके शोकसतंप्त परिवार के प्रति संवेदनाएं व्यक्त करती है।

कॉमरेड सुकरू 7 अप्रैल 2009 को एरूगाटे गांव से आते हुए एक सड़क दुर्घटना में शहीद हो गए। कॉमरेड सुकरू ने पार्टी द्वारा दी गई हर जिम्मेदारी को पूरी ईमानदारी व निष्ठा के साथ निभाया। गड़चिरोली में जनता व जनसंगठनों, जनताना सरकारों पर जारी बर्बर दमन का उन्होंने भय नहीं खाया। जेल जाने और पुलिस के अत्याचार सहने के बावजूद भी वह पार्टी से कभी दूर नहीं हुए। जनता की राजसत्ता को स्थापित करने के लिए उन्होंने काम किया व पंचायत स्तर की जनताना सरकार के अध्यक्ष की जिम्मेदारी संभाली। आइए, जनता के प्यारे नेता और जनताना सरकार अध्यक्ष कॉमरेड सुकरू को लाल-लाल सलाम पेश करें।

कॉमरेड माड़वी जोगा

दक्षिण बस्तर डिवीजन के पामेड़ इलाके में गांव धांवरम में कॉमरेड माड़वी जोगा का जन्म हुआ था। शहादत के समय उनकी उम्र करीब 40 वर्ष थी। वह एक गरीब आदिवासी किसान परिवार के सदस्य थे। उनके पिताजी केरलापाल इलाके के गांव गोंगेनार से आये हुए थे। यह आकर उन्होंने खेत के लिए जमीन तैयार की। बाद में बीमारी से मां जिम्मे और पिता मूकाल का निधन हो गया। कुछ समय बाद कॉमरेड जोगा की शादी नंदे के साथ आदिवासी रस्मोरिवाजों के अनुसार हुई। उनके दो लड़के और तीन लड़कियां हुईं। कॉमरेड जोगाल का परिवार खेती और मेहनत मजदूरी करने वाला परिवार है।

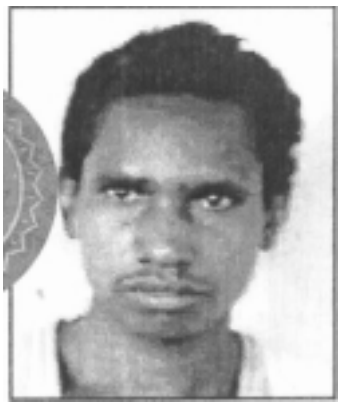

क्रांतिकारी पार्टी से उनकी नजदीकियां 1990 से शुरू हुई थीं। 2007 में कॉमरेड जोगा को कोया भूमकाल मिलिशिया कमांडर बनाया गया। 2007 में ही उन्हें पार्टी सदस्यता प्रदान की गई। कॉमरेड जोगाल ने दो सालों तक कोया भूमकाल मिलिशिया का काम पूरी शिद्दत के साथ किया। वह पार्टी अनुशासन को दृढ़तापूर्वक मानते थे। मिलिशिया साथियों की राजनीतिक चेतना को बढ़ने के लिए भरपूर कोशिशें कीं।

1 फरवरी 2009 को अचनक बीमारी से कॉमरेड जोगाल शहीद हो गए। जनताना सरकार के डाक्टरों ने उन्हें बचाने के लिए सारे प्रयास किए। परंतु वह नही बचा पाए। कॉमरेड माड़वी जोगाल को सैकड़ों क्रांतिकारी जनता की मौजूदगी में 2 फरवरी को अंतिम विदाई दी गई। कॉमरेड जोगाल जनता के दिलों में हमेशा जिंदा रहेंगे।

कॉमरेड माड़वी कोसाल

जिला बीजापुर, दक्षिण बस्तर डिवीजन, पामेड़ एरिया के मुरुकूम गांव के एक गरीब आदिवासी परिवार में मुरिया समुदाय में कॉमरेड माड़वी कोसाल का जन्म हुआ था। उनके एक बड़े भाई, तीन छोटे भाई और एक छोटी बहन हैं। कोसाल के पिता का देहांत कोसाल जब छोटे ही थे तभी बीमारी से हुआ था। उनकी मां अभी भी जिंदा है। कोसा की शादी काफी पहले ही हो गई थी। उसके दो बच्चे भी हैं।

कॉमरेड कोसाल बचपन में क्रांतिकारी बाल संगठन का सदस्य बने थे। उसके बाद उन्होंने सीएनएम में सदस्य रहते हुए जनता की चेतना बढ़ाने की कोशिश की। इसलिए आस-पास की जनता में वह काफी लोकप्रिय बने थे। वह गांव के छोटे-मोटे झगड़ों को सुलझाने के लिए जनताना सरकार की न्याय शाखा में सहयोग करते थे। बाद में उन्हें सीएनएम से मिलिशया यूनिट में बदली करते हुए प्रस्ताव किया गया। इस प्रस्ताव को उन्होंने खुशी से स्वीकार किया। इस तरह वह जन मिलिशिया पलटन का सदस्य बन गए थे।

कॉमरेड कोसाल को 2005 में मिलिशिया पलटन में सेक्शन डिप्यूटी कमांडर नियुक्त किया गया। कोसाल अपनी टीम को बहुत ही जुझारू तरीके से चलाते थे। दुश्मन की खबर मिलते ही उसका मुकाबला करने को तैयार हो जाते थे। 2006 में बासागुड़ा जुडूम शिविर पर हमला करने के दौरान सलवा जुडूम के गुंडों को पकड़कर सजा देने में वह आगे रहे। 2006 नवंबर में गगनपल्ली के पास तालपेरू नदी के किनारे एक बूबी ट्रैप के विस्फोट में एक सीआरपीएफ वाला घायल हुआ था। उस घटना को कॉमरेड कोसाल के नेतृत्व में ही अंजाम दिया गया था।

जून 2007 सलवा जुडूम के गुण्डे और पुलिस बल जब कोण्डापल्ली गांव को जल रहे थे तो अपनी मिलिशिया टुकड़ी को लेकर कॉमरेड कोसाल ने उन पर हमला किया और बारूदी सुरंग का विस्फोट किया। उसके बाद पुलिस वालों को वहां से भागना पड़ा। दुश्मन के खिलाफ लड़ने में कॉमरेड कोसाल हिम्मत के साथ भाग लेते थे। 2007 जुलाई में कॉमरेड कोसा को पामेड़ एसी ने पार्टी सदस्यता प्रदान की। उनके काम को और लोगों के साथ उनके व्यवहार को देखते हुए एरिया कमेटी ने उन्हें 2008 जून में जन मिलिशिया पलटन के सेक्शन कमांडर के पद पर पदोन्नत किया गया।

कॉमरेड कोसाल मलेरिया बीमारी और उल्टी दस्तों के कारण 16 जनवरी 2009 को शहीद हो गए। कॉमरेड कोसाल के शव का अंतिम संस्कार छह गांवों की जनता ने मिलकर किया। लाल झंडे में उनके शव को लपेट कर उनको अंतिम विदाई दी गई। कॉमरेड कोसाल की आशय को जनता ने पूरा करने के नारे लगाए।

इंद्रावती के जन मिलिशिया योद्धाओं को लाल-लाल सलाम!

24 जनवरी 2009 को सुबह के 9 बजे माड़ डिवीजन के इंद्रावती इलाके में गोण्डमेट्टा और धरमा गांवों के बीच पुलिस द्वारा की गई बर्बर गोलीबारी में कॉमरेड नीलू, मनकू, फगनू, राजू और शंकर पूरे 5 कॉमरेड शहीद हो गए। उस समय वे अपने इलाके की रक्षा के लिए इंद्रावती नदी के तट पर गश्त कर रहे थे। 23 की रात में ही भैरमगढ़ थाने से निकले पुलिस वाले वहां पर पहले से घात लगाकर बैठे हुए थे जिसके बारे में हमारा जन मिलिशिया दस्ता अनजान था। इस जाल में हमारे ये चारों जन मिलिशिया कॉमरेड फंस गए। हालांकि हमारे कॉमरेडों ने अत्याधुनिक हथियारों से लैस हत्यारे पुलिस बलों का अपनी देशी भरमारों से ही हिम्मत के साथ मुकाबला किया, लेकिन दुश्मन की भारी संख्या व अंधाधुंध गोलीबारी में हमारे ये प्यारे कॉमरेड शहीद हो गए। शत्रु बलों ने इन चारों कॉमरेडों की लाशें अपने साथ भैरमगढ़ लेकर मानवीय मूल्यों की धज्जियां उड़ाते हुए सभी को एक ही गड्ढ़े में गाड़ दिया। उनके परिजनों को लाशें सौंपने की औपचारिकता का रमन सिंह के फासीवादी शासन में कभी पालन नहीं हुआ। आइए, इंद्रावती इलाके के इन माटी-पुत्रों की जीवनियों पर नजर डालें -

कॉमरेड नीलू मड़काम

26 वर्षीय कॉमरेड नीलू का जन्म गोट्टुम गांव के एक गरीब परिवार में हुआ था। 20 साल की उम्र में वह डीएकेएमएस

का सदस्य बने थे। गांव में जन संगठन की हर गतिविधि में उनकी सक्रिय भागीदारी रहती थी। परम्परागत सामंती मुखियाओं और गांव के दबंग लोगों के खिलाफ हुए संघर्षों में कॉमरेड नीलू पहले कतार में रहते थे। गांव में कई जमीन-कब्जा संघर्ष हुए थे और कई भूमिहीन व गरीब किसानों में जमीन बांटी गई थी। इन संघर्षों में कॉमरेड नीलू की भागीदारी थी।

2005 में कॉमरेड नीलू जन मिलिशिया में भर्ती हुए थे। मार्च 2006 में उनका गांव पूरा सलवा जुडूम के सामने समर्पण किया था। गांवों पर लगातार जारी हमलों, सम्पत्तियों को तबाह करने, लोगों की हत्या करने, महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार, गांवों को जलाने, फसलों को जलाने आदि अत्याचारों को बर्दाश्त न कर पाने की स्थिति में इस गांव की जनता का हौसला पस्त हो चुका था। लेकिन कॉमरेड नीलू सरकारी 'राहत' शिविर से भाग चला आया था और ग्रामसभा के अंदर अपनी कमजोरी पर गलती मान ली। गांव के काफी लोग वापस आ गए। उसके बाद से दुश्मन के हमलों के बीचोबीच भी कॉमरेड नीलू चट्टान की तरह मजबूती से खड़े हो गए। जनता की रक्षा की खातिर रोज पहरेदारी करना, जनता की हौसला आफजाई करना आदि में वह आगे रहते थे। दुश्मन के खेमे में शामिल हो चुके जन दुश्मनों की जमीनों पर कब्जा कर जनता में बांटने और कब्जाई गई जमीनों में मिलिशिया खुद फसलें निकालकर उसका आधा हिस्सा गरीब परिवारों में बांटने आदि सामूहिक कृषि कार्यों

में कॉमरेड नीलू की सक्रिय भूमिका रही। उनकी जिंदगी सारे जन मिलिशिया कॉमरेडों के लिए आदर्श हैं।

कॉमरेड मनकू पोड़ियाम

इस कॉमरेड का जन्म जुवगूडेम के पोड़ियाम परिवार में हुआ था। छोटी उम्र में ही पार्टी से परिचित हुआ था। जब भी गांव में गुरिल्ला दस्ता आता था तो क्रांतिकारी राजनीति के बारे में गौर से सुन लेते थे। 2003 में कॉमरेड मनकू जन संगठन का सदस्य बने थे। जन संगठन में रहकर जनता का नेतृत्व करते हुए वह एक लोकप्रिय कॉमरेड बन चुके थे। वह काफी मेहनती कॉमरेड भी थे।

2006 में सलवा जुडूम के खिलाफ जारी जन प्रतिरोधी संघर्ष के दौरान कॉमरेड मनकू जन मिलिशिया में भर्ती हुए थे। जुडूम के हमलों से खौफ खाकर इस गांव की सभी जनता सरकारी 'राहत' शिविर में चली गई थी। लेकिन इनका परिवार पूरा मजबूती टिककर क्रांतिकारी खेमे में बना रहा। गांव पर कई बार हमले हुए थे। कई मासूम लोगों की निर्मम हत्याएं की गई थीं। फिर भी इनके परिवार ने हमलों से बचाव के लिए पास के जंगल में एक झोंपड़ी बनाकर उसमें रहना शुरू किया, पर आत्मसमर्पण नहीं किया। एक दिन बच्चे जब खेल रहे थे तो झोंपड़ी में आग लग गई जिससे सारा सामान जलकर राख हो गया। फिर भी कॉमरेड मनकू का दिल नहीं टूटा। उस समय जनताना सरकार ने उनके परिवार की मदद की। जब ओड़सापारा के जुडूमी गुण्डों पर हमला किया गया तब कॉमरेड मनकू ने एक दस्ते को राह दिखाने का काम किया। कॉमरेड मनकू जन मिलिशिया प्लटून में रहकर चौबीसों घण्टे पहरेदारी करते हुए जनता के जानमाल की सुरक्षा करते रहे। कॉमरेड मनकू एक जन मिलिशिया सदस्य थे। आइए, इस बहादुर कॉमरेड की शहादत का बदला लेने का संकल्प लें।

कॉमरेड फगनू ओड़ी

25 साल के कॉमरेड फगनू का जन्म ग्राम डुंगा के एक गरीब ओड़ी परिवार में हुआ था। डुंगा गांव ने कई क्रांतिकारियों को जन्म दिया और इस गांव के कई वीर सपूतों व वीरांगनाओं ने शहादत का झण्डा भी बुलंद रखा है। गांव में किए गए कई जन संघर्षों का प्रभाव कॉमरेड फगनू पर था। इस प्रभाव से वर्ष 2003 में वह जन संगठन का सदस्य बने थे। 2006 में वह जन मिलिशिया प्लटून में शामिल हो गए। जन मिलिशिया को सक्रिय रूप से संचालित करने में इस कॉमरेड का योगदान रहा। 2007 में इन्हें पार्टी सदस्यता प्रदान की गई। मिलिशिया सदस्यों को कॉमरेड फगनू पर विश्वास बढ़ गया और उन्होंने इस कॉमरेड को सेक्शन डिप्यूटी कमाण्डर चुन लिया। जन विरोधियों पर किए गए हमलों में यह कॉमरेड आगे रहते थे।

इस इलाके में जुडूम का शुरूआती हमला 29 नवम्बर 2005 को डुंगा और वेडमा गांवों पर हुआ था। इन दोनों गांवों में कुल मिलाकर 100 से ज्यादा घरों को जलाकर राख कर दिया गया। दो निर्दोष ग्रामीणों की छुरा घोंपकर पाशविक हत्या कर दी गई। इन सारी आतंकी कार्रवाइयों को प्रत्यक्ष देखने वाले कॉमरेड फगनू के दिलोदिमाग में हमेशा बदले की आग जल उठती थी। इसीलिए जुडूमी गुण्डों व एसपीओं के सफाये की कार्रवाइयों में वह काफी उत्साह के साथ भाग लेते थे। जनता का आदर-सम्मान करने में, मिलिशिया के अनुशासनात्मक नियमों का पालन करने में कॉमरेड फगनू एक आदर्श कॉमरेड थे। जुडूमी हमलों से अस्तव्यस्त हुई जन अर्थव्यवस्था को दोबारा पटरी पर लाने के प्रयासों में जन मिलिशिया के कॉमरेडों ने सामूहिक उत्पादन के कार्यों में सक्रियता से भाग लेकर ज्यादा फसल निकालने की एक जबर्दस्त पहलकदमी की। इस तरह उगाई हुई फसल का एक हिस्सा गांव के गरीब परिवारों में बांटा जाता है। इस तरह जन मिलिशिया सच्चे अर्थों में एक लड़ाकू इकाई के साथ एक उत्पादक इकाई के रूप में भी उभरी। ऐसे तमाम कार्यों में कॉमरेड फगनू ने पूरे जोश के साथ भाग लिया। यही वजह है कि जनता उन्हें बहुत प्यार करती थी। गड्ढ़े खोदने और बूबीट्रैप्स लगाकर दुश्मन के आतंकी हमलों को विफल करने में कॉमरेड फगनू की पहलकदमी सराहनीय थी। आइए, इस नौजवान योद्धा के जीवन-आदर्शों को अपने जीवन में उतारने का प्रण करें।

कॉमरेड मड़काम राजू

20 वर्षीय कॉमरेड मड़माम राजू का जन्म गोटुम गांव, इन्द्रावती एरिया के एक आदिवासी परिवार में हुआ था। कम उम्र में ही इस कॉमरेड की शादी हो चुकी थी। उनकी दो बहनों की भी शादी हो चुकी है। वे अपने मां-बाप के अकेले सहारे थे। वह एक बच्चे के पिता थे। कॉमरेड मड़काम राजू 2005 में पलटन डिप्टी कमांडर नीलू के साथ भर्ती हुए थे। ये दोनों दोस्त एक ही गांव के निवासी थे और एक साथ ही शहीद हुए। कॉमरेड मड़काम राजू ने अपने मां-बाप का इकलौता सहारा होते हुए भी निस्वार्थ भावना के साथ जनयुद्ध का रास्ता चुना। और पूरी दुनिया के बुजुर्गों को ही अपने मां-बाप माना।

2005 जून में सलवा जुडूम नाम का बर्बर दमन अभियान शुरू हुआ। उनके मां-बाप डर के मारे भैरमगढ़ 'राहत' शिविर में चले गए थे। लेकिन कॉमरेड मड़काम राजू उनके साथ लड़-झगड़कर वापस लेकर आये। क्योंकि आजाद ख्यालों के नौजवान कॉमरेड मड़काम राजू जिल्लत की जिंदगी पसंद नहीं थी। एक महीने में ही वह जुडूमी गुण्डों का घेरा तोड़कर भाग

आए और पार्टी में भर्ती हो गए।

24 जनवरी 2009 को हुई पुलिसिया गोलीबारी में कॉमरेड राजू ने बहादुरी के साथ संघर्ष करते हुए भारत की नई जनवादी क्रांति की सफलता के लिए अपने अनमोल प्राणों को उत्सर्ग किया। आइए, इस बहादुर की शहादत को बंद मुट्ठियों का सलाम पेश करें।

कॉमरेड शंकर लेकाम

माड़ डिवीजन के इंद्रावती इलाके में जन्मे कॉमरेड शंकर 2005 से जन मिलिशिया में काम कर रहे थे। उनका जन्म इस इलाके के ग्राम डुंगा में हुआ था। वह मध्यम आदिवासी किसान परिवार से थे। जबसे सलवा जुडूम इस इलाके की जनता के लिए अभिशाप बना यह समूचा इलाका एक युद्ध के मैदान में बदल गया। कई नौजवान युवक-युवतियों ने अपनी जान की बाजी लगाकर सलवा जुडूम का मुकाबला किया। अपने बहादुराना संघर्षों के बल पर सामंती ताकतों से जो जीतें हासिल कर रखी हैं, उन्हें बनाए रखने की अनिवार्यता में यहां पर जन संघर्ष के शोले भड़क उठे। सलवा जुडूम के श्वेत आतंक के विरुद्ध इंद्रावती नदी के दक्षिणी तट पर स्थित इस इलाके में जनता का जायज व वीरतापूर्ण प्रतिरोधी संघर्ष उठ खड़ा हुआ। इस तरह एक पूरी पीढ़ी ही संघर्ष के बीचों बीच उभरकर सामने आई।

इसी पीढ़ी के प्रतिनिधि थे कॉमरेड शंकर। उन्होंने इस प्रतिरोधी संघर्ष में जन मिलिशिया सदस्य के रूप में काफी योगदान दिया। अपने इलाके की जनता के जानमाल की रक्षा के लिए उन्होंने जी-जान लगाकर सलवा जुडूमी गुण्डों और भाड़े के एसपीओ-पुलिस के खिलाफ कई लड़ाइयों में भाग लिया। इंद्रावती नदी पार कर इलाके में घुसने की दुश्मन की कोशिशों पर कई बार पानी फेरने के प्रयासों में कॉमरेड शंकर समेत इस इलाके के कई युवा कॉमरेडों का योगदान है। अइए, इस कॉमरेड की शहादत को लाल सलाम पेश करें और उनके अधूरे सपनों को पूरा करने का संकल्प लें।

कॉमरेड मल्लू ओयम

13 साल का किशोर कॉमरेड मल्लू ओयम का जन्म ग्राम बेलनार का पारा कुंजामगूडेम में हुआ था। माता-पिता का प्यारा बेटा था मल्लू। जब उनके मां-बाप अपने मासूम बेटे की मौत पर फूट-फूटकर रो रहे थे तब उसे देखकर हर इंसान के दिल में फासीवादी सलवा जुडूम और उसे चलाने वाली शोषक सरकार के जुल्मों के खिलाफ गुस्से का लावा फूट पड़ना लाजिमी है। सलवा जुडूम के नाम से इस फासीवादी राज्य ने आदिवासी जनता पर बर्बरतापूर्ण युद्ध छेड़कर अभी तक एक हजार से ज्यादा आदिवासियों की हत्या की। अन्य अत्याचारों का हिसाब ही नहीं है। लेकिन इन घोर अत्याचारों के बीच भी बस्तरिया जनता ने जुडूम के अत्याचारों का दृढ़ता से प्रतिरोध किया और अपनी सुरक्षा के लिए प्रकृति की गोद में शरण लेना शुरू किया। अपने बसे-बसाए गांवों-घरों को छोड़कर जंगलों में इधर-उधर रहना कबूल किया पर दुश्मन के आतंक के सामने घुटने नहीं टेका। जंगलों में रहने वाली जनता भी कई बार दुश्मन के हमलों का शिकार हुई। उसी तरह 23 जनवरी 2009 को कॉमरेड मल्लू अपने गांव के अन्य लोगों के साथ रात में जंगल में सोकर सबेरे गांव की ओर आ रहा था। पहले से पहुंचे पुलिस वालों ने वहां पर घात लगाए रखा था। पुलिस को देखकर जनता इधर-उधर भगने लगी थी। तब पुलिसिया हत्यारों ने निहत्थी व निरपराध जनता पर एकतरफा अंधाधुंध गोलियां बरसाईं। इसमें किशोर मल्लू की मौत हुई। हत्या करने के बाद भी उन दरिंदों की खून की प्यास नहीं बुझी। लाश को ले जाकर इंद्रावती नदी में फेंक दिया। और वहां पर उन्होंने एम्बुश लगाया ताकि लाश को ले जाने की कोशिश में आने वाली जनता की हत्या की जा सके। लेकिन जनता ने यह खतरा नहीं उठाया। जन संगठनों ने अपने गांव में ही एक शोक सभा का आयोजन कर कॉमरेड मल्लू को श्रद्धांजली दी।

कॉमरेड इतवारू

माड़ डिवीजन के इंद्रावती इलाके के बईल गांव के एक यादव परिवार में कॉमरेड इतवारू का जन्म हुआ था। 30 वर्षीय कॉमरेड इतवारू गरीब परिवार से थे और वे कुल तीन भाई थे। थोड़ी जमीन थी पर मजदूरी किए बगैर पेट नहीं भरता था। 2003 में यह कॉमरेड संगठन का सदस्य बने थे। 2004 में यहां के 5 गांवों को मिलाकर जनताना सरकार का गठन किया गया था, तब कॉमरेड इतवारू को वित्त विभाग की शाखा कमेटी में चुन लिया गया था। 2005 में हुए जुडूमी हमलों से घबराकर इस कॉमरेड ने समर्पण कर सरकारी बंदी शिविर में रहना शुरू किया। दो सालों तक वह उसी में रहा। लेकिन शिविर में गुण्डों व एसपीओं के अत्याचारों से वह तंग आ चुके थे और दूसरी तरफ गांवों में लगातार हो रही प्रतिरोधी कार्रवाइयों से भी उनका हौसला बढ़ चुका था। इससे शिविर छोड़कर भाग आया और ग्रामसभा में अपनी गलती को स्वीकार कर जनता में घुलमिल गया। जनवरी 2008 में वह कोया भूमकाल मिलिशिया में सदस्य बन गए। इस तरह उन्होंने जनता की रक्षा की जिम्मेदारी अपने कंधों पर लिया।

30 जून 2008 की सुबह ग्राम ऊतला के पास नदी पार आई पुलिस पर पीएलजीए ने फायरिंग की थी। इससे पुलिस वाले डोंडेम और मर्रामेट्टा गांवों से होते हुए बईल पहुंचे थे। जब

गांव की जनता की पिटाई कर रहे थे तब पीएलजीए ने उनका पीछा कर फिर फायरिंग की। यहां पर पुलिस वालों ने भी जवाबी फायरिंग की। हालांकि किसी को कुछ नहीं हुआ। इतने में कॉमरेड इतवारू पुलिस वाले चल दिए समझकर घर पर आकर खाना खाने बैठ गए। तब पुलिस वालों ने घर को घेर कर उन्हें पकड़ लिया और बुरी यातनाएं देने के बाद उनकी निर्मम हत्या कर दी। और हमेशा की तरह 'मुठभेड़ में नक्सलवादी के मारे जाने' की झूठी खबर गढ़ दी। 1 जुलाई को पीएलजीए के साथ-साथ दो गांवों की जनता ने कॉमरेड इतवारू का अंतिम संस्कार कर श्रद्धांजली पेश की।

कॉमरेड मणि

33 साल के कॉमरेड मणि का जन्म ग्राम गोट्टुम के एक गरीब परिवार में हुआ था। 2002 में यह कॉमरेड जन संगठन सदस्य बने थे। जनता में काफी लोकप्रिय थे। जनता को क्रांतिकारी राजनीति समझाकर उन्हें क्रांतिकारी खेमे में मजबूती से टिकाए रखने में कॉमरेड मणि ने बढ़िया योगदान दिया। 2004 में यहां पर निर्मित जनताना सरकार में इस कॉमरेड को कमेटी में चुन लिया गया था। 2005 में उन्हें मिलिशिया प्लटून कमाण्डर की जिम्मेदारी दे दी गई। टीसीओसी के दौरान ओडसापारा में हमला कर एसपीओं को मार गिराने की कार्रवाई में यह कॉमरेड अगले कतार में थे। परिवार की स्थिति ठीक न होने से कॉमरेड मणि मिलिशिया प्लटून से पीछे आकर गांव में कोया भूमकाल मिलिशया में काम करने लगे थे। 8 दिसम्बर 2008 को धरमा गांव पर हमला करने आए पुलिस वालों ने गोट्टुम गांव पर हमला कर कॉमरेड मणि को पकड़कर क्रूर यातनाएं दीं। बाद में गोली मारकर उनकी हत्या की। हालांकि मन्नी नामक एक महिला को भी उन दरिंदों ने गोली मारी थी, पर वह किसी तरह बच गईं। बाद में गांव के लोगों ने एक शोक सभा आयोजित कर कॉमरेड मणि को श्रद्धांजली पेश की और उनके सपनों को साकार बनाने का संकल्प लिया।

कॉमरेड पूनेम लखू

दक्षिण बस्तर डिवीजन के बासागुडेम एलओएस एरिया के चिन्नागेलूर गांव के एक गरीब आदिवासी परिवार में कॉमरेड पूनेम लखू का जन्म हुआ था। 5 अगस्त 2008 को सांप काटने से कॉमरेड लखू शहीद हो गए। उनकी उम्र मात्र 17 वर्ष थी। पहले बाल संगठन में काम करते थे, लेकिन फरवरी 2006 में जब उनके इलाके में पाशविक सलवा जुडूम का दमन अभियान आया तो वहां के सैकड़ों किशोर-नौजवान अपने अस्तिव को बचाने के लिए जनमिलिशिया में कूद पड़े। उन्हीं बहादुरों में से कॉमरेड लखू एक थे, जो दिन-रात का गांव की सैंटरी करते थे।

उनके पिता का देहांत भी सांप काटने से हुआ था। कॉमरेड लखू ने चाहे थोड़े समय ही मिलिशिया में काम किया, लेकिन उनकी छोटी सी जिंदगी बहुत अनुशासनबद्ध थी। वह अपने मिलिशिया में तेजी से विकसित हो रहे थे। उनकी शहादत उनकी मिलिशिया इकाई के लिए बहुत बड़ा नुकसान है। कॉमरेड लखू छोटी सी उम्र से ही दुश्मन आने का समाचार सुनते ही सतर्क हो जाते थे, जो हम सबके लिए सीखने का विषय है। आइए, जनमिलिशिया के इस किशोर वीर योद्धा को श्रद्धाजंली अर्पित करें।

कॉमरेड उयका पाण्डू

सिंगारम गांव दक्षिण बस्तर डिवीजन में चितांवागू नदी के तट पर है। 30 वर्ष पहले उस गांव में कॉमरेड उयका पाण्डू एक आदिवासी परिवार में पैदा हुए थे। संघर्षरत इलाके में पले-बढ़े पाण्डू अपनी माता-पिता की तीसरी संतान थे। वह अपने परिवार के साथ मजदूरी-किसानी कर गुजर-बसर कर रहे थे।

कॉमरेड उयका पाण्डू

गांव के सामंती मुखियाओं के शोषण से उनका परिवार भी पीड़ित था। उनके खिलाफ संघर्ष करते हुए कॉमरेड पाण्डू ने डीएकेएमएस के सदस्य बन जनता को संगठित किया। गांव में 1996 से कॉमरेड पाण्डू संगठन का काम कर रहे थे। 1998 में उनको गांव के डीएकेएमएस का अध्यक्ष चुना गया। कमेटी में रहते हुए कॉमरेड पाण्डू ने तेंदूपत्ता तोड़ाई की मजदूरी बढ़वाने के लिए संघर्ष किया। कॉमरेड पाण्डू हर आर्थिक-राजनीतिक गतिविधि में बढ़-चढ़कर भाग लेते थे और अपने गांव का नेतृत्व करते थे। जेगुरगोंडा में आयोजित छात्रों की रैली-जुलूसों में भी उन्होंने भाग लिया। पार्टी द्वारा मनाये जाने वाले तमाम दिवसों के अवसर पर कॉमरेड पाण्डू मंच पर चढ़कर जनता को संबोधित करते थे। कॉमरेड पाण्डू ने जनता की चेतना को बढ़ाने के लिए भरपूर प्रयास किए।

जेगुरगोंडा के पास गांव मेट्टागुड़ेम से पुलिस के सामने आत्मसमर्पण करने वाले गद्दार देवाल ने उनको दो बार (2002 और 2003 में) गिरफ्तार करवाया, लेकिन कॉमरेड पाण्डू ने कभी भी यातनाओं की परवाह नहीं की।

2007 में जेगुरगोंडा में जब सलवा जुडूम का दमन अभियान पहुंचा तो उन्होंने अपने गांव की जनता को बचाने के लिए पामेड़ इलाके में ले जाकर बसाया। 29 दिसंबर 2008 को कॉमरेड पाण्डू को आंध्र ग्रेहाउंड पुलिस ने मार डाला। जब ग्रेहाउंड हत्यारे आंध्र सीमा पर गश्त कर रहे थे, पाण्डू आंध्र से अपने परिवार के लिए सामान आदि लेकर वापस आ रहे थे। तब यामपुरम गांव के मिलिशिया पर ग्रेहाउंड पुलिस फायरिंग कर रही थी। कॉमरेड पाण्डू भी उस फायरिंग की चपेट में आ गए। वह गंभीर रूप से घायल हो गए थे, तब पुलिस ने उनको पकड़कर नजदीक से गोली मारी। और वह शहीद हो गए।

जनयुद्ध को तेज करके उनकी शहादत का बदला हम जरूर लेंगे। शोषित जनता की मुक्ति के लिए लड़ते हुए पुलिस

की गोली का शिकार हुए कॉमरेड पाण्डू की जिंदगी सदा जनता को प्रेरणा देती रहेगी।

कॉमरेड कुरसम पण्डरू

पश्चिम बस्तर डिवीजन के गंगालुर एरिया के गांव गोरनम में कुरसम आयतू व बंडी के घर में कॉमरेड कुरसम पण्डरू का जन्म हुआ था। 18 फरवरी 2009 को बीजापुर घाटी में जन मिलिशिया व मुख्य बल ने मिलकर एक एंबुश को अंजाम दिया था। वहां पर बुबीट्रैप लगाकर कॉमरेड पण्डरू अपने साथियों के साथ घात लगाकर बैठे हुए थे। बुबीट्रैप पर पांव लगाते ही वहां दो पुलिस वाले मारे गए थे। जब पुलिस वाले लाशों को ले जा रहे थे तब एक अन्य जगह पर बूबीट्रैप की जांच करने के लिए कॉमरेड पंण्डरू पीएलजीए बलों के साथ गए थे। जनमिलिशिया के ऐसा करने की खबर पाकर दुश्मन ने जनमिलिशिया की टीम का घेराव कर लिया और अंधाधुंध फायरिंग की। इस फायरिंग में हमारे प्रिय कॉमरेड पण्डरू दुश्मन की गोली लगने से गिर गए। बाद में पुलिस ने उन्हें पकड़ कर अमानवीय यातनाएं दीं। उनकी लाश के टुकड़े-टुकड़े कर डाले और उनके अंगों को निकाल कर बाहर फेंक दिया। तीन दिनों तक पुलिस उनकी लाश को लेकर एंबुश बैठी रही। कॉमरेड पंण्डरू दुश्मन के साथ आखिर तक बहादुरी से लड़ते हुए जनता के लिए अपने प्राणों को अर्पित कर गए।

कॉमरेड पण्डरू की उम्र शहादत के समय मात्र 20 साल की थी। शुरू से ही वह सलवा जुडूम के बर्बर दमन अभियान को देख रहे थे। कई हत्याकांडों को उन्होंने अपनी आंखों से देखा था, जिस कारण से सलवा जुडूम के गुंडों और सरकार के प्रति उनमें वर्ग विद्वेष कूट-कूट कर भर गया था। अपने बड़े भाई को जनयुद्ध में काम करते हुए देख कर वह भी उसी राह पर चल पड़े थे। जनमिलिशिया में वह भर्ती हो गए। उन्हें जो भी जिम्मेदारी सौंपी जाती उसे वह बहुत प्यार से स्वीकार करते थे। जहां भी कमारेड पण्डरू रहते तो जनता की हिम्मत बढ़ जाती थी। दुश्मन के आने से वह जनता की रक्षा के लिए लड़ने के लिए हमेशा तत्पर रहते थे। जब कॉमरेड पण्डरू की शहादत की खबर जनता में फैली तो अपने बहादुर बेटे की याद में जनता की आंखों से आंसू बह निकले। कॉमरेड पण्डरू को जनता बहुत प्यार करती थी। दुश्मन द्वारा पीछे से किए वार से कॉमरेड पण्डरू हमेशा के लिए विदा हो गए। लेकिन उनके आदर्श सदा जिंदा रहेंगे व नौजवानों को प्रेरणा देते रहेंगे।

कॉमरेड वर्गेश (माड़वी रूपा)

पश्चिम बस्तर के भैरमगढ़ एरिया से दण्डकारण्य के क्रांतिकारी आंदोलन में बहुत सारे नौजवान भर्ती हुए हैं, उन्हीं नौजवानों में से एक थे हमारे प्रिय कॉमरेड माड़वी रूपा। 26 साल के कॉमरेड रूपा का जन्म गांव ऊरेपाल में हुआ था। बैलाडिला खदानों के नीचे उनका गांव पड़ता है। बैलाडिला पहाड़ से नीचे उतरते हुए प्राकृतिक रूप से कई मनोरम जलप्रपात उस इलाके में गिरते हैं। झरनों की अवाजों के साथ आवाज मिलाते हुए, क्रांतिकारी गीत गुनगुनाते हुए कॉमरेड वर्गेश का बचपन बीता। वह बचपन में ही गाय चराते हुए पहाड़ों में गाते हुए स्वप्न देखते थे कि मेरी यह आवाज जब मैं क्रांतिकारी बन जाउंगा तो एक दिन जनता के दिलों में गूंजेगी।

बाल संगठन में वह सदस्य बने, उसके बाद दण्डकारण्य आदिवासी किसान मजदूर संगठन में वह सदस्य बने। 1997-98 में फासीवादी महेंद्र कर्मा के नेतृत्व में मिरतुल व भैरमगढ़ एरिया में जनजागरण अभियान नाम से घोर पाशविक जन दमन अभियान चला था। इस जनदमन अभियान में इन इलाकों के कई गांवों को 'जनजागरण' के गुंडों ने तहस-नहस कर दिया था। जप्पुर, अलवूर, तिम्मेनार, ऊरेपाल, कोंडम, हरियाल, पेद्म आदि गांवों में मिरतुल के मुखियाओं के नेतृत्व में हमले किये गए थे। घरों को जला दिया गया, जनसंगठन के सदस्यों को पकड़ कर मारा-पीटा गया और कई महिलाओं के साथ सामूहिक अत्याचार किए गए थे। इन हमलों के जवाब में मिरतुल में 'जनजागरण' के फासीवादी नेताओं के घरों पर पार्टी के नेतृत्व में पांच हजार से ज्यादा जनता ने मिलकर हमले किए थे। उसमें कॉमरेड रूपा ने भाग लिया था। उसके बाद 'जनजागरण' के एक नेता भोगामी मोरका का सफाया किया गया, उसमें भी उन्होंने भाग लिया। वह गांव के सामंती मुखियाओं के खिलाफ कई जन संघर्षों में आगे रहकर लड़े। तेंदुपत्ता तोड़ाई की मजदूरी बढ़ाने की मांग के लिए लड़ी लड़ाइयों में उन्होंने जनता को गोलबंद किया।

घर में उनके बड़े भाई भी किसान संगठन में काम करते थे, इसलिए जन संघर्षों में भाग लेने के लिए घर से ही प्रोत्साहन मिलता था। कम उम्र में ही उनकी शादी हो गई थी लेकिन दस्ते में भर्ती होने के लिए वह हमेशा बेताब रहते थे। मार्च 2002 में भैरमगढ़ एरिया के स्थानीय गुरिल्ला दस्ते में वह भर्ती हो गए थे।

भैरमगढ़ एलजीएस में कॉमरेड वर्गेश - दस्ते में भर्ती होने के बाद कॉमरेड रूपा ने अपना नाम बदलकर वर्गेश रख लिया था। वे छापामार जीवन के अनुशासन को कड़ाई के साथ पालन करते थे। उन्होंने जल्दी ही जरूरतों को समझते हुए पढ़ाई-लिखाई सीख ली थी। छापामर युद्ध की नीतियों को समझने के लिए उन्होंने शुरू से ही ध्यान देना शुरू किया। सैनिक प्रशिक्षण व युद्ध अभ्यासों में वे आगे रहते थे।

एलजीएस में भर्ती होने के बाद दिसंबर 2003 में पीएलजीए सप्ताह के दौरान गंगालुर-बीजापुर मार्ग पर कीकीलेर के पास किए हमले में वे शामिल हुए। वहां पर दो सीआरपीएफ के जवान घायल हुए थे। 2003 में ही पलेवाया और जांगला के पास पुलिस पर किए हमलों में उन्होंने भाग लिया।

2004 के दौरान कॉमरेड वर्गेश गंभीर रूप से बीमार पड़ गए थे। बीमारी से उनका शरीर कमजोर हो गया था लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी थी। छापामार युद्ध को ओर आगे ले

जाने के सपने वे हमेशा अपने दिल में रखते थे। 2004 में पोंजेर नाला के पास बूबीट्रैप रखकर पुलिस को घायल करने में वह शामिल थे।

2005 में जगदलपुर-भोपालपटनम राष्ट्रीय राजमार्ग-16 पर कर्रेमरका के पास पुलिस वैन को बारूदी सुरंग से उड़ा दिया गया था। इस एंबुश में पांच सीआरपीएफ के आतंकी मारे गए थे और कुछ घायल हुए थे। इस हमले में उन्होंने सक्रियता के साथ भाग लिया था।

कंपनी-2 में कॉमरेड वर्गेश - पश्चिम बस्तर में 2005 जून से बर्बर फासीवादी सलवा जुडूम अभियान शुरू हुआ था, जिसने जनता के जीवन को हिला कर रख दिया था। लेकिन उस दमन को हराने के लिए वह दृढ़ता के साथ आंदोलन में डटे रहे। सलवा जुडूम को हराने के लिए पीएलजीए द्वारा किए गए कई शानदार हमलों में उन्होंने भाग लिया, जिसमें पोंदुम, बोदली, तारूम, धारम आदि शामिल हैं। कई सलवा जुडूम के नेताओं का सफाया करने में भी उन्होंने सक्रियता के साथ अपनी जिम्मेदारी निभाई।

सितंबर 2005 में भैरमगढ़ एलजीएस से बदिली होकर वह कंपनी-2 के लाल सैनिक बने। उसी समय पार्टी सदस्य भी बने। कंपनी-2 में रहते हुए उन्होंने कई सैनिक हमलों में भाग लिया। 2006 फरवरी में भांसी-बचेली के बीच नरेली के पास किए गए हमले में वह शामिल रहे। उसके बाद अप्रैल 2006 में दिनदहाड़े मुरकीनार पुलिस चौकी पर हमला किया गया था। इस हमले में ऊपर के संतरी को मार गिराने की जिम्मेदारी उन्होंने संभाली और उस जिम्मेदारी को बखूबी पूरा भी किया।

रोड टीम में कॉमरेड वर्गेश - मई 2006 में कॉमरेड वर्गेश को पार्टी ने पीपीसी स्तर पर पदोन्नत किया। रोड पर हमले करने के लिए गठित छापामार टीम के वह अहम सदस्य रहे, जिसमें उन्होंने जून 2007 तक काम किया। इस दौरान उन्होंने जनविरोधी सलवा जुडूम के नेता महेंद्र कर्मा के काफिले पर बारूदी सुरंग का विस्फोट किया। हालांकि उसमें महेंद्र कर्मा तो बच गया, लेकिन उसकी सुरक्षा में लगे एक पुलिस वाले की मौत हो गई थी और 4 पुलिस वाले घायल हुए थे।

साहसिक छापामार योद्धा कॉमरेड वर्गेश - 2007 में जन पीतुरी सप्ताह को सफल बनाने के लिए उनको किरंदुल में दुश्मन के ठिकानों की रेक्की करने की जिम्मेदारी प्रदान की गई थी। तब 4 जून 2007 को वह पुलिस के हाथों पकड़े गए और गिरफ्तार हो गए। थाने में उन्हें भयंकर यातनाओं का सामना करना पड़ा। पुलिस ने यातनाओं के सारे हथकंडे उन पर आजामाए लेकिन पुलिस उनसे एक भी पार्टी के रहस्य को नहीं उगलवा पाई। बाद में उनको दंतेवाड़ा जेल भेज दिया गया। जेल में भी उन्होंने क्रांतिकारी कार्यों को जारी रखा। जेल बंदियों की राजनीतिक चेतना बढ़ाने और उनको संगठित करने के लिए जेल में उन्होंने संघर्ष किया। ऐतिहासिक दंतेवाड़ा जेलब्रेक से हम सभी अवगत हैं, जो 16 दिसंबर 2007 को हुआ था। उस जेलब्रेक की योजना बनाने से लेकर उसे अंजाम देने तक में कॉमरेड वर्गेश ने अपनी भूमिका बखूबी निभाई। गुप्त रूप से सभी बंदियों को संगठित किया। जेल की मुख्य संतरी पर तैनात पुलिस बलों को खत्म करने वाली नेतृत्वकारी टीम में उनके योगदान को कभी नहीं भुलाया जा सकेगा। उन्होंने इस कार्रवाई में बेहद साहसिक और सराहनीय भूमिका निभाई। पुलिस वालों का सफाया कर उनकी रायफलों पर कब्जा कर लिया और सभी बंदियों के भागने का रास्ता साफ किया। जिस तरह से कई महीनों पहले इस जेल ब्रेक की तैयारियां की गईं और अंजाम दिया गया वह एक अनोखी घटना है। दंतेवाड़ा जिला मुख्यालय में ऐसी घटना होने से छग सरकार समेत केंद्र सरकार के होश उड़ गए थे और देश के तमाम बंदियों के दिलों में जोश आया था।

जेल तोड़कर जब वह अपने पुराने साथियों से मिले तो उनकी आंखों में खुशी के आंसू साफ देखे जा सकते थे। वह बहुत ही भावनात्मक क्षण था। कितने ही बंदी इस घटना के बाद वर्षों बाद अपने परिजनों और दोस्तों से मिले थे। कॉमरेड वर्गेश एक बहादुर कॉमरेड थे। उनके अंदर घमंड कभी किसी ने नहीं देखा। सभी कॉमरेडों के साथ वह सम्मानजनक व्यवहार करते थे। वह एक सीधा-सादा व ईमानदार व्यक्तित्व वाले आदर्श छापामार थे।

जेल ब्रेक के बाद उनकी छापामार जिंदगी का दूसरा चरण शुरू हुआ था। मई 2008 में नवगठित रीजनल कंपनी-2 में सेक्शन कमांडर के रूप में उन्होंने काम करना शुरू किया। उन्होंने अब अपना नाम बदल कर कीर्ति रख लिया था। सेक्शन कमांडर के रूप में उन्होंने अपने पूरे प्लाटून का राजनीतिक व सैनिक विकास करने पर ध्यान दिया। वह लगातार छापामार युद्ध कौशल को सीखने के लिए तत्पर रहते थे।

12 अप्रैल 2009 को ओडिशा के कोरापुट जिले के दामनजोड़ी में स्थित भारत सरकार के उपक्रम नाल्को की बाक्साइट खदान के बारूद डिपो पर पीएलजीए ने रेड की। इस हमले में 11 दुश्मन के बल मारे गए थे और 8 जख्मी हुए थे। इस जबरदस्त हमले में कॉमरेड कीर्ति संतरी पोस्ट को ध्वस्त करने वाली असल्ट टीम का सदस्य थे। जब वह अपनी जिम्मेदारी को निभा रहे थे और संतरी की तरफ बढ़ रहे थे तो दुश्मन की गोली लगने से शहीद हो गए। इस हमले में कॉमरेड कीर्ति के साथ कॉमरेड राजू, कॉमरेड रघु और कॉमरेड सुखराम ने भी वीरगति को प्राप्त किया। इस हमले में पीएलजीए 11 आधुनिक राइफलें और ढाई टन बारूद जप्त करने में कामयाब हुई। छापामार युद्ध को और तीव्र करने के लिए इन तमाम साथियों ने अपने प्राणों की बाजी लगा दी। युवा अवस्था में ही उन्होंने अपने जीवन को भारत की नवजनवादी क्रांति की बलिवेदी पर अपने प्राणों को अर्पित कर दिया। इन शहीदों के सपनों को साकर करने के लिए हजारों-हजार युवक-युवितयां

जनयुद्ध में कूद पड़ेंगे और छापामार युद्ध को चलायमान युद्ध में विकसित करेंगे।

वेच्चम शहीदों को लाल सलाम!

कॉमरेड सोमली

पश्चिम बस्तर डिवीजन के भैरमगढ़ इलाके के मिरतुल दस्ते में 2006 में वह भर्ती हुई थीं। बचपन से ही वह दस्ते के प्रति आर्किषत थीं। जब भी दस्ता गांव में आता था तो वह भागी आती थीं। कितना भी दूर होने से लाल सलाम करने के लिए वह जरूर आती थीं। महिलाओं की समस्याओं को देखकर वह बहुत सोचती थीं। आगे रहकर महिलाओं को इक्ट्ठा करती व मीटिंगों के संदेशे देती थीं। कॉमरेड सोमली आज हमारे बीच नहीं हैं, वह दुश्मन के हाथों धोखे से पड़कर हत्या कर दी गई।

उनके माता-पिता पहले दुग्गाल गांव में रहते थे। लेकिन वहां पर कृषि के लिए जमीन न होने के कारण उन्होंने तिम्मेनार को अपना नया ठिकाना बनाया। सोमली का जन्म भी इसी गांव में हुआ था। 2003-04 में उन्होंने आदिवासी बाल संगठन में काम किया। 2005 में जब सलवा जुडूम फासीवादी दमन अभियान शुरू हुआ, तब भी वह संघर्ष में दृढ़ता के साथ डटी रहीं। दुश्मन के बर्बर हमलों को देख वह जनमिलिशिया दल में शामिल हो गई थीं। जब वह जनमिलिशिया में काम कर रही थीं तब अपने पसंद के एक कॉमरेड से उन्होंने शादी कर ली थी। बाद में दोनों ही कॉमरेड पीएलजीए में पूर्णकालीन रूप से शामिल हो गए। मिरतुल दल के सदस्य बन गए। उनके कामकाज व अनुभव को देखते हुए उन्हें माटवाड़ा जन मिलिशया दल में जिम्मेदारी देकर भेजा गया। जिन गांवों में जुडूम दमन के कारण दस्ता नहीं जा पाता था वहां पर वह जनता के पास जाती और अच्छे से समझाती थीं। युवक-युवतियों को पार्टी में भर्ती होने के लिए प्रोत्साहित करती थीं।

कॉमरेड सोमली के कामकाज को ध्यान में रखते हुए पार्टी ने उन्हें भैरमगढ़ एरिया सप्लाई टीम में बदली किया। कितनी भी मुश्किलें आने से वह बिना आगे-पीछे हुए काम करती थीं। किसी भी काम में होती वह सदा हंसती-मुस्कराती रहती थीं। वह सभी से प्यार से बातें करती थीं। जनता के साथ उनका व्यवहार बहुत प्रेमपूर्वक रहता था। जो भी लोग उनको जानते थे, उसके बारे में हमेशा दस्ते के सदस्यों से पूछते थे। उनके घर वाले उनकी शहादत से सहमे नहीं है, उलटा वर्ग विद्वेष से जनमिलिशिया में भर्ती हो रहे हैं। साथ की सहेलियां और बहनें केएएमएस में भर्ती हो रही हैं ताकि उनके सपनों को पूरा किया जा सके।

कॉमरेड सोमली तारूम घटना में भी शामिल थीं। तीन-चार जगहों पर फायरिंग में उन्होंने अपना जौहर दिखाया। दुश्मन का नाम सुनते ही कहती थीं - 'चलो कॉमरेड फायरिंग करके आते हैं।' 2009 जुलाई में डिवीजनल कमेटी ने आने वाले तीव्र दमन का मुकाबला करने के लिए पार्टी सदस्यों का आह्वान दिया। एक काम पर वह सादे भेष में पार्टी के काम पर जा रही थीं कि अचानक आगे से पुलिस वाले आ गए और उन पर फायरिंग की। कॉमरेड सोमली ने भागने की पूरी कोशिश की लेकिन वह उन हत्यारों के हत्थे चढ़ गईं। कितनी भी यातनाएं देने से भी उन्होंने पार्टी की गोपनीयता को बनाए रखा। अकथनीय अत्याचार कर उनकी लाश को पुलिस वालों ने नदी में फेंक दिया।

आइये, उनकी शहादत के मकसद को पूरा करने के लिए जनयुद्ध को और तीव्र करें, उनके दृढ़ संकल्प को ऊंचा उठाए रखें।

कॉमरेड सागर

वेच्चापाल गांव में जन्मे कॉमरेड सागर बचपन से ही क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल रहे हैं। वह अपने माता-पिता की दूसरी संतान थे। उनके एक बड़े भाई हैं और एक छोटे भाई थे जिसकी हत्या सलवा जुडूम के गुंडों ने पाशविक ढंग से कर दी थी।

कॉमरेड सागर 2006 से ग्राम पार्टी कमेटी के सदस्य के रूप में काम कर रहे थे। गांव में कभी भी दुश्मन आने से वह गांव वालों के साथ मुकाबला करने के लिए हमेशा तैयार रहते थे। अपने पारंपरिक हथियारों के साथ ही वह दुश्मन को हैरान-परेशान करते थे। जनमिलिशिया मौके पर नहीं होने पर भी वह हमेशा आगे रहते थे। उनके द्वारा लगाए गए एक फंदे में फंसकर एक पुलिस वाला घायल भी हो गया था।

कॉमरेड सागर तीन बच्चों के पिता थे। गरीब परिवार में जन्मे कॉमरेड सागर बहुत ईमानदारी व आत्मविश्वास के साथ पार्टी के कामकाज करते थे।

उनके गांव पर 2005 से लेकर अब तक दुश्मन के हमले लगातार जारी हैं। इन हमलों का प्रतिरोध करने के लिए जनमिलिशिया व गांव वाले पीएलजीए के नेतृत्व में 9 सितंबर 2009 को दुश्मन पर हमला करने के लिए गए थे। उस फायरिंग में कॉमरेड सागर भी शामिल हुए। जब हमला कर रिट्रीट हो रहे थे तो दुश्मन ने मोर्टार का शेल (गोला) दागा। गोले की चपेट में हमारे प्यारे कॉमरेड सागर आ गए और शहीद हो गए। कॉमरेड सागर के शव को पीएलजीए लेकर आई और क्रांतिकारी परंपरा के साथ उनका अंतिम संस्कार किया गया। जनता के इस बहादुर सपूत को लाल-लाल सलाम।

कॉमरेड ताती लखमू

कॉमरेड ताती लखमू एटेपाड़ गांव के कोया भूमकाल मिलिशिया के डिप्यूटी कमांडर थे। उससे पहले वह दण्डकारण्य आदिवासी किसान मजदूर संगठन के कार्यकता थे। सलवा जुडूम

शुरू होने के बाद गठित कोया भूमकाल मिलिशिया में शुरू से लेकर अपनी शहादत तक वह काम करते रहे। वह सभी सदस्यों के साथ मिलजुल कर रहते थे। दुश्मन किसी भी गांव में आने से वह हमेशा अपने कोया मिलिशिया दल के साथ मुकाबला करने के लिए तैयार रहते थे और पहलकदमी दिखाते थे। कॉमरेड लखमू अचानक दुश्मन के हाथों पड़ गए। उन्होंने एक भी बात पुलिस को नहीं बताई। बाद में उनके छोटे से बेटे को भी पुलिसिया दरिंदों ने मार डाला। कॉमरेड लखमू व उनके बेटे की शहादत को जनता बेकार नहीं जाने देगी। उनकी शहादत का बदला जरूर लेगी।

कॉमरेड पांडू कीर्ति

41 वर्षीय कॉमरेड पांडू कीर्ति पश्चिम बस्तर डिवीजन, जिला बीजापुर के गंगालूर एरिया के गांव पुम्बाड़ में एक गरीब आदिवासी परिवार में पैदा हुए थे। कॉमरेड पांडू 1994-95 में डीएकेएमएस कमेटी के सदस्य बने थे। तब उनके गांव में दस्ता कम ही जाता था। उन्होंने खुद ही गांव की जनता को राजनीतिक रूप से सचेतन करते हुए लुटेरी सरकार के खिलाफ संगठित किया। शोषक सरकार के दलाल गांव के कबीलाई मुखियाओं को जन अदालत में घसीट कर उनके जोर जुल्म के खिलाफ जनता के मतानुसार फैसले किये। और उनके जुल्मों पर रोक लगाई।

1995-96 में वह काम से बीजापुर गए थे, तब किसी मुखबिर की सूचना पर उनको गिरफ्तार कर लिया गया था। उनसे पूछताछ की गई, लेकिन उन्होंने कुछ भी बोलने से इनकार किया। उसके बाद उनको घोर यातनाएं दी गईं, लेकिन उनके मुंह से एक बात भी दरींदे पुलिस वाले नहीं निकलवा पाए। दुश्मन उनको झुका नहीं पाया। इसे देख एसपी ने नक्सली कमांडर होने का आरोप लगाकर एनकाउंटर करना चाहा। यह बात कॉमरेड पांडू ने एसपी को फोन पर करते हुए सुन ली। कॉमरेड पांडू ने वहां से भागने का इरादा बना लिया। कैसे भी यहां तो बच नहीं पाउंगा, मरना भी होगा तो पुलिस के हाथों तो नहीं मरूंगा। उन्होंने रात के 12 बजे सेंटरी पर तैनात पुलिस वाले को गच्चा दे दिया। उन्होंने शौच जाने का बहाना बनाया। इस तरह वह बाहर निकलने में सफल हुए। कांटेदार तारों को धीरे-धीरे पार कर उन्होंने जितना दम था उसे पूरी तेजी के साथ भागने में लगा दिया। जब वह काफी दूर निकल गए तो पुलिस ने फायरिंग करनी चालू कर दी और जीप दौड़ाकर पीछा किया। लेकिन कॉमरेड पांडू उनके हत्थे नहीं चढ़े। उसके बाद गांव में आकर पुलिस ने उनके घर पर हमला किया, लेकिन कॉमरेड पांडू वहां से भी पुलिस को चकमा देकर भाग निकले। इस तरह पुलिस ने कॉमरेड पांडू के घर 5-6 बार हमला किया, लेकिन कॉमरेड पांडू को वो नहीं पकड़ पाई। बार-बार हमलों से घर में रहने की परिस्थितियां नहीं रहीं। उसके बाद उन्होंने घर-बार त्याग कर बतौर पेशेवर क्रांतिकारी जनता के लिए काम करने का बीड़ा उठाया। और रेंज कमेटी के सदस्य की जिम्मेदारी संभाली।

इसी दौरान कॉमरेड पांडू को 5-6 कॉमरेडों की टीम के साथ एक काम की जिम्मेदारी दी गई। वह काम था जन विरोधी व दमनकारी गंगालूर थानेदार का सफाया करना। कॉमरेड पांडू के नेतृत्व में उस एक्शन टीम ने थानेदार के घर पर हमला किया। जब थानेदार यह कहते हुए बाहर निकला कि 'कौन है बे' - तो कॉमरेड पांडू ने अपनी भरमार से सीधा निशाना उस पर साधा। घोड़ा दबाया लेकिन भरमार ने काम नहीं किया। कॉमरेड पांडू ने एक अच्छे गुरिल्ला दिमाग का परिचय देते हुए तुरंत अपने कुल्हाड़े के साथ थानेदार पर वार किया, लेकिन कुल्हाड़े का डंडा टूट गया। उसके बाद उन्होंने अपने छोटे चाकू के साथ ही थानेदार पर वार जारी रखे। थानेदार को मरता देख बाकी साथ वाले कॉमरेड भाग गए थे, लेकिन कॉमरेड पांडू डटकर वहां लड़ते रहे। इसमें थानेदार गंभीर रूप से घायल हुआ था।

1996-97 में 'जनजागरण' अभियान नाम से पाशविक दमन चला था। तब उस अभियान में शामिल गुंडों पर, नेताओं पर हमले करने में कॉमरेड पांडू ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया था। मोरका का नेता जनविरोधी सन्नू के घर पर हमला, पेटाम, बोदिली, पिंडुम, मिरतुल, परस मोदुल आदि गांवों में जनविरोधी गुंडे नेताओं पर हमले करने, उनकी संपत्ति जब्त करने में जनता के साथ वह भी शामिल रहे। 1999 में कॉमरेड पांडू को पार्टी सदस्यता प्रदान की गई। लगभग तीन सालों तक काम करने के बाद वे घर वापस चले गए। लेकिन पार्टी के समर्थक के तौर पर अच्छे से काम करते रहे। इसके दो साल बाद गांव की जनता ने उन्हें भूमकाल मिलिशिया कमांडर चुन लिया। कॉमरेड पांडू ने बिना हिचकिचाहट के इस जिम्मेदारी को स्वीकार किया। कॉमरेड पांडू भूमकाल मिलिशिया कमांडर रहते हुए सलवा जुडूमी गुंडों पर हमले करने के लिए योजना बनाकर अपने दल को हमेशा तैयार रखते थे। गंगालूर के पास सलवा जुडूमी गुंडों को जब भगा-भगाकर खत्म किया गया तो उस हमले में भी कॉमरेड पांडू शामिल थे। बैलाडिला बारूद डिपो पर हुए हमले में, एस्सार कम्पनी को निशाना बनाकर किए गए हमलों में भी कॉमरेड पांडू ने भाग लिया।

21 अप्रैल 2007 को कॉमरेड पांडू और कॉमरेड सन्नू पार्टी के काम से गए हुए थे। मुखबिर की सुचना पर वे पकड़े गए। पूरे दिन उनको भयंकर यातनाएं दी गईं लेकिन कॉमरेड पांडू ने अपनी जुबान पर टीके रहे और दुश्मन को कुछ नहीं बताया। 22 अप्रैल को कॉमरेड पांडू और सन्नू को हत्यारे पुलिस वालों ने मार डाला।

गिरफ्तार होने से पहले दोनों ही कॉमरेड गांव की जनता से

जुबान देते थे कि हम गिरफ्तार होने पर भी दुश्मन के सामने मुंह नहीं खोलेंगे। वे अपनी जुबान के पक्के निकले। कॉमरेड पांडू सदा अमर रहेंगे। लाल सलाम कॉमरेड पांडू!

कॉमरेड पूनेम सन्नू

25 वर्षीय कॉमरेड सन्नू का जन्म कावड़ गांव में हुआ था। पश्चिम बस्तर के गंगलूर एरिया में ये गांव आता है। वे एक गरीब आदिवासी परिवार में पले-बढ़े थे। अपने मां-बाप की वे पहली संतान थे। जब वे बाल संगठन में काम करते थे तभी से वे बच्चों को जमाकर उनके साथ गीत, नृत्य सीखते थे। दस्ते के गांव आने की खबर जब उनको मिलती तभी वे दौड़कर 'लाल सलाम' करने के लिए आते थे। दस्ते के लिए दाल-चावल जमा करके पहुंचाते थे। अपने गांव के सभी बच्चों में कॉमरेड सन्नू ही सबसे आगे रहकर काम करने वाले कॉमरेड थे। उनके मां-बाप ने उनकी शादी बचपन में ही कर दी थी लेकिन बड़े होकर उन्होंने उसे ठुकरा दिया। 2005 में सलवा जुडूम शुरू हुआ तो कॉमरेड सन्नू जनता को संगठित करने निकल पड़े। सलवा जुडूमी गुण्डों का मुकाबला करने, जनता की व उनकी फसलों की रक्षा करने के लिए भूमकाल मिलिशिया के साथ दिन-रात संतरी पर तैनात रहते थे। जनता द्वारा किये जा रहे उत्पादन में भी बढ़-चढ़ कर भाग लेते थे। सलवा जुडूम के समय जनता की संपत्ति की रक्षा करने के कामों में भी कॉमरेड सन्नू ने भाग लिया।

आतंकी व आताताई सीआरपीएफ, नगा, मिजो, एसपीओ व पुलिस के खिलाफ कॉमरेड सन्नू में गुस्सा कूट-कूट कर भरा हुआ था। दुश्मन के प्रतिरोध में जन मिलिशिया के साथ अपना तीर-धनुष लेकर यह कॉमरेड कई घटनाओं में शामिल रहे। सितंबर 2005 में जब नगा आतंकी बैलाडिला की तलहटी के गांवों को आग लगाकर, उनकी संपत्ति को लूट कर ले जा रहे थे तो कॉमरेड सन्नू ने अपने जन मिलिशिया कॉमरेडों के साथ पहाड़ी पर चढ़कर बड़े-बड़े पत्थरों को आतंकियों पर लुढ़काना शुरू कर दिया। इससे घबराकर उन 'बहादुरों' ने हजारों गोलियां चलाईं और हड़बड़ा कर भाग गए। साथ में ले जा रहे सामान को भी वे वहीं छोड़ कर भागे थे। उसके बाद जन मिलिशिया कॉमरेडों ने उस सामान को वापस लेकर जनता को सौंप दिया।

2005 जुलाई में कॉमरेड सन्नू सलवा जुडूमी गुण्डों के हाथों में फंस गए थे। उन गुण्डों और नगा आतंकियों ने उनकी जमकर पिटाई की थी, लेकिन कॉमरेड सन्नू ने वहां बहादुरी का परिचय देते हुए कुछ नहीं बताया। उन्हें वांगुड़ थाना में रखा गया था। उसके बाद कॉमरेड सन्नू ने सोचा कि जिऊं या मरूं यहां से भागना ही है। वहां पर दूसरे लोगों को भी कॉमरेड सन्नू ने भागने के लिए तैयार किया। आखिर में वहां से वह भागने में सफल हुए। आते-आते कुछ कॉमरेड बीमार हो गए थे, तो उनको भी कॉमरेड सन्नू ने कंधे पर ढो कर लाया।

बैलाडिला बारूद गोदाम पर हुए हमले में उन्होंने अपने सेक्शन के साथ बहादुरी के साथ भाग लिया। बारूद गोदाम में घुसकर, उसे बांटकर, कावड़ में डाल कंधों पर ढो कर लाने में कॉमरेड सन्नू आगे-पीछे नहीं हुए। इस हमले के बाद कॉमरेड सन्नू ने आकश नगर में दलाल पुंजीपति एस्सार कम्पनी को निशाना बनाकर की कार्रवाई में भी भाग लिया।

21 अप्रैल को कॉमरेड पांडू के साथ सन्नू भी काम पर गए हुए थे। उन दोनों को पकड़कर यातनाएं देकर पुलिस ने 22 अप्रैल 2007 को मार डाला। कॉमरेड सन्नू ने आखिर तक पार्टी की गोपनीयता की रक्षा की और एक जनयोद्धा की तरह जान दी। लाल सलाम कॉमरेड सन्नू को।

कॉमरेड माड़वी कोसा

बीजापुर जिला के पामेड़ एरिया के गांव मुरकोम में एक आदिवासी परिवार में जन्म लिए थे कॉमरेड माड़वी कोसा। उनके

चार भाई और तीन बहनें हैं। उनकी मां जीवित हैं जबकि उनके पिता बीमार होकर गुजर चुके हैं। कोसा अपने मामा की लड़की से शादी कर अपने जीवन की गाड़ी को चला रहे थे। उनकी दो छोटी बच्चियां हैं। कोसा ने बचपन में बाल संगठन में काम किया था। जब वह बड़े हुए ते चेतना नाट्य मंच में रहते हुए अपने गीत व नृत्यों से जनता में क्रांतिकारी जोश जगाते थे। जनता की चेतना बढ़ाने के मामले में उनकी आरपीसी में कॉमरेड कोसा बहुत मशहूर हुए। जनता की समस्याओं को सुलझाने में कॉमरेड कोसा ने अच्छी भूमिका निभाई। जब उनकी आरपीसी ने कॉमरेड कोसा का तबादला जन मिलिशिया में करने का निर्णय लिया तो उस फैसले को उन्होंने तहेदिल से स्वीकार किया। उसके बाद कॉमरेड कोसा जन मिलिशिया पलटन में सदस्य रहकर जनता की रक्षा में जुट गए थे।

कॉमरेड कोसा की चेतना को देखते हुए 2005 में जन मिलिशिया पलटन में उन्हें सेक्शन उप-कमांडर की जिम्मेदारी प्रदान की गई। अपने सेक्शन को उन्होंने अनुशासित ढंग से चलाया। एरिया में हमला करने आने वाले दुश्मनों का प्रतिरोध करने के लिए अपने सेक्शन को लेकर वे सदा तैयार रहते थे। 2006 में जब पीएलजीए ने बासागुड़ा सलवा जुडूम शिविर के गुंडों पर हमला किया तो उसमें कॉमरेड कोसा ने अपनी जिम्मेदारी को दृढ़ता पूर्वक निभाया। गुंडों को सजा देने में वह आगे रहते थे। 2006 नवंबर में गगनपल्ली गांव में तालपेरू नदी की तरफ गश्त पर आई पुलिसिया गुंडों की टुकड़ी पर माइन लगाकर उन्होंने हमला किया था। उस घटना में एक सीआरपीएफ का आतंकी बुरी तरह जख्मी हुआ था। इस कार्रवाई का कॉमरेड कोसा ने ही नेतृत्व किया था। 5 जून 2007 को कोंडापल्ली गांव

पर जब सलवा जुडूम के गुंडों और पुलिस ने आकर जलाना शुरू किया, तो कॉमरेड कोसा ने अपने सेक्शन को लेकर दुश्मन पर बम विस्फोट कर उसे रोक दिया। दुश्मन के साथ लड़ने की हिम्मत कॉमरेड कोसा में बहुत थी। कॉमरेड कोसा को पामेड़ एरिया कमेटी सदस्य बनाने का प्रस्ताव जुलाई 2007 में हुआ था। उन्होंने इस जिम्मेदारी को अच्छे से निभाया। गांव में होने वाले झगड़ों को सुलझाने में वे वर्ग दृष्टिकोण से काम लेते थे। जून 2008 में उन्हें सेक्शन कमांडर बनया गया।

16 जनवरी 2009 को मलेरिया और उल्टी-दस्त के कारण कॉमरेड कोसा शहीद हो गए। कॉमरेड कोसा की शहादत से उनकी आरपीसी, जन संगठनों और जन मिलिशिया को बहुत बड़ा नुकसान हुआ है। कॉमरेड कोसा जब गंभीर रूप से बीमार थे तब भी वे अपने परिवार वालों और जनमिलिशिया सदस्यों की हिम्मत बंधा रहे थे। जब उनकी बीमारी की खबर आरपीसी डाक्टरों को मिली तो तुरंत इलाज के लिए आए। लेकिन वे उनको बचाने में असफल रहे। कॉमरेड कोसा की चेतना, आदर्श सभी जन मिलिशिया कॉमरेडों के लिए प्रेरणा का स्रोत रहेंगे। उनकी आरपीसी ने कॉमरेड कोसा को लाल झंडे का कफन ओढ़ा कर आदिवासी रीति-रिवाजों से अंतिम संस्कार किया। इसमें आसपास के रिश्ते-नातेदारों और तमाम जनता ने भाग लिया।

कॉमरेड माड़वी उंगाल

20 वर्ष के कॉमरेड माड़वी उंगाल ने पुराने कोर्रा गांव में जन्म लिया था। जमीन के लिए उनका परिवार पामेड़ एरिया के गुंडम गांव में जीवनयापन करने के लिए आया था। उनके पिता की शहादत 2008 में तब हुई थी जब वह पुलिस के आने की खबर पाकर जंगल में छुपने के लिए झाड़ियों में घुस रहे थे। वहां पर उन्हें जहरीले सांप ने काट लिया था। उनकी तीन बहनें और एक भाई हैं।

कॉमरेड उंगाल ने बासागुडेम आश्रम स्कूल में सातवीं कक्षा तक पढ़ाई की थी। पारिवारिक समस्याओं के चलते उन्हें अपनी पढ़ाई को बीच में छोड़ना पड़ा। उसके बाद वह गांव में किसानी करते हुए 2007 जुलाई में डीएकेएमएस के सदस्य बन गए। गांव की जनताना सरकार में आर्थिक विभाग का कामकाज देखने लगे। कॉमरेड उंगाल 24 अक्टूबर 2009 को शहीद हो गए। पुलिस गांव में हमला करने आ रही है, यह खबर उन्होंने जब सुनी तो पुलिस कहां तक आई है यह देखने के लिए जा रहे थे। बीच में पुलिस ने छुपकर उन पर फयरिंग की जिससे वे वहीं शहीद हो गए। उनकी लाश को पुलिस दरिंदे उठाकर बीजापुर ले गए। उनकी लाश को लेने के लिए बीजापुर में तीन गांव की जनता ने प्रदर्शन किया, लेकिन उनकी लाश को देने की बजाए पुलिस वालों ने जला डाला।

जनता की राजसत्ता के लिए अपनी जान देने वाले कॉमरेड उंगाल को जनता कभी नहीं भूलेगी। कॉमरेड उंगाल सदा अमर रहेंगे।

बूढ़ी मां सोड़ी गंगी

साठ वर्षीय बूढ़ी मां सोड़ी गंगी पुजारी कांकेर में जन्मी थीं। उनकी शादी हुई थी पुराने मुरकुम गांव में। उनकी दो बेटियां और एक बेटा हैं। गंगी आंगनवाड़ी केंद्र में सहायक के रूप में काम करती थीं। 25 अक्टूबर 2009 को वे धान की कटाई करके अपने बैलों को खोलने जा रही थीं कि अचानक पुलिस वालों पर उनकी नजर पड़ गई। उन आतंकियों को देखकर वे छुप गई थीं। तब गुंजर गांव के उंगाल को पुलिस वाले उसके हाथ बांध कर ले जा रहे थे। उंगाल की नजर बूढ़ी मां पर पड़ गई, वह सहायता की आशा से उसी तरफ भागने लगा। उसके बाद पुलिस वाले दोनों को पकड़ कर ले गए। पहले पुलिस वालों ने उंगाल को मार डाला और उसके बाद बूढ़ी मां की उम्र की भी इज्जत न करते हुए उन्हें न केवल मानसिक यातनाएं दीं, बल्कि उन वहशियों ने उनके साथ बलात्कार भी किया। अंत में बंदूक के कुंदों व संगीनों से गोदकर उनकी हत्या कर दी।

पाशविक तरीकों से निर्दोष जनता की हत्या करने वाले पुलिस, सीआरपीएफ व एसपीओ गुंडों को जनता कभी माफ नहीं करेगी। हम बूढ़ी मां गंगी को नम आखों से श्रद्धांजली पेश करते हैं।

कॉमरेड कोसा

25 अक्टूबर 2009 को गुंजर गांव के मुसाकी कोसा को सीआरपीएफ, पुलिस और एसपीओ गुण्डे पकड़ कर ले गए। बाद में उसकी गोली मार कर हत्या कर दी। कॉमरेड कोसा का पुराना गांव डब्बम था लेकिन बाद में जमीन के लिए गुंजर गांव आकर बसे थे। यहां जीवन यापन करते हुए वे डीएकेएमएस के सदस्य बन गए। कुछ समय बाद गांव की जनता ने उनको डीकेएमएस का अध्यक्ष चुन लिया। 2003 से उन्होंने 3 सालों तक डीएकेएमएस में ही काम किया। 2006 में पुलिस ने उनको पकड़ कर जेल में बंद कर दिया। करीब डेढ़ सालों तक वे जेल की सजा काट कर 2007 में रिहा हुए। उसके बाद फिर वे डीएकेएमएस में काम करने लगे थे।

कॉमरेड कोसा की शादी हो चुकी थी लेकिन उनकी पत्नी भीमे का निधन 2008 में सांप काटने से हुआ था। कॉमरेड कोसा

के तीन भाई और एक बहन हैं। उनकी एक बेटी भी है। गांव में किसानी करते हुए वे किसान संगठन में काम करते हुए पार्टी के भी बताए हुए हर काम को करते थे। आखिर में जब वे दुश्मन के हथों पड़ गए तो भी उन्होंने पार्टी की गोपनीयता की रक्षा की और अपनी जान कुरबान की। कॉमरेड कोसा का लहू व्यर्थ नहीं जाएगा। कॉमरेड कोसा अमर रहें।

कॉमरेड उंगाल

कॉमरेड उंगाल गुंजर गांव के निवासी थे। उनका पुराना गांव कोडता है। दूसरे लोगों की तरह उनका परिवार भी जमीन के लिए गुंजर गांव में आकर बसे थे। उनके माता-पिता पहले ही गुजर गए थे। उनका एक भाई और तीन बहनें अब बची हुई हैं।

कॉमरेड उंगाल बचपन से ही बाल संगठन में काम करने लगे थे। 2009 में वे गांव की चेतना नाट्य मंच की टीम में शामिल हुए थे। 20 वर्षीय कॉमरेड उंगाल को 25 अक्टूबर 2009 को गांव पर हमला कर पुलिस ने पकड़ लिया था। कॉमरेड उंगाल ने बचने के लिए भागने की पूरी कोशिश लेकिन बाद में पुलिस के हाथों पड़ गए। कॉमरेड उंगाल को भयंकर यातनाएं देकर पुलिस वालों ने मार डाला। नव जनवादी संस्कृति के लिए काम कर रहे कॉमरेड उंगाल की आशाओं को पूरा करेंगे। कॉमरेड उंगाल अमर रहें।

कॉमरेड सोडी अयते

दंतेवाड़ा जिला के जेगोरगोंडा एरिया के वेड़मा गांव में करीब 25 साल पहले एक आदिवासी मिडियामी परिवार में कॉमरेड सोडी अयते का जन्म हुआ था। अयते के माता-पिता दरभा डिवीजन के कुआकोंडा ब्लॉक से विस्थापित होकर इस गांव में आकर बसे थे। उनके पिता की मृत्यु के बाद उनके परिवार का पालन-पोषण उनके चाचा ने किया। उनकी दो छोटी बहनें और एक भाई हैं। उनके भाई गांव की कमेटी के अध्यक्ष हैं जाबकि उनकी बहनें केएएमएस में काम कर रही हैं। अयते बड़ी हुई तो उनके चाचा ने उनकी शादी गोल्लागूड़ेम गांव के सोड़ी परिवार में कर दी थी। उसके बाद से अयते वहां केएएमएस में काम करने लगी थीं। कॉमरेड अयते गांव के जन संगठन को अच्छे से चला रही थीं। गोल्लागूडेम गांव जेगोरगुंडा पुलिस थाने से महज दो किलोमीटर की दूरी पर है। 10 सितंबर 2009 को उनके गांव पर कोया कमांडो व सीआरपीएफ के गुंडों ने मिलकर हमला किया। उस हमले में कॉमरेड अयते शहीद हो गईं। कॉमरेड अयते की लाश को भी पुलिस वाले उठा कर ले गए।

कॉमरेड मुचकी देवा

दक्षिण बस्तर डिवीजन के जेगुरगोंडा इलाके के गांव दुरमा में 35 वर्ष पहले कॉमरेड देवाल का जन्म हुआ था। उससे पहले उनके माता-पिता कोंटा ब्लॉक के गांव गोंगे से आए थे। उन्होंने दुरमा गांव में कृषि के लिए भूमि तैयार कर वहां बसना शुरू किया था। अपने मां-बाप की पहली संतान देवाल की दो बहनें भी हैं। उनके बचपन में ही माता-पिता का देहांत हो गया था। उसके बाद उन्होंने ही अपनी बहनों का पालन-पोषण किया। 1998 में कॉमरेड देवाल की शादी हुई थी और उनको दो लड़के और एक लड़की पैदा हुई। बच्चों की मां भी बीमारी के कारण 2006 में गुजर गई थी। छोटे-छोटे बच्चे आसपास के दादा-दादी के पास पाल रहे हैं। 2007 में कॉमरेड देवाल डीकेएमएस की कमेटी में चुने गए थे। संगठन द्वारा सौंपे गए हर काम को कॉमरेड देवाल पूरा करते थे और अपने गांव की जनता को संगठित रखते थे। जनता के हर काम में वे शामिल होते थे। गांव की जनता को संगठित करने में उनकी अहम भूमिका थी। गांव में दस्ता जाने से मिलने के लिए भागे आते थे। अप्रैल 2006 में कॉमरेड देवाल बीमारी के कारण शहीद हो गए।

कॉमरेड माड़वी भीमा

करिगुंडम गांव के कॉमरेड माड़वी भीमा डीएकेएमएस की एरिया कमेटी के सदस्य थे। जनता से दिल से प्यार करने वाले कॉमरेड माड़वी भीमा ने लुटेरी सरकार के खिलाफ जनता को संगठित किया था।

2007 में पाशविक दमन अभियान सलवा जुडूम जब सब कुछ ध्वस्त कर रहा था और जबरदस्ती जनता को 'राहत' शिविरों में ठूंस रहा था तो वे जनता को समझाते थे और सलवा जुडूम की पोलपट्टी को खोलते थे। वे जनता और पार्टी से बेहद प्यार करने वाले कॉमरेड थे। पीएलजीए दिवस, शहीदी दिवस आदि सभी राजनीतिक दिवसों पर कॉमरेड भीमा प्रचार अभियानों में शामिल होते थे। 45 वर्षीय कॉमरेड भीमाल अपनी बीमारी की परवाह न करते हुए पार्टी द्वारा सौंपे गए हर काम को पूरा करने के लिए तैयार रहते थे। कॉमरेड भीमाल एक गरीब आदिवासी परिवार से संबंध रखते थे। उनके पिता काफी पहले गुजर चुके थे। अपनी मां के साथ वे करिगुंडम गांव में आए थे। कॉमरेड भीमाल की पत्नी की मृत्यु भी बीमारी के कारण हो चुकी थी। उनका एक बेटा है।

17 मई 2009 को करिगुंडम गांव पर कोया कमांडो पुलिस वालों ने पाशविक हमला किया। उसकी जांच करने के लिए कॉमरेड भीमाल गांव में गए तो पुलिस वाले वहीं थे। कॉमरेड भीमाल जनताना सरकार की जन संपर्क शाखा का सदस्य थे। डीएकेएमएस की एरिया कमेटी का भी सदस्य थे। पुलिस वाले उनके पीछे पड़ गए और उनको बहुत भगाया। काफी बीमार चल रहे कॉमरेड भीमाल उसके बाद और ज्यादा बीमार हो गए।

जनताना सरकार ने उनको बचाने की बहुत कोशिशें कीं।

उनको अस्पताल ले जाया गया, हजारों रुपया खर्च किया गया लेकिन उनकी बीमारी कम नहीं हुई। अस्पताल से आने के एक दिन बाद 18 जुलाई 2009 को रात के 9 बजे कॉमरेड भीमाल जनता से सदा के लिए विदा हो गए। कॉमरेड भीमा की शहादत से जनताना सरकार को बहुत बड़ा नुकसान हुआ है। पंचायत जनताना सरकार के अंतर्गत आने वाले सभी गांवों की जनता ने जनताना सरकार के लाल झंडे के कफन के साथ उनका अंतिम संस्कार किया और भावभीनी श्रद्धांजली अर्पीत की।

कॉमरेड दानसु (प्रवीण)

15 अगस्त झूठी आजादी के खिलाफ काला दिवस का प्रचार करते समय सुर्जागढ़ एरिया के पेठा (तोडसा) जंगल में 14 अगस्त 2009 को हुई झूठी मुठभेड़ में जन मिलिशिया कॉमरेड दानसु कोवासे शहीद हो गए।

उत्तर गड़चिरोली डिवीजन के सुर्जागढ़ एरिया के दुसागुड़ा गांव में एक गरीब परिवार में उनका जन्म हुआ था। वे अपने माता-पिता की इकलौती संतान थे। इसलिए मां-बाप उन्हें दिलोजान से प्यार करते थे। कॉमरेड दानसु ने पढ़ाई करते समय ही, अपने बूढ़े मां-बाप की मुश्किलों को देखकर घर का बोझ अपने कंधों पर उठा लिया था। वे अपने मां-बाप की आज्ञाओं को कभी भंग नहीं करते थे। यही कारण था कि उनके मां-बाप ने उनकी शादी छोटी उम्र में ही कर दी थी। उसके दो छोटे-छोटे बच्चे हैं जो अब अपनी मां के साथ रहते हैं।

कॉमरेड दानसु बचपन से ही पार्टी के संपर्क में आ गये थे और बाल संगठन में काम करते थे। गांव में पार्टी वालों के आने की खबर मिलते ही वे खाना-पीना लेकर पहुंच जाते थे। दस्ते के पास आकर सेंटरी करना, दुश्मन की सुचनाएं जुटाकर लाना आदि भी वे हिम्मत के साथ करते थे। वे पार्टी के कामों में सक्रिय रूप से भागीदारी करते थे। अपने छोटे-छोटे बच्चों को अपनी पत्नी के पास छोड़कर कई दिनों तक पार्टी के कामों में जाते रहते थे। 2006 में वे डीएकेएमएस के सदस्य बने थे। पार्टी के कामों को कितनी भी मुश्किल होने पर भी वो जरूर करते थे। उनके कामकाज के तरीके और लगन को देखकर पार्टी ने उन्हें पार्टी सदस्यता प्रदान की। 2007 में जन मिलिशिया दल में शामिल होकर उन्होंने कई कार्रवाइयों में भाग लिया था। पार्टी के आव्हान पर होने वाले, बंद, प्रदर्शन, रैलियों, राजनीति दिवसों आदि के साथ-साथ उनके लिए चलाए जाने वाले प्रचार अभियानों में भी वे बराबर सक्रियता के साथ भाग लेते थे। इसी तरह अब की बार वे 15 अगस्त झूठी आजादी के खिलाफ सप्ताह भर के प्रचार अभियान में भाग लेने के लिए अपने बच्चों को छोड़कर निकले हुए थे। इस प्रचार अभियान को देखकर दो दिन से दुश्मन ने प्रचार दल का पीछा करना शुरू किया था। पीएलजीए ने पेठा गांव के निकट जंगल में अपना डेरा डाला हुआ था। उसी मौके पर 14 अगस्त 2009 को सी-साठ हत्यारों ने एक मुखबिर की सूचना पर उस स्थान की घेरबंदी कर दी। घेराबंदी कर अंधाधुंध गोलियां बरसाईं। ए सेंटरी पर तैनात कॉमरेड दानसु इस गोलीबारी से बाहर नहीं निकल पाए और दुश्मन के साथ लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त किया। कॉमरेड दानसु ने अपनी जान को कुरबान कर क्रांतिकारी विरासत को जारी रखा है। उनके रक्त से जरूर जन क्रांति के बीज अंकुरित होंगे। कॉमरेड दानसु अमर हैं।

कॉमरेड मड़काम राजू

कॉमरेड मड़काम राजू का जन्म गांव तिम्मेनार में हुआ था। यह गांव बीजापुर के भैरमगढ़ एरिया के अंदर आता है। गांव तिम्मेनार शुरू से ही पार्टी को बहुत प्यार करने वाले गांवों में से रहा है। कॉमरेड राजू अपने मां-बाप के बड़े बेटे थे। वह 12 वर्ष की उम्र में मिरतुल की आश्रम शाला में पढ़ने के लिए चले गए थे। वहां वह आठवीं तक ही पढ़ पाए। अपने स्कूली दिनों से ही वह काफी संघर्षशील छात्र बन गए थे। कई बार स्कूल की समस्याओं को लेकर उन्होंने रैली और जुलूस निकाले और उसमें छात्रों, शिक्षकों को भी शामिल किया। 2002 से 2005 तक वह स्कूली छात्रों की कमेटी में काम किए थे।

उनके मां-बाप पहले पुरोयगुर्रा गांव में रहते थे, बाद में जीवनयापन के लिए तिम्मेनार आए थे। राजू ने बचपन में गांव के बाल संगठन में काम किया था। कॉमरेड राजू की शादी घर में हो चुकी थी। उनके दो छोटे भाई हैं जो जनयुद्ध में शरीक हैं। परिजनों के पास बहुत ही कम जमीन है। उनके मां-बाप बचेली में बांस व वनोपज आदि बेच कर अपना जीवन बसर कर रहे हैं। और अपने बच्चों का पालन-पोषण भी इसी तरह किया था।

2006 में सलवा जुडूम का अकथनीय जुल्म उस एरिया में बढ़ गया था। स्कूल में रहकर पढ़ाई करना अब उनके लिए दूभर हो गया था। इसलिए उन्होंने स्कूल छोड़कर आने का निर्णय लेना पड़ा। उसके बाद वह मिरतुल एलओएस में भर्ती होने का प्रस्ताव पार्टी के सामने रखा। कुछ समय तक उन्होंने मिरतुल जन मिलिशिया में काम किया। इसके बाद उनका तबादला 13वीं पलटन के सैनिक के रूप में हुआ था। पलटन-13 में उन्होंने 2006-07 में काम किया और उन्हें डाक्टर की जिम्मेदारी प्रदान

की गई। उन्होंने वहां रहते हुए पुल्लुम फायरिंग समेत कुछ अन्य घटनाओं में भी भागीदारी ली। 2008 में आंदोलन की जरूरतों को देखते हुए पलटन-13 से उनकी बदली कर दी गई। इसके बाद वे एलजीएस के सदस्य बने। वहां पर भी उन्होंने डाक्टर व सैनिक की जिम्मेदारियां निभाईं। लेकिन वहां पर वह ज्यादा दिन नहीं रहे। 2008 में ही उनका तबादला इंस्ट्रक्टर टीम में करना पड़ा। वहां से डिवीजनल कमेटी के निर्णय अनुसार सितंबर 2008 से उन्होंने फिर दूसरी जगह पर सांगठनिक काम करने के लिए जिम्मेदारी प्रदान की गई।

1 सितंबर 2009 को वह पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिए गए। एक सप्ताह तक उन्हें अवैध हिरासत में रखकर अमानवीय व भयंकर यातनाएं दी गईं। कितनी भी यातनाएं देने के बावजूद पुलिस कॉमरेड राजू का मुंह नहीं खुलवा पाई। जब यातनाओं के सभी तरीके बोल्शेविक दृढ़ता के आगे मुंह की खा गए तो कायर पुलिस ने अपना आखिरी हथियार आजमाया। उन्हें कुडेपर गांव के एक छोटे से जंगल में ले गई। वहां पर पुलिस ने उन्हें भागने के लिए कहा। हालांकि कॉमरेड राजू उसका अंजाम जानते थे - उन्होंने भागते हुए चिल्लाया था - 'माओवाद जिंदाबाद, मेरे रास्ते को जनता कभी नहीं छोड़ेगी, आज नहीं तो कल मेरे खूं का बदला जरूर जनता लेगी...' और कायर पुलिस वालों ने पीछे से उनके शरीर को गोलियों से छलनी कर दिया। वहीं दण्डकारण्य का यह वीरसपूत धरती मां की गोद में ढेर हो गए। बाद में आतंकी पुलिस वालों ने कुल्हाड़ियों से उस बहादुर नौजवान के शरीर के कतरे-कतरे कर डाले। बोरी में भर कर भांसी थाने ले गए और एक गड्ढ़े में उनको दबा दिया। अगले दिन पुलिस की रटी-रटाई कहानी थी - 'राजा बंगाला के पास पुलिस ने मुठभेड़ में एलजीएस के उप कमांडर को खत्म कर दिया।'

कॉमरेड राजू मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद के सिद्धांतों को समझते हुए, उन्हें आत्मसात करते हुए, अपने जीवन में उतारने वाले दृढ़ निश्चियी कॉमरेड थे। उनके अनुशासनबद्ध और साहसिक जीवन ने हम सबके लिए एक आदर्श प्रस्तुत किया है। लाल सलाम कॉमरेड राजू!

कॉमरेड पोड़ियामी सोमडू

कॉमरेड पोड़ियामी सोमडू बीजापुर जिला के भैरमगढ़ एरिया में जन्म लिए थे। उनके गांव का नाम है कुतुललक्का जो मिरतुल एलओएस एरिया के अंतर्गत आता है। एक गरीब आदिवासी परिवार में उनका जन्म हुआ था। कॉमरेड सोमडू जब घर में रहते थे तो गुरिल्ला दस्ते से बहुत प्रभावित हुए थे। वह इस गांव में पोरमे गांव से आए थे। वहां अपने परिवार के लिए जंगल काटकर खेती लायक भूमि तैयार की थी। और खेतीबाड़ी कर अपने परिवार का पेट भर रहे थे।

2005 में जब सलवा जुडूम शुरू हुआ था तब वह अपने गांव में निडरता के साथ डटकर खेती करते रहे थे। दुश्मन आने से गांव की जनता के साथ मिलकर जंगल में छुपकर रहते थे। कितनी भी मुश्किलें आने से सलवा जुडूम में शामिल नहीं होना यह उनका दृढ़ मत था।

9 अगस्त 2009 को सुबह-सुबह पुलिस ने आकर उनके गांव पर हमला किया और उनको पकड़ लिया। पुलिस ने उनको घोर यातनाएं दीं। लेकिन कुछ नहीं उगलवा सकी। अंत में चाकुओं से गोदकर, उन्हें फेंककर वह पाशविक दरींदे चले गए।

पीएलजीए के सैनिकों व डाक्टरों को जब वह मिले थे हालत बहुत नाजुक थी। उनके इलाज की कोशिशें की गईं, लेकिन जख्म बहुत गहरे थे। हालांकि उनको बचाने के लिए हर संभव प्रयास किए गए, लेकिन 13 सितंबर को उन्होंने अंतिम सांसें लीं। ग्रामीण जनता ने अपने पारंपरिक रिवाजों के अनुसार उनका अंतिम संस्कार किया और एक आम सभा कर उनको श्रद्धांजली अर्पीत की गई।

कॉमरेड कोवासी सुखराम

25 वर्षीय कॉमरेड सुखराम बीजापुर जिला के भैरमगढ़ एरिया के अंतर्गत आने वाले गांव कमकागुंडम में जन्मे थे। 2002 में वे डीएकेएमएस के सदस्य बने और 2005 में उन्हें गांव की कमेटी में चुन लिया गया था। उनके छोटे भाई लखन को 2006 में गुंडों ने पकड़ कर मार डाला था। उनके पूरे परिवार को मारने की कोशिशें की गई थीं।

सलवा जुडूम से डरकर उनका परिवार एक बार जुडूम शिविर में चला गया था। 2006 में वहां से भागकर दोबारा वे गांव की जनता के साथ मिलकर रहने लगे थे। कितनी भी मुश्किलें आने के बाद दोबारा उनका परिवार झुका नहीं। उन्होंने खुद भी जुडूम के खिलाफ कई संघर्षों में भाग लिया।

कॉमरेड सुखराम पकड़ने के बाद क्रूर यातनाएं देकर मार डाला। उन्होंने पुलिस को पार्टी को नुकसान पहुंचाने वाली कोई भी बात बताने से इनकार कर दिया। उनकी हत्या कर पुलिस ने मुठभेड़ की कहानी रची।

कुमोमगुड़ा शहीदों को लाल सलाम!

दक्षिण बस्तर डिवीजन, दंतेवाड़ा जिला के दोरनापाल एरिया में एक गांव है कुमोमगुड़ा। 11 अगस्त 2008 की सुबह-सुबह इस गांव में जन मिलिशिया के कॉमरेड डेरा डाले हुए थे। तब पालामाड़ा गांव के तीन मुखबिरों ने इसकी सूचना जालिम पुलिस वालों को दी। पुलिस वालों ने डेरा का घेराव कर लिया। पुलिस वालों ने बहुत तेजी से भागते हुए वहां पर फायरिंग की इसमें हमारे छह कॉमरेड शहीद हुए। इसके अलावा इसमें तीन कॉमरेड गंभीर रूप से घायल हुए। घायलों में से एक थे जन मिलिशिया के कमांडर कॉमरेड सोडी गंगाल जो 34 दिनों के बाद शहीद हो गए। मारे जाने वाले कॉमरेडों में 5 जन मिलिशिया कॉमरेड और 2 आम ग्रामीण थे।

उनके शवों को पुलिस वाले झिल्लियों में बांधकर पोलमपल्ली

ले गए, वहां से गाड़ियों में दोरनापाल ले गए। अत्यंत पाशविकता का परिचय देते हुए उनके शवों से सिरों को काट डाला। गड्ढ़ा खोदकर, एक के ऊपर एक शव को चढ़ाकर उनको एक ही जगह दबा दिया गया। पाशविकता की हद और तब हो गई जब ऐर्राबोर व दोरनापाल शिविर में पुलिस व एसपीओ ने मिलकर इस घटना का जश्न मनाया।

पुलिस की बर्बर कार्रवाई में शहीद हुए जन मिलिशिया कॉमरेडों को हम क्रांतिकारी सलाम पेश करते हैं। प्रस्तुत है उनकी संक्षिप्त जीवनियां –

कॉमरेड सोडी गंगाल

कॉमरेड सोडी गंगाल का जन्म बीराभट्टी (बोटेम) गांव में करीबन 35 साल पहले हुआ था। यह गांव दक्षिण बस्तर डिवीजन के दंतेवाड़ा जिला, कोंटा तहसील के अंतर्गत आता है। एक गरीब आदिवासी परिवार में उन्होंने जन्म लिया था। मिडियावाड़ा (गादीरास) से उनके पिता बोटेम गांव में आए थे। अपने पैतृक गांव में उनके पास खेतों के लिए भूमि बहुत कम थी। इसलिए उन्होंने गादीरास से पलायन करने पर मजबूर होना पड़ा। यहीं पर कॉमरेड गंगाल की परवरिश हुई। बेहद गरीब परिवार होने के कारण उनको स्कूल में पढ़ाई करने का मौका ही नहीं मिला था। उनके पिता के निधन के बाद ऐसा करना और भी असंभव हो गया था। छोटी उम्र से ही गंगा को खेतों में काम करना पड़ता था।

कॉमरेड गंगाल बचपन से बाल संगठन में काम करते थे। वहीं से वे क्रांतिकारी आंदोलन के नजदीक आए थे। बड़े होकर वह डीएकेएमएस का सदस्य बने। गांव की समस्याओं को समझते हुए, पार्टी की राजनीति से परिचित होते हुए वे लगातार अपनी चेतना का स्तर बढ़ाते रहे और विकसित होते रहे। वह अपने घर के काम के साथ-साथ पार्टी द्वारा सौंपे जाने वाले कामों को भी बहुत ही लगन के साथ करते थे। जब भी गांव में कोई समस्या आती तो वह जरूर इसकी गांव कमेटी में चर्चा करते थे और समस्या के निदान के लिए प्रयास करते थे। जनता को समझाना उनके साथ मिलजुल कर रहना उन्हें खूब आता था। कॉमरेड गंगाल को डीएकेएमएस से पार्टी ने ग्राम रक्षा दल के कमांडर का कार्यभार सौंपा। कोंटा एरिया में जनवरी 2006 से फासीवादी सलवा जुडूम दमन अभियान शुरू हुआ था। इस अभियान की शुरूआत में जनता भयभीत हो गई थी। तब कॉमरेड गंगाल हमेशा सोचते थे कि जनता की रक्षा कैसे की जाए, उन्हें राजनीतिक हिसाब से कैसे हिम्मत प्रदान की जाए। जब सलवा जुडूम का प्रतिरोध करने के लिए कोया भूमकाल मिलिशिया का गठन किया गया तब तक वे पार्टी सदस्य बन चुके थे। तभी उनका चुनाव गांव की जनताना सरकार में हुआ और रक्षा विभाग की जिम्मेदारी उनको सौंपी गई। वह इस प्रकार जन मिलिशिया पलटन का कमांडर बन गए।

फासीवादी सलवा जुडूम अभियान को मदद करने वाली पुलिस पार्टियों, जनता के घरों को तहस-नहस करने वाले एसपीओ, जुडूम के गुण्डों आदि जब भी आते थे तो वे अपने जन मिलिशिया सदस्यों को लेकर हमला करने से नहीं चूकते थे।

फरवरी 2007 में कॉमरेड गंगाल ने अपने जीवन के लक्ष्य, जन आंदोलन की जरूरतों, पार्टी की राजनीति को अपने परिवार वालों, जन्म देने वाली मां, अपनी जीवनसंगिनी और बच्चों को समझाते हुए पूर्ण रूप से घर त्याग दिया। पूर्णकालिक रूप से जनसमर में कूद पड़े। उनकी राजनीतिक समझदारी, काम के प्रति जिम्मेदारी की भावना को देखते हुए दोरनापाल एरिया के पेंटा जन मिलिशिया कमांडर-इन-चीफ की जिम्मेदारी उनको प्रदान की गई। इस तरह वह राजनीतिक-सैनिक रूप से लगातार विकसित हो रहे थे।

11 अगस्त 2008 को कॉमरेड गंगाल का जन मिलिशिया दस्ता अरलेमपल्ली-कमोमगुड़ा के बीच डेरा डाले हुए था। वे वहां सुबह का नाश्ता कर रहे थे और तीन मिलिशिया कॉमरेड गांव में गए हुए थे। गांव में एक नई कॉमरेड को आना था, जो अभी-अभी दस्ता में भर्ती होने के लिए आई थी। वे कुछ समय में गांव से वापस आ गए और साथ में पुलिस वालों की खबर कमांडर को दी। जन मिलिशिया कॉमरेडों ने तुरंत डेरा बदलने के लिए अपने सामानों को समेटना शुरू कर दिया। कुछ कॉमरेड नहाने जा रहे थे उन्होंने भी अपना नहाना रद्द कर लिया। लेकिन तभी पुलिस का हमला हो गया। हमला बहुत तेजी से हुआ। पुलिस वाले दौड़ते हुए डेरा में घुसे और अंधाधुंध फायरिंग की। वहीं पर हमारे पांच प्रिय कॉमरेड शहीद हो गए। चार कॉमरेड वहां पर घायल हुए।

इस अंधाधुंध फायरिंग में इंसास राइफल की गोली कॉमरेड गंगा के पेट में आकर लगी। तब तुरंत उन्होंने अपनी रायफल के साथ चार सौ मीटर दूर अपना कवर बदली किया। हालांकि वे बुरी तरह जख्मी हो गए थे, फिर भी अपनी पलटन को अभी भी नेतृत्व दे रहे थे। फायरिंग की गंभीरता को देखते हुए उन्होंने रिट्रीट होने का अदेश दिया। साथ वाले कॉमरेडों ने जख्मी कमांडर को कंधों पर उठाया और सुरक्षित लेकर निकल लाया। पेट से खून की धार बह रही थी।

जख्मी कॉमरेड गंगाल को बचाने के लिए स्थानीय डाक्टर कॉमरेडों ने अपने चिकित्सकीय ज्ञान के आधार पर क्षमतानुसार हर संभव प्रयास किए। लगभग महीना भर उनके जख्मों पर मरहम-पट्टी करते रहे। लेकिन उनकी कोशिश कामयाब नहीं हो सकी। इतना जख्मी होते हुए भी वे सभी के साथ बहुत हंसी-खुशी से रहते थे। जब उन्हें अपने परिवार वालों के पास ले जाया गया तो उन्होंने अपने परिवार वालों को बहुत अच्छे से समझाया – 'आप लोग पार्टी के साथ, जनता के साथ मिलजुल कर खेती-बाड़ी कर अपना जीवन चलाना। जनता के साथ अच्छे से रहो, मैं अभी जा रहा हूं।' और इस प्रकार 15 सितंबर 2008 को पांच बजे हमारे प्रिय बहादुर जन मिलिशिया कमांडर

कॉमरेड गंगाल सदा के लिए हमें लाल सलाम कह गए।

कॉमरेड गांगाल को जनता के साथ मिलकर एरिया कमेटी सदस्यों ने क्रांतिकारी परंपरा के साथ विदाई दी। दो जनताना सरकारों की जनता ने लाल कफन डालकर उनकी शवयात्रा निकाली। अंत में श्रद्धांजली अर्पीत की। सभा में कॉमरेड गंगा के परिजनों ने बहुत जोशपूर्ण अंदाज में अपनी बात रखी। सभी लोगों ने कॉमरेड गंगा के सपनों को पूरा करने, उनके आदर्श, व्यवहार, हिम्मत को आत्मसात करने के नारे लगाए।

कॉमरेड माड़वी आयतल

दक्षिण बस्तर डिवीजन, जिला दंतेवाड़ा, कोंटा तहसील के गांव टेटाराय में कॉमरेड माड़वी आयतल का जन्म हुआ था। 25 वर्षीय कॉमरेड आयतल का परिवार एक मध्यम वर्गीय आदिवासी परिवार है। उनके पिता का निधन हो चुका है। घर में मां और उनके दो छोटे भाई हैं।

वह बचपन में बाल संगठन का सदस्य बन गए थे और पार्टी द्वारा चलाए जा रहे जनयुद्ध को समझने लगे थे। 2005 में वह ग्राम रक्षा दल के सदस्य बनाए गए थे। उनकी शादी तब तक नहीं हुई थी।

कोंटा तहसील में बर्बर सलवा जुडूमी हमलों की शुरूआत जनवरी 2006 में हुई थी। आदिवासी जनता के जीवन को बर्बाद करने वाले इस अभियान ने सैकड़ों गांवों को खाक कर दिया है। उनमें से एक गांव कॉमरेड आयतल का भी था। उनके गांव के लोग और मुखिया-मांझी सलवा जुडूम के सामने झुक गए थे और उसमें शामिल हो गए थे। पूरा गांव झुकने के बाद भी आयतल का परिवार फासीवादी जुडूम के आगे नहीं झुका। वह परिवार किष्टारम एरिया में आकर रहने लगा। कॉमरेड आयतल अपनी मां और भाइयों को समझाकर, हिम्मत बंधाकर कि झुकेंगे नहीं, वहां से पचास किलोमीटर दूर इस एरिया में लेकर आए थे। वहां पर अपने परिवार का पालन पोषण करने लगे थे। पार्टी के पक्ष में उनका परिवार दृढ़ता के साथ डटा रहा।

कॉमरेड आयतल 2006 से परिवार को त्याग कर पेंटा जन मिलिशिया में भर्ती हो गए थे। लगभग तीन सालों तक उन्होंने लाख मुसीबतों के बावजूद जन मिलिशिया में डटकर काम किया। जन मिलिशिया के नियमों और अनुशासन को वे दृढ़ता के साथ पालन करते थे। दुश्मन पर हुए कितने ही हमलों में उन्होंने भाग लिया था। दुश्मन का सामना वे निडरता के साथ करते थे। बीच-बीच में घर जाकर, उनको समझाकर वे फिर वापस जन मिलिशिया की कार्रवाइयों में शामिल हो जाते थे।

कॉमरेड आयतल 11 अगस्त को कुमोमगुड़ा गांव में जन मिलिशिया पर हुए हमले में शहीद हो गए। कुमोमगुड़ा गांव की जनता को शाम के छह बजे उनका शव मिला। गांव की जनता ने उनके शव को लाल कपड़े से ढककर, उनको अंतिम संस्कार किया। शाम को ही एक श्रद्धांजली सभा का आयोजन किया गया। उनके छोटे भाई ने उनके खून का बदला लेने की शपथ ली और पीएलजीए में भर्ती होने की घोषणा की।

कॉमरेड माड़वी जोगाल

कॉमरेड माड़वी जोगाल कुमोमगुड़ा गांव में जन्म लिए थे। यह गांव दंतेवाड़ा जिला के कोंटा तहसील में आता है। गरीब आदिवासी परिवार में जन्मे जोगाल 27 वर्ष के नौजवान कॉमरेड थे। उनकी शादी हो चुकी थी और उनका एक बच्चा भी है।

कॉमरेड जोगाल बचपन से ही क्रांतिकारी गतिविधियों में हिस्सा लेने लगे थे। 2004 में उन्होंने जन मिलिशिया कमांडर की भूमिका भी निभाई थी। कई एंबुशों में उन्होंने भाग लिया था। सलवा जुडूम शुरू होने के बाद उन्होंने गांव की जनता को संगठित रखा और झुकने नहीं दिया। गांव की जनता की जन मिलिशिया में रहकर रक्षा की।

11 अगस्त को उनके गांव में जन मिलिशिया पर हमला हुआ। फायरिंग से पहले वह अपने खेत में काम करने गए थे। वहां से वे दांतुन करते हुए जन मिलिशिया के डेरे पर पहुंचे ही थे कि पुलिस का हमला हो गया। फायरिंग से बचने के लिए वे पहाड़ की ओर भागे। लेकिन तभी उनको गोली लग गई। गोली लगने से वह वहीं गिर गए। वह दुश्मन की नजर में नहीं चढ़े इसलिए उनकी लाश को वो नहीं ले जा पाए। अगले दिन शाम को साढ़े छह बजे उनका शव मिला। रात को ही उनका अंतिम संस्कार सम्मानपूर्वक कर दिया गया।

कॉमरेड जोगाल पार्टी व जनता के साथ हमेशा मिलजुल कर रहते थे। कॉमरेड जोगाल की बहन को दिसंबर 2007 में दोरनापाल पुलिस व एसपीओ ने बहुत ही पाशविक तरीके से बलात्कार कर मार डाला था। कॉमरेड जोगाल तीव्र वर्गीय घृणा से भर उठे थे। और सरकार के प्रति उनके अंदर बेइंताह गुस्सा था। दंडकारण्य की मुक्ति के लिए और पार्टी को मजबूत करने के लिए वे पार्टी द्वारा सौंपे गए हर काम को ईमानदारी व लगन के साथ करते थे। घर में रहकर भी वे पार्टी के लिए अच्छे से काम करते थे।

नौजवान कॉमरेड जोगाल ने जनता के लिए अपने प्राण न्यौछावर किए हैं। आइए, उनके लक्ष्यों को पूरा करने के लिए हिम्मत के साथ लड़ाई जारी रखें। आइए, उनके सपनों को पूरा करने के लिए हिम्मत के साथ लड़ाई को जारी रखें।

कॉमरेड वेट्टी लच्छू

दक्षिण बस्तर डिवीजन के दंतेवाड़ा जिला, कोंटा तहसील के गांव तोयापारा (ग्राम पंचायत गोरगोंडा) में कॉमरेड वेट्टी लच्छू जन्मे थे। उनका परिवार एक मध्यम वर्गीय आदिवासी परिवार है। कॉमरेड लच्छू 2005 में जन मिलिशिया में भर्ती हुए थे। चाहे कार्रवाई करनी हो या फिर सामूहिक श्रम, वह हर जगह आगे रहते थे। पार्टी की राजनीति और सिद्धांतों को सीखते हुए, जनयुद्ध में भाग लेते हुए, दुश्मन के पाशविक हमलों का मुकाबला करते हुए वह विकसित हो रहे थे। पार्टी द्वारा सौंपे गए हर काम को वह मजबूती के साथ पूरा करते थे। कमांडर के हर आदेश का वह मजबूती के साथ पालन करते थे। वह अपने घर वालों व जन मिलिशिया के साथियों के साथ मिलजुल कर रहते थे। दूसरे जन मिलिशिया दलों के सदस्य जब उनके दल से मिलते थे तो वह खुशी से उनका स्वागत करते थे और उनके साथ रहते थे।

होशियार और चतुर कॉमरेड वेट्टी लच्छू 11 अगस्त को कुमोमगुड़ा हमले में शहीद हो गए। तेज फायरिंग में उनको गोली लगी और वह वहीं गिर पड़े। दुश्मनों ने उनको नजदीक आकर भी गोलियां मारीं।

जब वह घर में रहकर ही काम कर रहे थे तो पुलिस व सलवा जुडूम के गुंडों ने उनके गांव पर हमला किया था। उस हमले में वह उनकी पकड़ में आ गए थे। लेकिन कुछ ही दिनों के बाद सलवा जुडूम के गुण्डों को चकमा देकर वह भाग आने में सफल हो गए थे। अपने गांव से पचास किलोमीटर दूर किष्टारम एरिया में वह अपने परिवार को लेकर आए ताकि जुडूमी गुंडों से उनको बचाया जा सके। वहां पर अपने परिवार को बसाकर वह फिर जन मिलिशिया के कार्यों में सक्रिय हो गए थे। उनके गांव के अन्य लोग भी इसी तरह वहां आए थे। 2008 जून में उनका परिवार और अन्य गांव वालों ने पार्टी से अपने पुराने गांव वापस जाने की बात कही। और वह सब गोरगोंडा में बसने चले गए थे।

कॉमरेड लच्छू दीर्घकालीन जनयुद्ध की जीवन परिस्थितियों में रहते हुए, उसे आत्मसात करते हुए विकसित हो रहे थे। आज हमें उनके जीवन से सीखने की बहुत जरूरत है। जनता की जनवादी सत्ता के अंग - जनताना सरकारों को मजबूत करना, फैलाना ही शहीदों को सच्ची श्रद्धाजंली होगी। कॉमरेड वेट्टी लच्छू को लाल सलाम।

कॉमरेड वेट्टी सन्नी

कॉमरेड वेट्टी सन्नी कुमोमगुड़ा गांव के एक गरीब आदिवासी परिवार में पैदा हुई थीं। वह 24 साल की युवा कॉमरेड थीं।

सन्नी जब छोटी थीं तभी से क्रांतिकारी राजनीति से प्रभावित हो गई थीं। बचपन में ही लुटेरी सरकारों के जुल्मों को समझने लगी थीं। माओवादी आंदोलन के बिना जुल्म बंद नहीं हो सकता, ऐसा वह बचपन से ही सोचने लगी थीं। आदिवासी महिलाओं पर होने वाले पितृसत्तात्मक शोषण को खत्म करने के नारे के साथ वह संघर्ष में कूद पड़ी थीं।

2004 में वह ग्राम रक्षा दल की सदस्या बनी थीं। जन मिलिशिया सदस्यों के साथ वह हमेशा मिलजुल कर रहती थीं। राजनीतिक रूप से उनके विकास को देखते हुए 2007 में उनको केएएमएस में बदली किया गया। ग्राम कमेटी में रहते हुए गांव में आने वाली सभी प्रकार की समस्याओं को हल करने में वह भाग लेती थीं। गांव की समस्याओं को हल करने में उनकी सरहानीय भूमिका रहती थी। सरकार द्वारा चलाए जा रहे दमन के खिलाफ जनता को तैयार करते हुए, उन्होंने अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाया। एक गरीब परिवार में पैदा हुई कामरेड सन्नी समस्त गरीब जनता के लिए अपनी जान की बाजी लगा दी।

11 अगस्त को वे अपने खेत से कुल्हाड़ी पकड़ कर जन मिलिशिया के डेरे पर गई थीं। तभी वहां पर फायरिंग शुरू हो गई। उस फायरिंग में उनकी छाती पर गोली लगी जिससे वह वहीं शहीद हो गईं। तुरंत ही पुलिस वालों ने उनके कपड़ों को उतार फेंका और जन मिलिशिया वालों के झोलों में मिले कपड़ों को पहना दिया। उनकी लाश को दोरनापाल ले गए।

कॉमरेड सन्नी भारत की नव जनवादी क्रांति को सफल करने के लिए, पार्टी द्वारा सौंपी गई जिम्मेदारियों को दृढ़ता से पूरा करते हुए अपने जीवन का बलिदान दिया है। कॉमरेड वेट्टी सन्नी सदा अमर रहेगी।

कॉमरेड सोडी हड़मे

दक्षिण बस्तर डिवीजन, जिला दंतेवाड़ा, कोंटा तहसील में एक गांव है तोलनाई। इस गांव के एक मध्यम वर्गीय आदिवासी परिवार में जन्म लिया था कॉमरेड सोडी हड़मे ने। वह महज 18 वर्ष की किशोरी थीं और कक्षा चौथी तक उन्होंने दोरनापाल में पढ़ाई की थी। 2003 में वह अपने गांव से गई थीं। 2006 में जब वह दोरनापाल में थीं तो कोंटा एरिया में बर्बर फासीवादी दमन अभियान शुरू हो गया था। सलवा जुडूम के गुंडों ने स्कूली छात्रों का

(शेष पेज 25 में...)

ऑपरेशन ग्रीनहंट का सच

सलवा जुडूम के पराजित होने के बाद सरकार ने माओवादी आंदोलन को खत्म करने के लिए उससे भी बर्बर और पाशविक दमन अभियान शुरू कर दिया है जिसे ऑपरेशन ग्रीन हंट के नाम से पुकारा जा रहा है। इसके तहत गांव-गांव में हमले किये जा रहे हैं ओर लोगों को दिनदहाड़े कत्ल किया जा रहा है। गांव वालों की संपत्ति को नष्ट किया जा रहा है। लेकिन दक्षिण-पश्चिम बस्तर की बहादुर क्रांतिकारी जनता सलवा जुडूम की तरह ग्रीनहंट को भी जबर्दस्त मात देगी, इसमें कोई शक की गुंजाइश नहीं है। ग्रीनहंट के तहत हुए हमलों व जनता के प्रतिरोध की कुछ खबरें इस प्रकार हैं -

दक्षिण बस्तर डिवीजन के कोंटा इलाके के अंतर्गत आने वाले करिगुंडम गांव पर पहले भी दर्जनों बार हमले कर खाकी हत्यारे दमन की बर्बरता का परिचय दे चुके हैं। ग्रामवासियों ने साहस व हिम्मत के साथ निहत्थे रहते हुए भी लड़ाई लड़ी है।

2 सितंबर 2009 को करिगुंडम गांव पर सैकड़ों की तदाद में लुटेरे शासकों के सुरक्षा बलों ने सुबह ही गांव को घेरकर उस पर कहर बरपाया। जनता को पकड़ कर यातनाएं दीं। कइयों को बेहोश होने तक बेदम पिटाई की। खेती-किसानी कर अपना जीवनयापन करने वाले किसानों - मडकम सुक्का, कोवासी रामा, मांदी कुमार - को पुलिस थाने पकड़ कर ले गए और जेल में झूठे केस लगाकर ठूंस दिया। इसके अलावा तीन महिलाओं - कुंजम तुले, करटम देवे और करटम हड़मे की भी अमानवीय तरीकों से पिटाई कर, बेहोशी की हलात में छोड़कर चले गए। अपने घरों में काम कर रही इन बेकसूर महिलाओं को घरों से घसीट कर पीटा गया और उनके साथ दुर्व्यवहार किया गया। उसके बाद तीन गिरफ्तार किये गए ग्रामीणों को छुड़ाने के लिए भी गांव की कम से कम तीस महिलाएं पुलिस थाने पर जाकर धरना दीं।

11 अगस्त को गांव कोरसागुडा की जनता आवापल्ली हाट बाजार से लौटकर आ रही थी। रास्ते में बासागुडा थाने के पुलिस वालों ने 4 ग्रामीणों पूछताछ के नाम पर रोक कर यातनाएं दीं।

हमलावरों को लौटने पर मजबूर किया कोया भूमकाल मिलिशिया ने

दंतेवाड़ा जिले के जेगोरगोंडा, दंतेवाड़ा व किरंदुल पुलिस स्टेशन के पुलिस वाले सैकड़ों की तदाद में एसपी राहुल शर्मा की ठोस योजना के साथ गश्त पर निकले थे। उनका उद्देश्य था रास्ते में आने वाले तमाम गांव वालों को 'सबक' सिखाना। लेकिन कोया भूमकाल मिलिशिया के गुरिल्लों ने दुश्मन बलों को ही सबक सिखाकर वापस भागने पर मजबूर किया। कोया भूमकाल मिलिशिया ने कमरगुड़ा गांव के पास एक प्रेशर बम लगाया। इसकी चपेट में आकर दो सीआरपीएफ के हत्यारे बुरी तरह जख्मी हुए। घायलों को लेकर पुलिस की एक टुकड़ी को तुरंत वापस जेगोरगोंडा लौटना पड़ा।

उसके बाद पुलिस वाले बेयनपल्ली गांव पर हमला करने के लिए आगे बढ़े। लेकिन जन मिलिशिया कामरेडों की नजरों में जैसे ही पुलिस चढ़ी उन पर फायरिंग करना शुरू कर दिया। इसके बाद पुलिस वालों ने उनकी मोर्टार से शेल दागने शुरू किये लेकिन आगे बढ़ने की उनकी हिम्मत नहीं हुई। उनको भी वापस जोगोरगोंडा थाने लौटना पड़ा। बेयनपल्ली गांव पर दर्जनों बार हमले हो चुके हैं, लेकिन जनता कभी दुश्मन के आगे न झुककर प्रतिरोध के साथ ही अपने दैनिक कामकाजों को चला रही है।

कोरसागुड़ा गांव पर दुश्मन का हमला

दक्षिण बस्तर के बासागुड़ा एलओएस एरिया के अंतर्गत 120 घरों वाला गांव है कोरसागुड़ा। गांव से महज 5 किलोमीटर दूरी पर स्थित है बासागुड़ा पुलिस थाना और जुडूम यातना शिविर। बासागुड़ा में जब पहली बार सलवा जुडूम शुरू हुआ था तो इस गांव के 65 घरों को जलाकर राख कर दिया गया था। दसियों बार इस गांव पर दुश्मन हमले कर चुका है। गांव की जनता जंगल-पहाड़ों में छुपकर शरण लेने पर मजबूर है।

8 मार्च 2009 को बासागुड़ा पुलिस बलों ने एक बार और इस गांव पर अपनी बर्बरता का परिचय दिया। महुआ बीन रही गांव की पांच महिलाओं और एक लड़के एमला किशोर (लिंगू) को जबरदस्ती पकड़ कर शिविर में बंदी कर दिया।कोरसागुड़ा गांव पर दुश्मन का हमला

दक्षिण बस्तर के बासागुड़ा एलओएस एरिया के अंतर्गत 120 घरों वाला गांव है कोरसागुड़ा। गांव से महज 5 किलोमीटर दूरी पर स्थित है बासागुड़ा पुलिस थाना और जुडूम यातना शिविर। बासागुड़ा में जब पहली बार सलवा जुडूम शुरू हुआ था तो इस गांव के 65 घरों को जलाकर राख कर दिया गया था। दसियों बार इस गांव पर दुश्मन हमले कर चुका है। गांव की जनता जंगल-पहाड़ों में छुपकर शरण लेने पर मजबूर है।

8 मार्च 2009 को बासागुड़ा पुलिस बलों ने एक बार और इस गांव पर अपनी बर्बरता का परिचय दिया। महुआ बीन रही गांव की पांच महिलाओं और एक लड़के एमला किशोर (लिंगू) को जबरदस्ती पकड़ कर शिविर में बंदी कर दिया।

ग्रीनहंट ऑपरेशन का शिकार गोलागुड़ा

दक्षिण बस्तर डिवीजन के जेगोरगोंडा एरिया का गांव गोलागुड़ा तकरीबन 35 घरों का एक छोटा सा गांव है। सीआरपीएफ, कोबरा, एसटीएफ, कोया कमांडो हत्यारों की एक

संयुक्त टुकड़ी ने ..... 8 तारीख को सुबह-सुबह गांव को घेर लिया और गांव पर गोलियां बरसाईं। उसके बाद गांव की जनता को पकड़ कर, यातनाएं देते हुए लूट और चोरी का भोंडा प्रदर्शन कर रहे थे। इस आतंकी हमले से गांव को बचाने के लिए स्थानीय जन मिलिशिया दस्ते ने अपने पारंपरिक हथियारों के साथ उन पर हमला बोल दिया। उस समय जन मिलिशिया पर पुलिस वालों ने अंधाधुंध गोलियां दागनी शुरू कर दीं। इस गोलीबारी में जन मिलिशिया के बहादुर कमांडर कामरेड सुकलाल गंभीर रूप से जख्मी हो गए। लेकिन जन मिलिशिया ने हिम्मत न हारते हुए प्रतिरोध को जारी रखा। जब गांव की जनता ने देखा कि उनके बहादुर बच्चे दुश्मन के साथ लड़ रहे हैं और जख्मी भी हो गए हैं तो जनता में भी जोश भर गया। जन मिलिशिया को बचाने के लिए जनता खुद उनके साथ प्रतिरोध में शामिल हो गई। और जन मिलिशिया कामरेडों को सुरक्षित रिट्रीट करवाया।

लेकिन गिरफ्तार किये गए चार ग्रामीणों - सोडी सोनाल (43), सोडी भीमा (55), सोडी आयते (25) और माडवी देवा (55) को पुलिस ने बर्बरता का परिचय देते हुए गोलियों से भूनकर मार डाला। उनमें से तीन लाशों को वे अपने साथ थाने ले गए और बाद में नक्सलवादियों के मारे जाने की झूठी बात मीडिया के जरिये फैला दी। बुजुर्ग व्यक्ति माड़वी देवा की लाश को वहीं छोड़ दिया, जिनका बाद में 6 गांवों की सैकड़ों जनता ने जमा होकर अंतिम संस्कार किया।

35 जन पुलिस गुस्से के शिकार

23 नवंबर 2009 को पामेड़ एरिया के तिम्मापुरम कैंप के पुलिस वालों को रात को बम फटने की आवाज सुनाई दी। बस फिर क्या था, रात भर पुलिस वाले फायरिंग करते रहे। अगले दिन पुलिस वाले गुस्से में हड़बड़ा कर जनताना सरकार तिम्मापुरम के गांवों में वे एरिया डॉमिनेशन के लिए निकले। गांव की जनता की यह कहते हुए पिटाई शुरू कर दी कि रात में हमारे ऊपर हमला करने में कौन-कौन शामिल था। उसके बाद उन्होंने न बुजुर्ग महिलाओं को देखा, न बूढ़े आदमियों को, जो हाथ आया उसकी पिटाई शुरू कर दी। एक आदमी को पेट पर इतनी चोट आई कि मुश्किल से उसकी जान बच पाई। इस प्रकार गांव के 35 लोंगों पर पुलिस वालों ने एक बम फटने की आवाज (या भ्रम) का गुस्सा निकाला।

हर जगह कोबरा को सामना करना पड़ा बहादुर जन मिलिशिया के हमलों का

केंद्र सरकार ने 10 कोबरा बटालियनों का गठन कर जनता पर जुल्म ढाने अत्याचार-बलात्कार करने और जनता की संपत्ति को तहस-नहस करने का लाइसेंस प्रदान कर दिया है। सितंबर महीने में पालचेलमा पर भरमार कारखाना को केंद्र करके पुलिस ने बड़ा अभियान चलाकर उसे ध्वस्त करने की योजना बनाई। एसपी अमरेश मिश्रा के नेतृत्व में करीब 800 कोबरा हत्यारे इसे अंजाम देने के लिए निकले। इनके साथ सीआरपीएफ, एसपीओ, ग्रेहाउंड्स बल समन्वय के साथ किष्टारम, भेज्जी और चिंतागुफा थानों से निकले। सिंगनमड़गू, गच्चनपल्ली, एतिराजपाड़, एटेपाड, गट्टापाड़ और पालचलमा गांव पर जुल्म ढाया गया। इस हमले में पुलिस ने 12 आम जनता को मार डाला। कोबरा पुलिस जंगल में घुस चुकी है यह खबर गांवों की जनता को 17 सितंबर को ही मिल गई थी। जैसे ही खबर गांव वालों को मिली एक गांव से दूसरे गांव खबर पहुंचने में देर नहीं लगी। खबर सुनते ही जनमिलिशिया और कोया भूमकाल मिलिशिया के छापमार अपने पारंपरिक हथियारों के साथ दुश्मन का प्रतिरोध करने के लिए तैयार हो गए। भरमारों और तीर-धनुषों को पकड़कर वे दुश्मन की टोह में निकल पड़े। दूसरी तरफ हमले की संभावने वाले गांव की जनता को भी सुरक्षित जंगल में रिट्रीट करवाया गया। दुश्मन की हजारों-हजार गोलियों के बीच भी मिलिशिया ने कोबरा बलों के पांव नहीं लगने दिये। कहीं भी कोबरा वालों को बीच में आराम नहीं करने दिया। कोबरा वाले हमला करते तुरंत ही वहां से निकल जाते थे।

जनता को जब वे पकड़कर जा रहे थे तो कोलेगुड़ा नाले के पास जन मिलिशिया कामरेडों ने फायरिंग की। इस फायरिंग से कोबरा हक्के-बक्के हो गए और इसका फायदा जनता उठाई। वह उनके चंगुल से निकल कर भागने में सफल हुई। सिंगनमडगु और बुरूलंका के बीच जब पीएलजीए की मेन फोर्स हमला कर रही थी तो उसकी मदद के लिए भी जन मिलिशिया ने बहादुरी के साथ भाग लिया। कोबरा वालों को दो दिन तक जनता ने कोई खाना, पीना नहीं दिया। उनका हर तरीके से जनता ने बहिष्कार किया। जनता व जनमिलिशिया की इस बहादुरी को लाल सलाम!

एलमागोंडा में कोबरा पर हमला

चिंतागुफा थाने से एलमागोंडा गांव पर हमला करने के लक्ष्य से पुलिस बल पहुंचे। रात के अंधेरे में आकर पूरे गांव को घेर लिया। गांव वालों को पकड़ लिया और दो घरों को जला डाला। गांव वालों के करीब 9 हजार रूपये भी लूट लिये। यह खबर जनमिलिशिया को जैसे ही लगी तो जनताना सरकार स्तर के जन मिलिशिया जल्दी ही जमा होकर दुश्मनों पर टूट पड़ी। हमले को देखते हुए पुलिस वाले भागने लगे और चिंतागुफा थाने तक उनका भागना नहीं रुका। जनमिलिशिया अगर हिम्मत कर प्रतिरोधात्मक हमला करे तो गांव की रक्षा हो सकती है यह विश्वास जनता में बढ़ रहा है।

कमरगुडेम में फटा बम

जेगुरगोंडा थाने से 7 सितंबर 2009 को सीआरपीएफ व पुलिस वाले सैकड़ों की संख्या में गश्त पर निकले। जब वह गांव में पहुंचे तो गांव वालों द्वारा लगाये गए बूबी ट्रैप में फंसने से दो सीआरपीएफ वाले घायल हो गए।

प्रेशर बम से एक जवान घायल

कोंटा एरिया विंजरम कैंप से भेज्जी थाना कैंप को रसद पहुंचाने वाले पुलिसिए हमारे जन मिलिशिया द्वारा बिछाए गए प्रेशर बम की चपेट में आ गए, जिसमें एक जवान बुरी तरह जख्मी हो गया। उसको तुरंत ही हेलिकाप्टर से उठाकर ले जाना पड़ा। इस रोड के बारे में पुलिस वालों में यह कहावत प्रसिद्ध हो गई है कि इस रास्ते से बिना खून बहाये नहीं जाया जा सकता।

जन मिलिशिया ने किया विस्फोट

24 नवंबर 2009 बासागुड़ा कैंप से सीआरपीएफ, एसपीओ व पुलिस की टुकड़ी गश्ती अभियान के लिए निकली थी। गगनपल्ली और मुरकूम गांव पर हमला कर, घरों को जलाकर, गुंडम गांव के माड़वी हुंगाल की हत्या कर बासागुड़ा की तरफ बढ़ रही थी। यह घटना सुन कर मिलिशिया के लड़ाकू प्रतिरोध कार्रवाई को आंजाम देने के लिए निकले। पोतेकल जंगल में जन मिलिशिया ने 6 जगह बारूदी सुरंग लगा दी और जब दुश्मन नजदीक आया तो उसका विस्फोट किया। इसमें एक पुलिस वाला गंभीर रूप से घायल हुआ। इसके बाद वे जल्दी ही थाने की तरफ भाग गये।

मिलिशिया का हमला - पुलिस घायल

9 नवंबर 2009 को कोबरा, सीआरपीएफ व एसपीओ के करीब 600 खाकी कुत्तों की एक टुकड़ी जब ढोकपाल, टेटेमड़गू और पालोड़ी गांवों पर हमला कर, जनता को मार, घरों को जलाकर वापस जा रही थी तो जन मिलिशिया ने हिम्मत के साथ सैकड़ों कोबरा बलों के होते हुए भी उन पर फायरिंग की। इस फायरिंग में एक सीएएफ का पुलिस वाला घायल हुआ।

29 नवंबर को किस्टारम थाने के आस-पास गश्त लगा रही पुलिस पार्टी पर तीरधनुषों के साथ ही जन मिलिशिया छापामारों ने हमला किया जिसमें एक एसपीओ का सफाया हो गया।

25 सितंबर को सुबह आवापल्ली-उसुर के बीच सीतापुर गांव के पास सड़क पर जन मिलिशिया बारूदी सुरंग लगाकर घात लगाए बैठा था। जब पुलिस पार्टी नजदीक तक आ गई तो वहां विस्फोट कर दिया जिसमें एक पुलिस वाला मारा गया।

पामेड़ एरिया में विस्फोट

25 अक्टूबर 2009 को बासागुड़ा-आवापल्ली, उसूर पुलिस कैंप, सीआरपीएफ, कोबरा आतंकी बल लगभग 500 की संख्या में गांवों में आतंक फैलाने के लिए निकले थे। गांवों पर हमला कर वह जब वापस जा रहे थे तो गुंजूर गांव में जंगल में पीएलजीए की पलटन ने दुश्मन पर घात लगाकर हमला किया जिसमें एक आतंकी घायल हो गया।

2 नवंबर को आवापल्ली-बासागुड़ा के बीच बारूदी सुरंग निरोधी वाहन पर सवार सीआरपीएफ हत्यारों पर बारूदी सुरंग का विस्फोट किया गया जिसमें सीआरपीएफ के डिप्टी कमांडेट के साथ-साथ तीन पुलिस वाले घायल हुए।

कवासी हुंगा को दी मौत की सजा

दक्षिण केरलापाल एरिया में 26 सितंबर को करीब 3 हजार महिला-पुरुषों की उपस्थिति में एक जन अदालत का आयोजन हुआ। केरलापाल एरिया के गांव राबडीगुड़ा के कवासी हुंगा को, जो भेज्जी ब्लॉक आश्रम में चपरासी रहते हुए दोरनापाल एसपीओ वेट्टी पांडू के साथ काम करता था, को जनता ने मौत की सजा सुनाई।

रात के ऐंबुश में पीएलजीए के हाथों एसपीओ खत्म

9 सितंबर 2009 की रात को जन मिलिशिया के सैनिकों ने ऐंबुश लगा रखा था। रात के 2 बजे एक आदमी उसमें फंस गया। बाद में जब उससे पूछताछ की गई तो पता लगा की वह एसपीओ है और रात को गुप्तचरी करता है।

भैरमगढ़ के जांगला थाने के नजदीक गांव गोंगला है। इसी गांव का निवासी था दुष्ट पोयामी मानू। 2005 में सलवा जुडूम शुरू हुआ तो वह जुडूम में शामिल हो गया था। बाद में जांगला थाने में एसपीओ बन गया। एसपीओ बनने के बाद जांगला थाने के आसपास के गांव कोतरापाल, पोटेनार, बड़े तुंगाली, पिट्टे तुंगाली, गद्दामाली, पेंडका आदि गांवों में जो कुकर्म उसने किए थे, किसी से छुपे हुए नहीं हैं। कितनी ही महिलाओं पर अत्याचार करने, कितने ही गांवों पर हमला करने में यह दुष्ट शामिल रहा।

उसने बताया कि वह एसपीओ रहते हुए गुप्तचरी करता है। दिन भर थाने में सोता है और रात भर आसपास के गांवों में टोह लेता हुआ घूमता है ताकि पार्टी व पीएलजीए की गतिविधियों, रास्तों और डेरों का पता लगाया जा सके। जन मिलिशिया ने उसे पूछताछ करने के बाद, उसकी करतूतों को देखते हुए उसे मौत के घाट उतारना ही मुनासिब समझा।

धाकोड़ वेड़मा के जनविरोधी सामंती मुखियाओं को सजा

मलिंगेर एरिया की जनता भीषण दमन का प्रतिरोध करते हुए क्रांतिकारी आंदोलन में आगे बढ़ रही है। 2005 से एरिया के गांव-गांव में जन संगठनों का निर्माण जारी है। जन संगठनों के नेतृत्व में सामंती मुखियाओं व जमींदारों के खिलाफ संघर्ष भी शुरू हुए हैं। पारंपरिक मुखियाओं-मांझियों का शोषण बंद हो रहा है। 'न्याय' के नाम पर जनता से मुर्गे, बकरों और पैसों को ऐंठना बंद हो रहा है। गरीब किसानों की जमीनों पर कब्जा करना बंद हो रहा है।

अपनी सत्ता की चूलें हिलती देख सामंती मुखियाओं-मांझियों को भय सताने लगा। उन्होंने जन संगठन में शामिल होने वालों

को डराना-धमकाना शुरू किया। पुलिस थाने में झूठी रिपोर्टें दर्ज करवाने लगे। ऐसे ही मुखियाओं में से थे - कोतवाल मुंड्रा मुइतोर, वेल्ला डेंगाल और पोड़ियामी हुंगा। पूरे जन संगठनों को खत्म करने के इरादे रखते थे ये दुष्ट मुखिया।

विधानसभा चुनावों के दौरान जन संगठनों द्वारा किए जा रहे बहिष्कार प्रचार का इन्होंने विरोध किया। सामंती पंचायत बुलाकर जन संगठनों की कमेटी वालों की पिटाई की। सिर से खून रिसने तक उन्हें मारा। संगठन सदस्यों को नक्सली बताकर कुआकोंडा थाने में रिपोर्ट दर्ज करवाई।

जनता पर दमन चलाने वाले इन मुखियाओं के खिलाफ 18 जून 2009 को जन अंदालत का आयोजन किया गया। तीस गांव की दो हजार जनता ने इसमें भाग लिया। जन अदालत के कटघरे में मुंड्रा सेठ, पोडियामी हुंगा, ओडी लक्ष्मण, कुंजाम संतू, बोदाल, मुंड्रा मुइतोर और हुंगा (बोदा) को घसीटा गया। कोतवाल उस दिन थाने में गया हुआ था। जनता ने खुलकर पूरे जनवादी तरीके से उनकी करतूतों को बताया। संतू, बोदाल, मुंड्रा मुइतोर, हुंगा बोदा को बिल्कुल नहीं छोड़ने की जनता ने मांग की। लेकिन परिजनों ने एक बार मौका देने का अनुरोध जनता से किया। इनको चेतवनी देकर छोड़ दिया लेकिन पोडियामी हुंगा को जन अदालत में जनता ने माफ नहीं किया और जनता के आदेश पर उसे मौत की सजा दी गई।

पोडियामी हुंगा पहले बासागुड़ा एरिया में गांव गुंडम में रहता था। वहां से जनता ने उसकी जनविरोधी गतिविधियों को देखते हुए भगा दिया था। इसके दो भाई पुलिस में काम करते हैं। जनता ने उसके मर जाने पर खुशियां मनाई।

एक सीआइडी वाले का सफाया

उत्तर गड़चिरोली के कसनसूर एरिया कमेटी के अंतर्गत पीएलजीए बलों ने एक सीआइडी वाले का सफाया कर दिया। पागल का ढोंग करते हुए हमारे ठिकानों की टोह लेने वाले को पीएलजीए बलों ने शक के आधार पर गिरफ्तार किया। जब उसके साथ गहन पूछताछ की तो उसने माना की गड़चिरोली एसपी के अधीन वह काम करता है और एसपी ने उसे तीन लाख रूपये देने का वायदा किया था। वह बिहार का निवासी था।

इसी एरिया कमेटी के अतंर्गत आने वाले गांव करेनार का एक और मुखबिर था सोमजी कुमोटी। दवाइयों की बॉक्स लेकर वह हमारे ठिकानों की तलाश में रहता था। जनता अगर उससे पूछती तो 'दादा लोगों ने मुझे दवाई लाने के लिए कहा है' बोलता था। जब इसकी खबर पीएलजीए बलों को मिली कि जनता को गुमराह कर एक शख़्स घूम रहा है तो उसे पकड़ लिया गया। पूछताछ के बाद पता चला कि बांदे थानेदार ने उसे 10 हजार रूपये के बदले यह काम सौंपा है। उसे 17 सितम्बर 2009 को जनता की सहमति से उसे खत्म कर दिया गया। इसी दिन जन अदालत ने एक और मुखबिर जीजावंडी गांव के शंकर को मौत की सजा सुनाई गई। वह लंबे समय ते जनविरोधी कार्यों में शामिल था। कई बार उसे समझा-बुझा कर जमानत पर छोड़ा जा चुका था। लेकिन जब वह अपनी जन विरोधी हरकतों से बाज नहीं आया तो जनता ने उसे मौत की सजा सुनाई।

सी-60 का कुत्ता पोयम नागेश को मौत

सिरोंचा एरिया में आने वाले गांव कोप्पेला के जनविरोधी सी-60 हत्यारे को स्थानीय छापामार दस्ता ने गोली से उड़ा दिया। यह कार्रवाई 28 सितंबर 2009 की रात में अंजाम दी गई।

कोप्पेला गांव का नागेश 10-12 साल पहले सी-60 कमाण्डो सरकारी हत्यारे गिरोह में भर्ती हुआ था। स्थानीय युवक होने के कारण जंगल पर उसकी अच्छी खासी पकड़ थी, इसलिए उसे कमांडो बलों के पाइलेट के तौर पर रखा जाता था। सिरोंचा एरिया में जनशक्ति पार्टी पर किये गए हर हमले में उसके शामिल होने की बात सामने आई है। 2002 में असरेल्ली रेंज के जंगल में जब जनशक्ति का एक दस्ता डेरा डाले हुये था, तो नागेश के नेतृत्व में शिकारी के ढोंग में कमांडो बल आकर तीन कामरेडों को मार डाला था। 2003 दिसंबर में पत्तागुडेम जंगल में जनशक्ति के एक दस्ते पर हमला किया गया था जिसमें 5 कामरेड (एक डीवीसीएम सहित) शहीद हो गए थे। इसमें भी यह हत्यारा शामिल था। सिरोंचा एरिया की जनता पर भी उसने कई अकथनीय जुल्म ढाये थे। आम जनता को तंग करता था कि तुम नक्सलवादियों की मदद करते हो। जंगल में बैल चराने वालों को भी नहीं बख़्शता था। उनसे दस्ते का पता करने के लिए दबाव डालता था। अपने नाते-रिश्तेदारों को भी पैसों का लालच देकर मुखबिर बनाने में उसे महारत हासिल थी। ऐसे जनविरोधी के सफाये से जनता को बहुत राहत मिली।

महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव बहिष्कार

अहेरी एरिया में विधानसभा चुनाव बहिष्कार का पूरे एरिया में प्रचार किया गया। डीएकेएमएस, केएएमएस और सीएनएम की तरफ से अलग-अलग पर्चों का प्रकाशन कर जनता से चुनाव बहिष्कार करने की अपील की और चुनाव बहिष्कार क्यों करना इस बारे में अपनी बात रखी। चार गांवों में जनता ने चुनावों की खिलाफत करते हुए रैलियां निकालीं। रैलियों में सैकड़ों जनता ने भाग लिया। इसके अलावा 10 गांवों में आमसभाओं का आयोजन किया गया। महिला-पुरुषों ने अच्छी संख्या में इसमें भाग लिया।

13 अक्टूबर को होने वाले चुनावों के खिलाफ ब्यूरो सीएनएम टीम के साथ स्थानीय सीएनएम टीमों ने मिलकर टिप्रागढ़ एरिया में 1 सितंबर से चुनाव बहिष्कार प्रचार अभियान का आगाज किया जो चुनाव के दिन तक चलता रहा। झूठे विधानसभा चुनावों की पोल सीएनएम टीमों ने अपने गीतों और नाटकों के माध्यम से बखूबी खोली और जनता पर इसका अच्छा असर पड़ा। सीएनएम द्वारा किये गए कार्योक्रमों में दो हजार के करीब महिला-पुरुषों ने भागीदारी की। ★

दरभा डिवीजन में जनता पर जारी सरकारी अर्ध सैनिक बलों व पुलिसिया आतंक के खिलाफ उठ खड़े हों!

दरभा डिवीजन के मलिंगेर एरिया में जनता पर प्रतिक्रियावादी राज्य के पुलिस बल भीषण आतंकी हमले कर रहे हैं। बैलाडिला के पहाड़ लौह खनिज से भरपूर हैं। इसे लूटने के लिए एस्सार जैसे बड़े पूंजीपति दिन-रात एक किए हुए हैं। हर रोज उसकी पाइप लाइन से 23 हजार टन लोहा ले जाया जा रहा है। वहीं एनएमडीसी इस इलाके से हर रोज 10 हजार करोड़ रूपये के लोहे का दोहन कर रही है। विकास की दुहाई देने वाली केंद्र व राज्य सरकार का सारा ध्यान इस इलाके को उजाड़ने पर केंद्रित है। अपने पहाड़ों को बचाने के लिए लड़ रही जनता को वह कानून के राज के नाम पर फासीवादी लौह बूटों तले कुचल रही है।

दंतेवाड़ा जिले के कुआकोंडा व सुकमा ब्लॉकों के गांवों को मिलाकर मलिंगेर एरिया बनता है। इस एरिया में क्रांतिकारी आंदोलन का विस्तार जनता की मांग व आकंक्षा के अनुरूप 2005 में हुआ है। जनता के संघर्ष को कुचलने के लिए सरकार ने 2006 में आरनपुर और पालनार में पुलिस कैंप और 2008 मई में भूसारास में कैंप खोल कर अर्ध सैनिक बलों के आतंकियों को तैनात किया। इन तैनातियों से जनता पर मानों मुसिबतों व दमन का पहाड़ ही टूट पड़ा हो। हर दिन जनता को मारने-पीटने और बेवजह तंग करने की खबरें आम हैं।

यह सब तब और भी तेज हो गया है जब एस्सार कंपनी ने धुरली में स्टील कारखना बनाने का प्रयास शुरू किया है। इसके साथ ही कुछ निजी कंपनियों ने गुमियापाल में लौह अयस्क खोजने के लिए खुदाई शुरू की है। इसी इलाके में स्थित खदानों को टाटा, एस्सार, जिंदल जैसे दलाल बड़े पूंजीपतियों में पट्टे पर लेने के लिए होड़ शुरू हुई है। इनके लिए रास्ता साफ करने के लिए, जनता के संभावित विरोध को दबाने के लिए यहां पर बैलाडिला हिलटॉप, किरंदुल और बचेली टाउनशिप को मिलाकर अर्ध सैनिक बलों की एक बटालियन तैनात की गई है। इसके अलावा सीआइएसएफ (केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल) भी अलग से तैनात है। ये सब पुलिस के साथ मिलकर जनता पर कहर बरपा रहे हैं ताकि इनके आकाओं की लूटखसोट के खेल में कोई बाधा न पहुंचे।

किरंदुल में एक एसडीओपी का मुख्यालय है। भांसी थाने में गिरफ्तार किए जाने वाले निर्दोष लोगों को यातनाएं देने के लिए पुलिस फोर्स इसे यातना शिविर के रूप में प्रयोग कर रहे हैं। किरंदुल, बचेली और भांसी को पुलिस फोर्स केंद्र बनाकर बैलाडिला पहाड़ों पर जुल्म चलाने के लिए मुखबिरों का नेटवर्क तैयार किया जा रहा है। आसपास के एरिया की जानकारी रखने वाले एसपीओ व गोपनीय सैनिकों को यहां पर तैनात किया जा रहा है। फरवरी-मार्च 2009 से यहां फासीवादी रमन सरकार का दमन और भी तेज हुआ है। सरगुजा में कई पार्टी कार्यकर्ताओं को झूठी मुठभेड़ों में मारने वाले और कई महिलाओं के साथ बलात्कार करने वाले हत्यारे व अत्याचारी एसपी एसआरपी कलूरी को वर्तमान में दंतेवाड़ा और बीजापुर जिलों का डीआईजी के रूप में प्रमोट कर पदस्थ किया गया है।

सलवा जुडूम के गुंडों, एसपीओ, कोया कमांडो, एसटीएफ को एकजुट कर दंतेवाड़ा के कोंटा, सुकमा, कुआकोंडा, कटेकल्याण और छिंदगढ़ तहसील के गांवों पर जुल्म बरपाने के लिए प्रशासन व सरकार ने खुली छूट दे रखी है। दूसरी ओर सीआरपीएफ व कोबरा कमांडो फोर्स दंतेवाड़ा को केंद्र बनाकर जुल्म-जबर चला रही है।

अर्ध सैनिक बलों व विभिन्न सरकारी सशस्त्र बलों द्वारा 27 फरवरी को गादीरास से निकलकर, नांगेलगुड़ेम, वाड़कापल्ली, दीक्काम, गुप्पीड़ी, गरगढ़ आदि गांवों पर हमला कर गरगढ़ के पास नांगेलगुड़ेम के पास केएएमएस की अध्यक्षा कामरेड मड़कम मासे को गिरफ्तार कर थाने में यातनाएं देकर फर्जी मुकदमा बनाकर जेल भेज दिया।

मार्च माह में 26 तारीख को सरकारी सशस्त्र बल दंतेवाड़ा से सीधे पालनार होते हुए रेवाली, बुरगुम, गोंदापल्ली, बड़ेशेटी होते हुए केरलापाल, दोरनापाल की ओर गए। बीच में दो रात बिताई। फोर्स ने इस अभियान में बेकसूर गांव वालों की बेरहमी के साथ पिटाई की। लोगों से दस्ता की खबर पाने के लिए जुल्म बरसाया गया।

15वीं लोकसभा के चुनावों के दौरान यह अभियान और भी तेज हुआ। गांव पर हमला कर जनसंगठन सदस्यों की धरपकड़ के लिए अभियान चलाया गया। 6 अप्रैल को दंतेवाड़ा से आतंकी सुरक्षा बलों ने गश्त शुरू की जो नकलुनार, पालनार होते हुए समेली, नीलावाया, पोटली, बुरगुम, वाड़कापल्ली होते हुए दोबारा दंतेवाड़ा गई। बीच में एक जगह पर पीएलजीए ने उन पर हमला किया। हमले के बाद गांव वालों को जमा कर बंदूक के कूंदों से बेरहमी के साथ पीटा गया।

लोकतंत्र की पोल और तब खुल गई जब 9 अप्रैल को चुनाव बहिष्कार का पर्चा बांट रहे एक जनमिलिशिया कार्यकर्ता कुंजाम भीमा को सशस्त्र बलों ने गोलियों से भून डाला। बाद में उसके शव को भी पुलिस ने लापता कर दिया। अभिव्यक्ति की 'स्वतंत्रता' की गारंटी भारत के झूठे लोकतंत्र में यही है। जहां एक तरफ आजादी का ढिंढोरा पीटा जाता है वहीं दूसरी ओर अपने विचारों को व्यक्त करना भी यहां पर अपराध है।

12 अप्रैल को किरंदुल से 110 कोया कमांडो और एसपीओ ने किच्चे नंदा के नेतृत्व में हिरेली, गुमियापाल, कुटरेम और ओमलवार में गश्त पर निकल कर जुल्म बरपाए। मलिंगेर एरिया कमेटी के सदस्य कामरेड भास्कर के साथ कामरेड राजू और सन्नू को पकड़कर मड़कामगुड़ेम के पास झूठी मुठभेड़ में इनकी हत्या कर दी। इनमें से एक सन्नू एनएमडीसी बैलाडिला खदनों में मजदूरी का काम करता था। पर पुलिस ने उसे भी नहीं

बख्शा।

16 अप्रैल को यानी मतदान के ढकोसले के दिन पीएलजीए ने आतंकी बलों पर माड़ेकगांव के पास हमला किया था। इस हमले के बाद कई बार कोर्रा, मुरली और माडेक गांवों पर पुलिस द्वारा हमला कर लोगों की पिटाई की गई। ऐंबुश की जगह पर आकर जनता में दहशत पैदा करने के लिए कई बार फायरिंग की।

20 से 29 अप्रैल तक आरनपुर, जेगोरगोंडा, पालनार और किरंदुल के बीच के गांवों में एरिया डॉमिनेशन अभियान चलाया गया। पुलिस ने इस दौरान कई गांवों को खाक में मिला दिया। इस ऑपरेशन में कोया कमांडो, एसपीओ, एसटीएफ के साथ पुलिस बल ने हिस्सा लिया। इन्होंने काकाड़, पोटाली, माड़ेदा, कोंडासवाल, परलाम, बैयम, बड़ेपल्ली, गुमियापाल, हिरोली, कुटरेम गांवों पर हमले किए। बैयम और बड़ेपल्ली गांवों को जलाकर राख कर दिया। कुछ गांवों पर अंधाधुंध फायरिंग की गई। कई आम लोगों को गिरफ्तार कर किरंदुल थाने में ले जाकर यातनाएं दी गईं। कुछ लोगों पर झूठे केस दर्ज कर जेलों में ठूंस दिया गया।

आरनपुर गांव में 2006 में पुलिस कैंप लगाया गया था। तब से लेकर अब तक वहां पर अघोषित कर्फ्यू लगा रहता है। आसपास के रिश्तेदारों का भी गांव में जाना मुश्किल हो गया है। गांव वालों को हर काम पुलिस की इजाजत से ही करना पड़ता है। अप्रैल में एक युवती जब कुएं पर पानी के लिए गई तो वहीं पर पकड़कर पुलिस ने उसकी पिटाई की। उसके साथ अत्याचार कर थाने में ले जाकर यातनाएं दी गईं। बाद में जनता ने संघर्ष कर पुलिस के चंगुल से इस युवती को छुड़वा लिया। वर्तमान में अरनपुर गांव के लगभग 10 लोग विभिन्न फर्जी केसों में जेल में सजा काट रहे हैं।

मई महीने में माठपर, दका, हिरोली, गुमियापाल, मड़कामगुड़ेम और कुटरेम गांवों पर कोया कमांडो व अन्य सशस्त्र बलों ने हमला किया। लोगों में दहशत पैदा करने के लिए मारपीट की। घरों से जनता के मुर्गे, बकरियां, दारू, पैसे आदि लूटकर अपने साथ ले गए।

7 जून को रात्रि के दस बजे गुमियापाल गांव के ऊपर हमला किया गया। 15 निर्दोष लोगों को पुलिस वाले रस्सियों से बांध कर ले गए और बाद में किरंदुल स्थित यातना शिविर में ले जाकर खूब यातनाएं दीं। समलवार, कुटरेम, आलनार के हजारों ग्रामीणों ने किरंदुल थाने का घेराव कर उन्हें छोड़ने की मांग की। इस घेराव में जनता ने अपनी खेती-कमाई छोड़कर दूध मुंहे बच्चों को भी साथ लेकर भाग लिया। जनता के गुस्से और ताकत को देखते हुए 14 लोगों को पुलिस को छोड़ना पड़ा। एक अन्य ग्रामीण कुंजाम भीमा को संगम सदस्य होने का आरोप लगाकर जेल भेज दिया गया।

लेकिन घेराव करने वाले गांवों पर 23 जून को दोबारा पुलिस ने हमला किया। कई ग्रामीणों की पिटाई की गई जो घेराव में शामिल हुए थे। महिलाओं के साथ पुलिस ने इस दौरान बदसलूकी भी की। तीसरी बार फिर 22 जुलाई को इन गांवों पर हमला किया गया।

दंतेवाड़ा, नकुलनार और किरंदुल से पुलिस बलों ने बड़े वेड़मा गांव के ऊपर 20 जून और फिर 15 जुलाई को हमले कर ग्रामीणों की पिटाई की। इस गांव के तीन लोगों को फर्जी केसों में फंसाकर जेल में ठूंस दिया।

जुलाई में हमले करने का मकसद डिवीजन में मानाए जाने वाले शहीद सप्ताह के आयोजनों को विफल करना था। इसी के तहत 30 जुलाई को पालनार, वेड़मा, पोरूगादेम और माडेक गांवों पर कोया कमांडो, सीआरपीएफ व पुलिस बलों ने मिलकर हमला किया और जनता की पिटाई की। घर में रखे पैसे, जेवरात लूटकर भी ले गए। कई घरों से मुर्गे उठाकर ले गए।

अगस्त 5 से 10 तारीख के बीच फिर वेड़मा, महाराकरण, काईलम, मोखपाल, बड़ेगुडरा और भूसारास गांवों पर पुलिस का कहरा बरपा और कुछ लोगों को झूठे केस लगाकर जेल भेज दिया गया।

15 अगस्त को कोया कमांडो ने समेली, देवाल, बुरगूम सोपूम, गोंडेरास और पोटाली गांवों पर हमला किया। जो भी सामने आया उसकी पिटाई की गई। सोपूम गांव में तीन घरों में आग लगाकर पैसा आदि लूटकर ले गए। घरों में मुर्गे और बर्तनों तक को आतंकी पुलिस वालों ने नहीं छोड़ा।

19-20 अगस्त को सीआरपीएफ, कोया कमांडो व जिला पुलिस बल के जवानों ने माडेक गांव पर आतंक मचाया। निरीह ग्रामीणों को पीटा गया। घरों से सब कुछ लूटकर ले गए। जनसंगठन के सदस्यों को पकड़ने के नाम पर ऐसी आतंकी कार्रवाइयों को सशस्त्र बलों द्वारा अंजाम दिया जा रहा है। इसी तरह कटेकल्याण एरिया के गुडसे, सूरनार, डब्बा गांवों पर 20 जुलाई को कहर बरपाया गया। तमाम हदें पार करते हुए बुर्जुग महिला-पुरुषों को भी नहीं बख्शा गया। उन पर भी डंडे बरसाए गए। घरों को लूटते समय महिलाओं के साथ छेड़खानियां की गईं। इसके खिलाफ जिला मुख्यालय में जिला आयुक्त के सामने विरोध प्रदर्शन भी किया। शहीद सप्ताह मनाए जाने की खबरें जब दंतेवाड़ा में सरकारी आतंकियों को मिली तो वो पूरी तरह जल-भुन उठे। 6 व 9 अगस्त को जीयाकोड़ता, एटेपाल, डोंगरीपारा, बड़ेगुडरा, छोटे गुड़ेम गांवों पर हमला किया गया। कोलेंग एरिया में भी कोकावाड़ा एंबुश के बाद गांवों पर पुलिस का आतंक बढ़ गया है और गश्त के नाम पर निर्दोष ग्रामीणों की पिटाई जारी है।

दरभा डिवीजन की जनता पर जारी यह पुलिस आतंक केंद्र व राज्य सरकारों के द्वारा बड़े पूंजीपतियों व साम्राज्यवादी कंपनियों को वहां के जल-जंगल-जमीन व खनिज संपदा को लूटने के लिए खुली छूट प्रदान करने के लिए ही किया जा रहा है। हम देश के बुद्धिजीवियों सहित तमाम मेहनतकश तबकों को इस दमन का विरोध करने का आव्हान करते हैं। जनता से हमारी अपील है कि इसके खिलाफ जन आंदोलन की राह पकड़ कर विरोध करें। ★

महान भूमकाल दिवस मनाया गया

महान भूमकाल, माड़िया राजस्थापना दिवस का यह सौवां वर्ष है। जनता ने 2009 के 10 फरवरी को पूरे दण्डकारण्य भर में इसे जनताना सरकारों को विस्तार करने और फैलाने के नारे के साथ व्यापक रूप से मनाया गया। जगह-जगह पर रैलियों और आमसभाओं का आयोजन किया गया।

गड़चिरोली डिवीजन के टिप्रागढ़ इलाके में बड़े पैमाने पर मनाने का निर्णय एरिया कमेटी ने लिया। 1 फरवरी को मरकागांव में पीएलजीए के द्वारा सफलतापूर्वक किए गए हमले में 15 पुलिस वाले मारे गए थे, जिसके बाद पूरे इलाके को सैनिक छावनी के रूप में बदल दिया गया था। लेकिन दमन के बावजूद भी एरिया की जनता ने क्रांतिकारी उत्साह व जोश के साथ इस दिवस को मनाया। 10 फरवरी को पीएलजीए बलों की सुरक्षा में एक आमसभा का आयोजन किया गया जिसमें सैकड़ों की संख्या में ग्रामीणों ने भाग लिया।

माड़ डिवीजन के कुतुल एरिया के गांव-गांव में महान भूमकाल जनता ने मनाया। कुछ जनताना सरकारों को मिलकर एक जगह पर रैली व आमसभा का भी आयोजन किया गया। पुरे एरिया में कुतुल, कोहकामेट्टा, परलकोट, नईबेरड़ आदि में लगभग 10 सभाएं आयोजित हुईं। कई गांवों में रात भर जन सांस्कृतिक कार्यक्रम चलते रहे। जनताना सरकार व जनसंगठन के नेताओं ने इन सभाओं को जोशीले अंदाज में संबोधित किया। माड़ डिवीजन पर आने वाले दमन के खिलाफ जनता को तैयार रहने, उसका दृढ़ता के साथ मुकाबला करने के लिए जनता से आव्हान किया गया।

उत्तर बस्तर डिवीजन के रावघाट व परतापुर इलाके में महान भूमकाल दिवस 'माड़िया राज स्थापना दिवस' कई जगहों पर मनाया गया। भूमकाल विद्रोह के दौरान शहीद हुए जननेताओं की याद में उनकी विरासत जारी रखने के लिए शहीद स्मारक बनाए गए और जनताना सरकार के अध्यक्षों ने सभाओं को संबोधित किया। गांव-गांव में सभाएं भी आयोजित की गईं।

पश्चिम बस्तर के कोंटा एरिया में इस अवसर पर रैली, जुलूस आदि निकालकर महान भूमकाल के दौरान शहीद हुए योद्धाओं को लाल श्रद्धांजली अर्पित की गई। सभा में डिवीजन सीएनएम के कलाकारों ने शहीदों के संदेश को जनता तक अपने गीतों और नाटकों के जरिये पहुंचाया।

केरलापाल एरिया में लगभग 6 हजार जनता ने आमसभा में पहुंचकर महान भूमकाल की विरासत को जारी रखने के लिए नारे लगाए। सभा से पहले जोरदार रैली का आयोजन किया गया।

जेगुरगोंडा एरिया में तीन जगहों पर जनसभाएं आयोजित की गई, जिसमें हजारों जनता ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई।

पामेड़ एरिया में दो जगहों पर आमसभाएं हुईं। यह सभाएं दोपहर 12 बजे शुरू होकर, रैली निकाले हुए शाम तक बेरोकटोक चलती रहीं। भूमकाल के जन नायक गुंडादूर व परालकोट विद्रोह के जन नायक गेंदसिंह पर सीएनएम ने नाटक व गीत प्रस्तुत किए जिसने जनता में जोश भर दिया।

सभी जनसभाएं जनमिलिशिया और पीएलजीए बलों की कड़ी सुरक्षा के बीच संपन्न हुईं। सरकारी सुरक्षा बल जनता को अपने इतिहास को भी याद नहीं करने देते। हर सभा को विफल करने की उनकी पूरी कोशिश रहती है, लेकिन जनता अपने कार्यक्रमों को यूं ही दमन के बीच सफल करती रही है और करती रहेगी।

कामरेड जानकी दीदी (अनुराधा गांधी) के आदर्शों को ऊंचा उठाए रखने की प्रतिबद्धता के साथ...

दण्डकारण्य में मना 8 मार्च!

8 मार्च अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक महिला दिवस 2009 को कामरेड अनुराधा गांधी (जानकी दीदी) हमारी केंद्रीय कमेटी की सदस्य को याद करते हुए, उनके आदर्शों और लक्ष्य को ऊंचा उठाते हुए मनाने का आव्हान हमारी उच्च कमेटी ने किया था। पूरे दण्डकारण्य भर से उसे मनाए जाने के समाचार हमें प्राप्त हुए हैं।

पूर्व बस्तर डिवीजन के केसकाल इलाके में हुई आमसभा में 8 हजार के करीब जनता ने भाग लिया। दर्जन भर लोक सांस्कृतिक टीमों ने अपनी कला का प्रदर्शन कार्यक्रम में किया। 8 मार्च को शुरू हुआ कार्यक्रम 9 मार्च की सुबह तक चलता रहा।

वायनार एरिया में कामरेड जानकी दीदी की याद में एक शहीदवेदी का निर्माण किया गया। शहीदवेदी का अनावरण क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन की ग्राम अध्यक्षा ने किया। वहां पर हुई सभा में डेढ़ हजार करीब महिलाओं ने व दो हजार के करीब पुरुषों ने भाग लिया। आमसभा से पहले जोरदार रैली निकाली गई, जिसमें 'कामरेड अनुराधा गांधी अमर रहें', 'उनके सपनों को साकार करेंगे' के नारे गूंजते रहे। कुदुर एरिया, इनामेटा, आदेबेड़ा में भी आठ मार्च मनाया गया।

दक्षिण बस्तर के पामेड़ एरिया में क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन की तरफ से आमसभा का आयोजन किया गया। कामरेड अनुराधा गांधी (जानकी दीदी) के जीवन पर प्रकाश डालते हुए, उनसे प्रेरणा लेने पर जोर देते हुए वक्ताओं ने अपनी बात रखी। इसमें 4 हजार जनता ने भाग लिया जिसमें महिला-पुरुषों की संख्या लगभग बराबर थी। किस्टारम एरिया में हजार के करीब जनता ने आमसभा में शामिल होकर कामरेड जानकी दीदी

को याद किया। जेगोरगोंडा एरिया में 40-50 गांवों की जनता ने आठ मार्च पर आमसभाओं का आयोजन किया। क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन, चेतना नाट्य मंच सहित डीएकेएमएस ने सभाओं को सफल बनाने के लिए कड़ी मेहनत की व प्रचार अभियान चलाया। कोंटा एरिया में सलवा जुडूम के दमन अभियान के बीचोंबीच आठ मार्च पर जनसभाओं का आयोजन किया गया। दसियों गांवों की जनता ने आयोजनों में भागीदारी की। केरलापाल एरिया में आठ मार्च से सप्ताह भर पहले ही प्रचार अभियान शुरू किया गया था। सीएनएम की टीम ने आमसभा में महिला समस्या पर केंद्रित गीतों, नाटकों व नृत्य का प्रदर्शन किया।

पश्चिम बस्तर - कामरेड जानकी दीदी के आदर्शों को ऊंचा उठाते हुए कैलेंडर, पोस्टर, पर्चे, पुस्तिकाएं पूरी डिवीजन में गांव-गांव में वितरित किए गए। आठ मार्च के इतिहास व जानकी दीदी द्वारा भारत की क्रांति के लिए निभाई गई आदर्श भूमिका के बारे में प्रचार करने के लिए केएएमएस के नेतृत्व में एक दर्जन के लगभग प्रचार टीमों का गठन किया गया। 2 मार्च से 8 मार्च तक हर्षोल्लास के साथ गांव-गांव में मीटिंगें आयोजित की गईं। मीटिगों व रैलियों का नेतृत्व डिवीजन, एरिया केएएमएस की महिला कार्यकर्ताओं ने किया। 'कामरेड जानकी दीदी अमर रहें' और 'दुनिया भर में महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ लड़ाई करो' के नारे तमाम सभाओं में गूंजते रहे।

गंगालुर एरिया में 17 जगह, मद्देड़ एरिया में 6 जगह, भैरमगढ़ में 10 जगह और नेशनलपार्क एरिया में 3 जगहों पर आमसभाएं आयोजित की गईं।

माड़ डिवीजन के कुतुल एरिया में आठ मार्च हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कुतुल एरिया के गांव गुम्मरका, वकुड़, मुहंदी, नीरामेट्टा, कोसपड़का आदि गांवों में जनसभाओं का आयोजन किया गया।

गड़चिरोली के चातगांव एरिया में भी जनसभाएं आयोजित हुईं। कामरेड जानकी दीदी पर केएएमएस द्वारा जारी पर्चे को व्यापक रूप से एरिया में वितरित किया गया। कामरेड जानकी दीदी द्वारा महिलाओं के लिए किए गए जीवनभर के संघर्षों को जनता में ले जाया गया।

गड़चिरोली के टिप्रागढ़ इलाके में आमसभा व सेमिनारों का आयोजन किया गया जिसमें दमन की परवाह न करते हुए महिलाओं ने बड़ी संख्या में भागीदारी की। जनसभा में वक्ताओं ने कामरेड जानकी दीदी के आदर्शों पर अपनी बात केंद्रित रखी। वहीं सलवा जुडूम के खिलाफ व गड़चिरोली में महिलाओं पर क्रैक कमांडो व पुलिस बलों के जारी बर्बर दमन के खिलाफ भी बात रखी। उनका मुकाबला करने व उसके खिलाफ जन आंदोलन को तेज करने पर वक्ताओं ने जोर दिया।

उत्तर बस्तर डिवीजन के रावघट एरिया कमेटी के अंतर्गत आने वाले डोबरी, सीतापुर और चारगांव एलओएस इलाकों में भी आठ मार्च धूमधाम से मनाया गया। डोबरी एरिया के सम्बलपुर गांव में हुई सभा में 2000 महिलाओं और सैकड़ों पुरुषों ने भाग लिया वहीं सीतापुर और चारगांव में भी सैकड़ों जनता पहुंची।

23 मार्च - साम्राज्यवाद विरोधी दिवस

गड़चिरोली के टिप्रागढ़ इलाके में सभी जनताना सरकारों में शहीद भगतसिंह, राजगुरू और सुखदेव की शहादत दिवस को साम्राज्यवाद विरोधी दिवस के रूप में मनाया गया। वक्ताओं ने कहा कि जिस उद्देश्य के लिए उन्होंने शहादतें दी थीं, भारत के दलाल शासक वर्गों के हाथों सत्ता के हस्तांतरण के कारण वह उद्देश्य पूरा नहीं हुआ है। हमारे इलाके की खनिज व वन संपदा को विदेशी कंपनियों के हवाले किया जा रहा है।

चातगांव एरिया में भी साम्राज्यवाद विरोधी दिवस को मनाते हुए जनसभा की गई। इस दिवस पर नौजवानों को बड़े पैमाने पर शहीद भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरू के सपनों को पूरा करने के लिए पीएलजीए में भर्ती होने का आव्हान किया गया।

जन पीतुरी सप्ताह मनाया जनता ने

5 जून 2005 को सलवा जुडूम फासीवादी दमन अभियान की शुरूआत भारत के दलाल शोषक-शासक वर्गों ने जनता के जायज आंदोलन को खून की नदियों में डुबोकर खत्म करने के नपाक इरादों के तहत की थी। लेकिन दण्डकारण्य की क्रांतिकारी आदिवासी जनता ने माओवादी पार्टी के नेतृत्व में, पीएलजीए, जनमिलिशिया की मदद से इसका मुंहतोड़ जवाब दिया है। इसके लिए दण्डकारण्य की जनता ने अपने कोया भूमकाल मिलिशिया का गठन किया। सलवा जुडूम फासीवादी अभियान के खिलाफ दण्डकारण्य की जनता जून 5 से जनपीतुरी सप्ताह के रूप में मनाती आ रही है। जनपीतुरी का अर्थ है जनता की लड़ाई।

जन पीतुरी सप्ताह के मौके पर पश्चिम बस्तर डिवीजन में 5 जून से लेकर 11 जून तक दर्जनों सभाओं का आयोजन किया गया। गंगालूर इलाके में इस अवसर पर 16 जगहों पर जनसभाओं में जनता ने सप्ताह भर भागीदारी की। जन मिलिशिया ने कई जगह सरकारी संपत्ति को नुकसान पहुंचाते हुए कई तोड़फोड़ की कार्रवाइयों को अंजाम दिया।

मद्देड़ एरिया में सलवा जुडूम का विरोध करते हुए लगभग डेढ़ हजार जनता ने जनमिलिशिया व पीएलजीए के नेतृत्व में बीजापुर-भोपालपट्टनम जाने वाले रोड पर गड्ढे खोद कर तहस-नहस कर डाला। ✶

पाठकों से अपील

'प्रभात' को रिपोर्टें समय पर भेजते रहें। रिपोर्टों में तारीख, स्थान, डिवीजन आदि का विवरण जरूर लिखें। जिन शहीदों की जीवनियां 'प्रभात' में प्रकाशित नहीं हो सकीं, उनके बारे में जरूर लिखकर भेजें। 'प्रभात' पर अपने सुझाव लिखें।

- सम्पादकमण्डल

28 जुलाई - शहीद सप्ताह

पूरे दण्डकारण्य में शहीदों को याद की जनता ने

भारत में जनता की मुक्ति के लिए जारी जनयुद्ध में कई पार्टी नेताओं, दसियों वीर योद्धाओं, कमांडरों, जनताना सरकार, जनसंगठन के नेताओं और आम जनता सहित 205 कामरेडों ने 2008 अगस्त से लेकर 2009 तक अपने अनमोल प्राणों की आहुति दी है। जिनमें भारतीय क्रांति के महान नेता, केंद्रीय कमेटी सदस्य व खुफिया विभाग के प्रमुख कामरेड पटेल सुधाकर रेड्डी से लेकर क्रांतिकारी जनता तक शामिल हैं। दण्डकारण्य में लगभग डेढ़ सौ कामरेडों व जनता ने अपने प्राणों का बलिदान दिया है, और क्रांति की ज्योति को जलाए रखा है। इस दौरान फासीवादी सरकारों ने अपने भाड़े के टट्टुओं के दम पर कई नरसंहारों को अंजाम दिया जिसमें निर्दोष आदिवासी जनता का कत्ल किया गया। उन सभी के सपनों को पूरा करने व दण्डकारण्य के आंदोलन को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाने की शपथ लेते हुए दण्डकारण्य भर से शहीदी सप्ताह के दौरान हुई रैलियों और सभाओं की रिपोर्टें हमें प्राप्त हुई हैं। माड़ डिवीजन में इस अवसर पर नक्सलबाड़ी से लेकर अब तक शहीद हुए तमाम वीर योद्धाओं की याद में एक शहीद स्मारक का निर्माण किया गया।

उत्तर गड़चिरोली डिवीजन के कसनसुर एरिया व सूर्जागढ़ एरिया में लगभग 15-20 गांवों की जनता ने अपने-अपने स्तर पर शहीदों की याद में आमसभाओं का आयोजन किया और शहीदों को श्रद्धासुमन अर्पीत किया। जनमिलिशिया कामरेडों ने गांव-गांव में और सड़कों पर बैनर और पोस्टर लगाकर जबर्दस्त प्रचार अभियान चलाया। सभी शहीद स्मारकों को सजाकर पुलिस के जालिम दिलों को जला डालने वाला प्रचार अभियान चलाया। अमसभाओं में 1700 जनता ने भाग लिया जिसमें महिलाओं की भागीदारी 500 के करीब थी।

पीएलजीए बलों ने जहां-जहां वे थे गांव की जनता के साथ शहीदों की स्मृति सभाओं का आयोजन किया। दुश्मन के दमन के बीचोंबीच जो स्मारक ढहा दिये गये थे उनकी जगह पर नये स्मारक बनाकर जनता ने सभाओं का आयोजन किया।

सभाओं में जनता ने शहीदों के सपनों को पूरा करने की शपथ ग्रहण की और उनकी अधूरी लड़ाई को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया।

पेरमिली एरिया में साल भर में शहीद हुए कामरेडों को याद करते हुए महीने भर प्रचार अभियान चलाया गया व उनके सपनों व आदर्शों को जनता तक ले जाया गया। कई जगहों पर जनता के साथ आमसभाओं का आयोजन किया गया। एक गांव में कामरेड पटेल सुधाकर की याद में शहीद स्मारक का निर्माण कर आमसभा का आयोजन किया गया। सभा में आई सैकड़ों जनता ने अपने प्राण प्रिय नेता को श्रद्धांजली अर्पित की। सीएनएम कामरेडों ने पूरे प्रचार अभियान में अहम भूमिका निभाई और शहीदों के बारे में जनता में गीत, नाटक, पीटो आदि के जरिये में प्रचार किया।

31 जुलाई को एक गांव में कामरेड जानकी दीदी की याद में स्मारक बनाकर आमसभा का आयोजन किया गया। 1 अगस्त को एक अन्य गांव में 600 लोगों ने सभा में भागीदारी की। पूरे एरिया में पांच जगह शहीद स्मारकों का निर्माण किया गया।

दक्षिण बस्तर - सिंगारम जन शहीदों की स्मृति में पूरी दक्षिण बस्तर डिवीजन में आमसभाओं का आयोजन किया गया। आमसभाओं में जनता ने अपने प्रिय नेताओं, बहादुर बेटों और शहीद हुई आम जनता को श्रद्धांजली अर्पीत करने के लिए बढ़चढ़ कर भाग लिया।

पिछले एक साल के दौरान दक्षिण बस्तर में लगभग 40 कामरेडों ने दण्डकारण्य को आधार इलाका बनाने, उसके लिए पीएलजीए को पीएलए व छापामार युद्ध को चलायमान युद्ध में विकसित करने के मकसद से बहादुरी से लड़ते हुए अपनी जानें दी हैं। इन शहीदों ने सलवा जुडूम के दमन अभियान को नेस्तनाबूद करते हुए, फर्जी विधानसभा व लोकसभा के चुनावों का बहिष्कार कर रही जनता की सुरक्षा करते, दुश्मन बलों पर कड़े प्रहार करते हुए नए इतिहास की रचना में हिस्सेदारी की।

8 जनवरी 2009 को सिंगारम में पुलिस, अर्धसैनिक बलों व एसपीओ द्वारा रचे गए नरसंहार में शहीद हुई जनता की याद में सभी एरिया कमेटियों में सिंगारम जनशहीद स्मृति स्मारकों का निर्माण कर व आमसभाएं कर श्रद्धांजली पेश की गई।

मिनपा में हुए जबर्दस्त घमासान में हमारे प्रिय कामरेड चंदू, बाबू, दसरू और रिंकू शहीद हुए थे। उन तमाम शहीदों को याद करते हुए अलग-अलग सभाएं की गईं। कामरेड चंदू के गांव बुरूलंका में मिनपा शहीदों की याद में 30 फुट के एक स्मारक का निर्माण जनता ने किया। 28 जुलाई को हुई सभा में हजारों जनता ने नम आंखों व दिलों में जोश के साथ उनको लाल जोहार पेश किया। सभा को संबोंधित करते हुए डिवीजन पार्टी सचिव कामरेड वेंकटेश ने कामरेड चंदू के 19 साल के संघर्षशील व प्रेरणादायक जीवन पर प्रकाश डाला। कठोर अनुशासन के साथ दृढ़तापूर्वक पार्टी में डटकर जनता के लिए लड़ने के उनके गुणों को अपनी बातचीत में जनता के सामने पेश किया। स्मारक का उद्घाटन कामरेड चंदू की जीवनसाथी ने किया।

सप्ताह भर तक जनसभाओं का सिलसिला जारी रहा जबकि दुश्मन सभाओं को असफल करने के लिए एड़ी-चौटी का जोर लगाकर ऐरिया डॉमिनेशन, गश्त आदि कर रहा था।

परंतु जनता को वह अपने प्रिय शहीदों को याद करने से रोक नहीं पाया।

पश्चिम बस्तर - इस वर्ष पश्चिम बस्तर डिवीजन में 36 कामरेडों ने नवजनवादी क्रांति के लिए अपने प्राणों का त्याग किया है। पूरे भारत में शहीद हुए कामरेडों, क्रांतिकारी जनता की याद में पूरे डिवीजन में आमसभाएं आयोजित की गईं।

डीके एसजेडसी की तरफ से जारी किए गए पर्चे सहित डिवीजनल कमेटी की ओर से शहीदों की याद में एक पर्चा व सिंगारम शहीदों की याद में एक पर्चा जारी किया गया व हजारों की संख्या में उनको प्रकाशित किया गया। जनसंगठनों की तरफ से गांव-गांव में प्रचार-प्रसार किया गया। डिवीजन के मद्देड़ एरिया में नेंड्रा, गंगोल एरिया में पूम्बाड़, पूसनार में शहीदों की याद में स्मारक निर्मित किए गए।

28 जुलाई के मौके पर 'पड़ियोरा परिवार कमेटी' के नेतृत्व में शहीदों के परिजनों को आमसभाओं में शामिल किया गया व डिवीजन के शहीदों की याद में प्रकाशित पुस्तक 'जनयुद्ध के चमकते सितारे' व शहीद स्मारकों का अनवारण किया गया। यह अनवारण शहीदों के परिजनों के हाथों करवाया गया।

बाद में हर इलाके में दो-तीन बड़ी स्मारक सभाओं का आयोजन किया गया। सीएनएम के द्वारा शहीदों की यादगार में नाटक, गीत और नृत्य पेश किए गए।

28 जुलाई से 3 अगस्त तक शहीद सप्ताह के दौरान पश्चिम बस्तर के पामेड़ इलाके में 13 पंचायत स्तर की स्मृति सभाओं का आयोजन किया गया। 28 जुलाई को एरिया स्तर पर एक बड़ी आमसभा का आयोजन किया गया जिसमें हजारों की तादाद में महिलाओं व पुरुषों ने भागीदारी की। आमसभाओं में डिवीजन में हुए शहीद साथियों के परिजनों ने भी हिस्सा लिया और जनता को संबोधित किया।

पामेड़ एरिया में पांच शहीद स्मारकों का निर्माण जनता ने किया। एक स्मारक सिंगारम जनशहीदों की याद में व एक मिनपा शहीदों की याद में और इसी तरह डिवीजन के बहादुर कामरेड इकबाल (लालगढ़ ऑपरेशन के दौरान शहीद), कामरेड हुंगाल, कामरेड सन्नी, कामरेड जोगी, कामरेड सुक्काल, कामरेड किरण और कामरेड रामसू के नाम से शहीद स्मारकों का निर्माण किया गया।

दरभा डिवीजन में शहीद सप्ताह को जोशो-खरोश के साथ मनाया गया। इस वर्ष साहसिक हमलों में शहीद हुए - कामरेड चंदू, कामरेड बाबू, कामरेड दसरू और कामरेड रिंकू तथा मोदकपाल में कामरेड देवा, रीना और सुखराम; माड़ोकी में कामरेड लोकेश, ओड़िशा के दामनजोड़ी में शहीद हुए कामरेड वर्गेश, रघु, सुखराम आदि वीर शहीदों को याद किया गया। इसके साथ-साथ सिंगारम, कोकावाड़ा जैसे पाशविक जनसंहारों में शहीद हुई जनता को गांव-गांव में भावभीनी श्रद्धांजली पेश की गई।

हजारों की संख्या में पोस्टर, पर्चे शहीदों की याद में निकाले गए। मलिंगेर एरिया के गांव-गांव में शहीदों की आशाओं और उनके अरमानों के प्रचार-प्रसार के द्वारा श्रद्धांजली पेश की। डिवीजन में डीएकेएमएस, केएएमएस और सीएनएम ने भी अपना प्रचार अभियान चलाया। 28 जुलाई को सुबह से ही पूरे क्षेत्र के गांव-गांव में सभाएं करने और रैलियां निकालने का सिलसिला शुरू हो गया था। लगभग 20 जगहों पर ऐसे आयोजन किए गए।

इस वर्ष डिवीजन में 15 कामरेड शहीद हुए, जिनकी याद में स्मारकों का निर्माण किया गया। कामरेड लोकश, गुमियापाल में कामरेड लिंगा, काकड़ गांव में कामरेड कुम्मा, जबेली गांव में कामरेड राजु, पोटाली गांव में कामरेड नंदा व देवा की याद में स्मारक खड़े किए गए। शहीदी सप्ताह के मौके पर आमसभाओं के द्वारा उनका अनवारण किया गया।

12 अप्रैल 2009 को मड़कामीरास में हुई फर्जी मुठभेड़ में शहीद हुए कामरेड भास्कर, राजू व सन्नू के स्मारक के सामने 30 जुलाई को स्मृति सभा का आयोजन किया गया जिसमें 3 हजार जनता ने भाग लिया। कामरेड लोकेश की स्मृति में 3 अगस्त को आमसभा का आयोजन किया गया। मंलिगेर एरिया के 55 गांवों की 13,500 जनता ने शहीदों की यादगार में आयोजित सभा में भाग लिया।

दरभा डिवीजन के कटेकल्याण एरिया में भी सभी गांवों में प्रचार अभियान चलाया गया। 28 जुलाई के दिन कोरमापारा में 1416, मिचवार में 1000, जोंगेम में 360, कुंदनपाल में 600, बड़ेलखापाल में 870 जनता ने आमसभाओं में भागीदारी की। कटेकल्याण ब्लॉक से कुछ ही दूर एक गांव में एक विशाल आमसभा का आयोजन किया गया जिसमें हजारों की संख्या में शहीदों को याद करने जनता जमा हुई। इसी एरिया में सिंगारम शहीदों की याद में एक स्मारक का निर्माण कर आमसभा की गई और श्रद्धांजली अर्पित की गई। बारिश के मौसम में भी हजारों जनता सभा में शिरकत की व अपने शहीदों को याद किया।

कांगेरघाटी एरिया में जनसंगठनों द्वारा गांव-गांव में प्रचार किया गया। कांगेरघाटी के गांव कोकावाड़ा में 20 जून को सरकारी अत्याचारी पुलिस व अर्धसैनिक बलों ने 7 निर्दोष धुरवा आदिवासियों को मौत के घाट उतार दिया था। इस भीषण दमन के बीचोंबीच जनता ने आमसभाओं का सफलतापूर्वक आयोजन किया व कोकावाड़ा शहीदों को अपनी लाल श्रद्धांजली अर्पित की। कांगेरघाटी में दो विशाल आमसभाओं का आयोजन किया गया। कोकावाड़ा नरसंहार में शहीद हुए लोगों के परिजनों ने भी स्मृति सभाओं में शिरकत की। सरकारी दमन व अत्याचारों, झूठी मुठभेड़ों में आम जनता को मारने की कड़े शब्दों निंदा की।

(शेष पेज 60 में...)

जन अदालत से...

मुखबिर नेटवर्क खड़ा करने वाले मामिड़ी गणेश (गांधी) का सफाया!

जनविरोधी मामिड़ी गणेश ठेकेदारी के बहाने पुलिस मुखबिरी का नेटवर्क तैयार करने के लिए छत्तीसगढ़ पुलिस व आंध्रप्रदेश की एसआईबी से मिला हुआ था। मद्देड़ इलाके में तालाब खुदवाई का काम करवाता था और जनता को पैसा नहीं देता था। तालाब खुदवाई के बहाने वह एक तरफ मुखबिर तंत्र तैयार करता रहा, दूसरी तरफ सरकारी कार्यों का ठेका लेकर जनता से बेगारी करवाता था। ठेकेदारी के छद्मवेश में आंध्रप्रदेश के वरंगल, करीमनगर और गुंटुर तक पुलिस से उसका संपर्क था। पार्टी ने उसकी इन हरकतों को देखकर उसे कई बार समझाया, लेकिन उस पर कोई असर नहीं हुआ। जब वह मद्देड़ से मोटरसाइकल पर सवार होकर आ रहा था तो पीएलजीए के जवानों ने उस पर फायरिंग कर खत्म कर दिया। उससे जनता का कुछ पैसा भी बरामद किया गया है। उसकी मौत से खासतौर से उस जनता ने खुशी मनाई जिसके उसने पैसों को डकार लिया था और बेगारी करवाई थी।

कलमू पांडू का सफया

आंध्रप्रदेश की खुंखार एसआईबी अपने नेटवर्क को तैयार करने में पूरा जोर लगा रही है। कलमू पांडू रास्सम गांव का निवासी था। इसके परिवार की जनविरोधी कार्रवाइयों में पहले से संलिप्तता रही है। इसके बाप को भी जनता ने ऐसी ही कार्रवाइयों की वजह से मौत की सजा दी थी। तब कमलू ने खुद ही कहा था कि अगर मैं भी आगे से ऐसी गलती करूं तो जनता मुझे चाहे जो सजा दे सकती है। तब जनता ने उस पर विश्वास कर लिया था। बाद में कमलू पांडू आंध्र भाग गया था जहां ग्रेहाउंड्स ने उसको पकड़कर हजारों रुपयों का लालच देकर जनविरोधी व पार्टी विरोधी कार्रवाइयों के लिए तैयार किया। उनको हैदराबाद में कई दिनों तक स्पेशल ट्रेनिंग देकर भेजा गया था। उनकी योजना थी कि पुख्ता सूचना पर एक और कंचाल जैसा नरसंहार रचा जाए। 7 हजार रुपये देकर हैदराबाद से उसे हमारे एरिया में मुखबिरी के लिए तैनात किया गया, जिसे लक्ष्य दिया गया किसी भी दल के बारे में, कैम्प के बारे में पुख्ता जानकारी जुटाना।

कलमू पांडू जब जनता के हाथों चढ़ गया और उसकी कारगुजारियां जनता के सामने आ गईं तो 7 गांवों की 500 के करीब जनता ने उसे मौत की सजा सुना दी। ★

(... पेज 59 का शेष)

28 जुलाई के मौके पर पुलिस, अर्धसैनिक बलों व सरकार द्वारा जारी भ्रामक व दहशत फैलाने वाले प्रचार का भंडाफोड़ करते हुए मीडिया में डिवीजनल कमेटी की तरफ से प्रेस विज्ञप्ति जारी की गई, जिसका अच्छा असर हुआ।

दक्षिण गड़चिरोली डिवीजन के अहेरी एरिया में अमर शहीदों को श्रद्धांजली अर्पित करने व उनके सपनों को पूरा करने की शपथ लेते हुए कई सभाओं का आयोजन किया गया। उनकी याद में स्मारकों का निर्माण किया गया। सिंगारम वीर जनता की याद में कमलापुर के पास व कामरेड मीना व सांस्कृतिक योद्धा किशोर की याद में नैगुंडा के पास शहीद स्मारकों का निर्माण किया गया।

30 जुलाई को गांव मांड्रा में अमर शहीद कामरेड सुधाकर रेड्डी (रामन्ना), कामरेड मीना, किशोर को श्रद्धांजली स्वरूप एक स्मारक बनाकर आमसभा का आयोजन किया गया। सैंकड़ों की संख्या में आई जनता ने उस सभा में भाग लिया।

उत्तर गड़चिरोली के कसनसूर एरिया में 28 जुलाई से लेकर 3 अगस्त तक हजारों पर्चों और पोस्टरों के माध्यम से शहीदों के जीवन का प्रचार किया गया।

गांव इरपानार में सिंगारम में सलवा जुडूम के फासीवादी हमले में शहीद हुए 18 लोगों की याद आमसभा का आयोजन किया गया। गड़चिरोली की जनता ने सिंगारम शहीदों को भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित की और उनकी शहादत को ऊंचा उठाते हुए इरपानार की भूमि पर स्मारक का निर्माण किया गया। इस सभा में 2000 से ज्यादा लोगों ने भाग लिया। सभा को जनताना सरकार व पार्टी प्रतिनिधियों ने संबोंधित किया। पूरे एरिया में पुराने स्मारकों को इस अवसर पर रंगरोगन कर साफ-सफाई की गई। व्यापक रूप से जनता ने इन आयोजनों में भागीदारी की।

इसी एरिया में एक जगह जनता का प्यारा नेता, जनताना सरकार का अध्यक्ष कामरेड गुगे की याद में शहीदवेदी का निर्माण किया गया। शहीदों को श्रद्धांजली देने के लिए हजार से ज्यादा जनता उस स्थल पर जमा हुई। अपने प्यारे नेता को याद करते हुए उनके सपनों को साकार करने की जनता ने प्रतिबद्धता को जाहिर किया।

उत्तर गड़चिरोली के ही चातगांव एरिया में भी हर साल की भांति 28 जुलाई से 3 अगस्त तक शहीद सप्ताह को मनाया गया। दर्जन भर शहीद स्मारकों का निर्माण करवाया गया। जनता में व्यापक प्रचार किया गया।

शहीदी सप्ताह के दौरान केरलापाल इलाके में एक बड़ी आमसभा का आयोजन शहीदों की याद में किया गया, जिसमें हजारों की तदाद में जनता ने भाग लिया। ★

10 अप्रैल 2009 को गड़चिरोली-गोंदिया-चंद्रपुर में रहा बंद

दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी व महाराष्ट्र राज्य कमेटी के संयुक्त आव्हान पर 10 अप्रैल 2009 को गड़चिरोली, गोंदिया व चंद्रपुर का बंद सफल रहा। यह बंद दोनों डिवीजनों में सरकार, खासकर महाराष्ट्र की फासीवादी सरकार द्वारा जनता पर चलाए जा रहे भयंकर फासीवादी दमन के खिलाफ किया गया था। पीएलजीए के बढ़ते हमलों से बौखलाकर महाराष्ट्र के क्रैक कमांडो-60 ने जनता पर अमानवीय दमनचक्र को और तेज कर दिया है। दर्जनों लोगों को चंद्रपुर और गड़चिरोली के जेलों में ठूंस दिया। कई महिलाओं व किशोरियों के साथ बलात्कार किया गया। जनता पर जारी इस बर्बर दमन के खिलाफ दोनों डिवीजन की जनता ने बंद में बढ़चढ़ कर भाग लिया व बंद को सफल बनाया।

चादगांव एरिया में कई दिनों पहले ही इसके लिए जनता में प्रचार अभियान चलाकर जागरूक किया गया। गांव-गांव में सभाएं लेकर बंद को सफल बनाने का आव्हान किया गया। कई जगहों पर विरोध स्वरूप जनता ने सरकारी संपत्ति को आग के हवाले कर दिया। 10 अप्रैल को पूरे एरिया में वाहनों के पहिए थमे रहे।

टिप्रागढ़ एरिया में भी वाहनों की आवाजावही ठप ही रही। और कई जनसभाओं का आयोजन किया गया।

गुटखा, शराब व तंबाकू के खिलाफ चला अभियान

गड़चिरोली डिवीजन में कर्रा गुटखा, शराब, तंबाकू आदि बुराइयों के खिलाफ प्रचार अभियान चलाया गया। बुराइयों को छोड़ने के लिए जनता, खासकर नौजवानों से आव्हान किया गया और उसके खिलाफ पर्चे, पोस्टरों के माध्यम से जनजागृति फैलाने का प्रयास किया गया।

चादगांव इलाके में इसको लेकर कई गांवों में सभाओं का आयोजन किया गया। गुटखा, शराब व तंबाकू से होने वाले रोगों, व समाज में फैलने वाली बुराइयों के बारे में जनताना सरकार, जनसंगठनों के प्रतिनिधियों ने अपनी-अपनी बात जनता के सामने रखी।

टिप्रागढ़ एरिया में कई जगहों पर आमसभाओं का आयोजन कर जनता को जागरूक किया गया। सैकड़ों की संख्या में महिलाओं व पुरुषों ने रैलियों में भाग लेकर दुकानदारों का विरोध किया व शराबबंदी का ऐलान किया। गुटखा, तंबाकू बेचने वाले दुकानदारों को इन्हें न बेचने के लिए मनाया गया। इस दौरान सैकड़ों पोस्टर एरिया में चस्पा किए गए।

19 मार्च को मुरुमगांव में एक अंग्रेजी शराब की दुकान को जनमिलिशिया के सैनिकों ने जला डाला। शारब पीकर हुड़दंग मचाने वाले शराबियों से जनता बेहद परेशन थी। आगे से वहां पर शराब दुकान न चलाने की हिदायत दी गई। मुरुमगांव पुलिस थाने के दम पर यह दुकान चल रही थी। उसी दिन पुलिस थाना पर फायरिंग भी की गई।

सावरगांव के बाजार में भी इस दौरान देशी शराब बेचने वाले दुकानदारों को आगे से बाजार में शराब न बेचने के लिए नसीहत दी गई।

लालगढ़ की लड़ाकू जनता के समर्थन में उतरी डीके की जनता

दक्षिण गड़चिरोली के अहेरी एरिया में कई जगहों पर लालगढ़ की जनता पर दमन के लिए फोर्स के भेजे जाने व दमन अभियान के खिलाफ आमसभाओं का आयोजन किया गया। सैकड़ों जनता ने उनमें भाग लिया।

चादगांव एरिया में भी कई पंचायत स्तरीय जनसभाएं आयोजित हुईं। पर्चों व पोस्टरों के माध्यम से जनता में लालगढ़ के लड़ाकू जनविद्रोह का प्रचार किया गया।

कोकावाड़ा नरसंहार के खिलाफ सड़कों पर उतरी जनता

लुटेरी केंद्र व राज्य सरकारें मिलकर माओवादी पार्टी के नेतृत्व में जारी जनआंदोलन को कुचलने के लिए आम जनता पर पाशविक फासीवादी हमले कर रही हैं। इन हमलों के खिलाफ पीएलजीए भी दमनकारी भाड़े के अर्ध सैनिक बलों पर हमले कर रही है। ऐसा ही हमला दरभा ब्लॉक के कोकावाड़ा के पास 20 जून 2009 को अंजाम दिया गया। अर्ध सैनिक बलों के काफिले पर बारूदी सुरंग का विस्फोट कर एक ट्रक को उड़ा दिया गया था। इस हमले में सीआरपीएफ के 11 जवान मारे गए थे और 8 घायल हुए थे। इस घटना से बौखलाकर घटनास्थल पर ही पुलिस ने 7 निर्दोष ग्रामीणों को गोलियों से भून डाला और बाद में उनको माओवादी जन संगठन के सदस्य बताकर कर प्रचारित किया गया। लेकन सच्चाई यह है कि ये सभी ग्रामीण ओडिशा के बेजावाड़ा साप्ताहिक बाजार से मछली पकड़ने के जाल आदि खरीद कर वापस अपने गांव आ रहे थे। कुछ लोग खेत से अपने घर लौट रहे थे। घटना के बाद इन बेकसूर राहगीरों को आंतकी पुलिस ने निशाना बनाया। इस घटना के खिलाफ 23 जून को केशलूर से कोंटा तक लोगों ने स्वेच्छा से बंद का पालन किया। बंद का असर केशलूर, नेतानार, दरभा, तोंगपाल, सुकमा तक रहा। इसके अलावा जून 29 को इस हत्याकांड के विरोध में दस हजार ग्रामीणों ने रैली निकालकर इस पाशविक हत्याकांड

की जांच करवाने और दोषी पुलिस अधिकारियों को दण्डित करने की मांग की।

कोकावाड़ा में बस्तर जिला के ब्लॉक के दरभा के सौतनार पंचायत के 6 ग्रामीण जिनमें देऊ (40) पिता पाण्डू, लखमा (35) पिता सोनसाय, कमलू (40) पिता सोमारू, सुकालू (35) पिता भीमा, सम्पत (32) पिता दुलारू, बागा (30) पिता रूढ़ी और एक अन्य ग्रामीण दंतेवाड़ा जिला के छिंदगढ़ ब्लॉक के गांव किंदरवाड़ा के रामविलास (30) पिता रामसिंह को पुलिस दरिंदों ने मार डाला।

एक और झूठी मुठभेड़ में 9 सिंतबर 2009 को कटेकल्याण ब्लॉक के गांव डुव्वा कारका के निवासी कुंजाम भीमा (28) को पुलिस ने पकड़ कर मार डाला। सरकार चाहे इसे मुठभेड़ कहे, लेकिन समूची जनता जान चुकी है कि हरेक मुठभेड़ झूठी ही होती है और पुलिस जिसे नक्सलवादी करार देती है वह आमतौर पर सामान्य आदिवासी होता है। बहरहाल, झूठी मुठभेड़ों के खिलाफ जनता को व्यापक संख्या में गोलबंद करने और विरोध -प्रतिरोध के लिए प्रेरित करने की जरूरत है।

बेशेवड़ा खदान पर पीएलजीए का हमला - दो मशीनों को जलाया

गड़चिरोली डिवीजन के एटापल्ली तहसील के गट्टा एरिया में विदेशी कंपनी खनिज संपदा के दोहन के लिए गट्टा पुलिस स्टेशन से 23 किलोमीटर दूर बेशेवेड़ा गांव के पहाड़ पर दो मशीनें लगाई हुई हैं। ये सब जनता से बिना पूछे और चोरी-छिपे लगाई गई थीं। जनमिलिशिया व आसपास के 15 गांवों की जनता सहित लगभग 200 की संख्या में पहुंचे पीएलजीए के लाल योद्धाओं ने दोनों मशीनों को आग के हवाले कर दिया। वहीं वहां से 1000 लीटर डिजिल, 25 लीटर ल्यूब्रीकेंट तेल आदि सामान को जब्त कर लिया।

पश्चिम बस्तर से जन मिलिशिया व पीएलजीए के सिलसिलेवार प्रतिरोध की संक्षिप्त रिपर्टें...

('प्रभात' को ये रिपोर्टें काफी देरी से मिली हैं। - *संपादक मंडल)*

18 फरवरी को बीजापुर घाटी में प्रेशर बम फटने से 2 सीआरपीएफ के आंतकी घायल। 19 फरवरी को गंगालूर एरिया के गोरनम गांव को चारों तरफ से पुलिस वालों ने घेरकर गांव के ऊपर हमला बोलकर एक जन मिलिशिया सदस्य को पकड़ कर हत्या की। बाद में झूठा प्रचार किया कि मुठभेड़ में नक्सली मारा गया।

19 मार्च को वेच्चापाल के पास बूबी ट्रैप में फंसकर एक एसपीओ गंभीर रूप से घायल हो गया। बचेली से मिरतुल जाते वक्त यह घटना घटी। यह एसीपीओ जनसंगठन की कमेटी के सदस्य को पकड़ने के इरादे से आया था, बाद में खुद ही जाल में फंस गया।

19 मार्च को गंगालूर पुलिस स्टेशन से भाड़े के सरकारी सुरक्षा बल सुबह चार बजे निकले थे। कमका और आकवा गावों के ऊपर हमला कर वहां से सुअर, बकरे, मुर्गों को लूटकर ले गए। जब आराम से वापस जा रहे थे तो जनमिलिशिया के बहादुर जवानों ने कार्डेक्स वायर से विस्फोट कर दिया। इससे दुश्मन भयभीत होकर अंधाधुंध फायरिंग करते हुए दुम दबाकर भागा। हालांकि कोई हताहत नहीं हुआ।

19 मार्च को ही मिरतुल थाना के अंतर्गत गांव पुल्लुम को चारों ओर से घेरकर आंतकी पुलिस बलों ने हमला किया। इसमें चार निर्दोष ग्रामीणों को पकड़कर बेदम पिटाई करते हुए मिरतुल थाना ले गए। कितनी भी क्रूर यातनाएं देने से उन्होंने पार्टी के बारे में एक भी गुप्त बात बताने से इनकार कर दिया तो उनको जेल में झूठे केस लगाकर ठूंस दिया। लेकिन उनमें से एक मिरतुल थाने से भागने में कामयाब रहा।

19 मार्च को ही मद्देड़ थाना के अंतर्गत गांव पोसड़पल्ली में पीएलजीए की पलटन डेरा डाले हुए थी। मुखबिर की सुचना पर सीआरपीएफ व एसपीओ की संयुक्त टुकड़ी पलटन पर हमला करने के लिए आई लेकिन पलटन के बहादुर योद्धाओं ने पहले ही इस हमले को भांप लिया और पहलकदमी लेते हुए फायरिंग की, जिसे दुश्मन बलों का हमला विफल हो गया। कोई नुकसान किसी और से नहीं हुआ। लगभग आधे घंटे तक फयरिंग चलती रही।

27 मार्च को गंगालूर एरिया के अंतर्गत सावनार और पालनार गांव पर हमला करने आई सीआरपीएफ, एसपीओ और पुलिस की संयुक्त गश्ती दल व पीएलजीए बलों के बीच फायरिंग हुई। इस मुठभेड़ में पीएलजीए बलों ने दुश्मन बलों को दो किलोमीटर तक भगाते हुए खदेड़ा। जब वह भाग रहे थे तो पीएलजीए ने 2 इंच मोर्टार से एक शेल दागा जिसमें एक सीआरपीएफ का आतंकी गंभीर रूप से घायल हो गया। इससे बौखलाए आतंकी बलों ने कुछ दिनों के बाद यानी 30 मार्च को दोबारा इन्हीं दो गांव पर हमला किया और जनता की संपत्ति को जला डाला।

14 अप्रैल को गंगालूर एरिया के मनकेली गांव में हमला कर एक बेकसूर ग्रामीण को पुलिस वाले पकड़ कर ले गए।

9 मई 2009 को फरसेगढ़ सलवा जुडूम शिविर से 50 एसपीओ के गुंडे सागमेट्टा में रोड बनाने के लिए लगे ठेकेदार मदद के लिए आए। इस पर हमारी पीएलजीए ने हमला किया जिसमें 2 एसपीओ का सफाया कर दिया गया व 2 घायल हुए। इस हमले में हमारी पीएलजीए ने 3 थ्रीनॉटथ्री राइफलें, 100 कारतुस, एक इंसास मैगजिन को जब्त किया। इस हमले में पीएलजीए ने एसपीओ को दौड़ा-दौड़ा कर भगाया और कई एसपीओ तो दो दिनों के बाद थाने में पहुंच पाए। ★

(... आखिरी पेज का शेष)

चामोर्षी इलाके में दस्ता कमाण्डर की जिम्मेदारी निभा रहे थे। अक्टूबर 1999 में 15 साल की उम्र में ही वह घर छोड़कर पिता के पास पहुंच गया। बस, वहां से उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

साईनाथ ने अपना नाम मंगेश बदल लिया। कुछ समय तक वह अपने पिता के साथ रहे। वर्ष 2000 के आखिर में जब वह सोलह बरस के हो चुके थे, गढ़चिरोली में गठित पहले एलजीएस का सदस्य बन गए। गुरिल्ला सेना के सदस्य के रूप में जब वह सीख रहे थे, तभी पार्टी ने उन्हें केन्द्रीय कमेटी के एक कॉमरेड के सुरक्षा गार्ड के रूप में काम करने का जिम्मा सौम्पा। उन्होंने इस जिम्मेदारी को सहर्ष स्वीकार किया। सीसी कॉमरेड के साथ दण्डकारण्य के अलावा उत्तरी तेलंगाना और एओबी इलाकों का भी उन्होंने खुशी से दौरा किया। दो सालों तक गार्ड के रूप में रहने के बाद 2003 के आखिर में सीआरबी दस्ते में उन्हें उप-कमाण्डर के रूप में नियुक्त किया गया। इस दौरान वह पार्टी सदस्य भी बन गए। उम्र और चेतना का स्तर भी उनका बढ़ता गया।

2005 में फिर से वह गढ़चिरोली डिवीजन पहुंच गए। उन्हें सैनिक मोर्चे में जिम्मेदारी दी गई जो उन्हें पसंद भी था। प्लटून-7 में उन्हें सेक्शन कमाण्डर बनाया गया। कुछ ही दिनों में बस्तर में फासीवादी सलवा जुडूम शुरू हुआ था। गढ़चिरोली से सटे हुए बस्तर के नेशनल पार्क इलाके में जुडूम के हमलों से जब जनता का जीवन अस्तव्यस्त हो रहा था, तब पलटन-7 ने पहलकदमी के साथ सीमाएं पार कर जनता की मदद की। वह पलटन करीब तीन महीनों तक उन भयानक हालात में जनता का सहारा बनकर रही। इस दौरान कॉमरेड मंगेश ने अच्छा-खासा अनुभव हासिल किया।

2006 के आते-आते अहेरी इलाके में पार्टी नेतृत्व में मौजूद कुछ व्यक्तियों ने जब पीठ दिखाई तो पार्टी ने कॉमरेड मंगेश से वहां की जिम्मेदारी संभालने का आग्रह किया। उससे पहले उन्हें सांगठनिक कामकाज का थोड़ा भी अनुभव नहीं था। पहले से सैनिक मोर्चे में रहकर सीखने वाले कॉमरेड मंगेश के दिमाग में इस बात को लेकर हिचकिचाहट तो थी लेकिन पार्टी ने जब दे ही दी तो स्वीकारने को तैयार हो गए। अनुशासन, दृढ़ संकल्प, ईमानदारी और जनता के प्रति सेवा भावना से वह जनता के करीब हो गए। अक्टूबर 2008 में कॉमरेड मंगेश को पार्टी ने डीवीसी सदस्य के रूप में चुन लिया। इस तरह दस सालों के क्रांतिकारी सफर में धीरे-धीरे बढ़कर कॉमरेड मंगेश गढ़चिरोली डिवीजन में डिवीजनल कमाण्डर-इन-चीफ की जिम्मेदारी ली।

दुश्मन के प्रति कॉमरेड मंगेश के दिलोदिमाग में असीम नफरत होती थी। सैन्य कार्रवाइयों में उन्होंने कभी पीछे कदम नहीं डाला। सदस्य व सेक्शन कमाण्डर के रूप में उन्होंने कई महत्वपूर्ण हमलों में भाग लिया। 2006 के बीच कासमपल्ली के पास सी-60 कमाण्डों पर पीएलजीए की पलटन ने जब हमला किया तो कमाण्डो बदहवास भाग गए। लेकिन उस हमले में पलटन के उप-कमाण्डर कॉमरेड लालसू शहीद हुए थे। कॉमरेड लालसू को कॉमरेड मंगेश बेहद करीबी मानते थे। इस घटना से उन्हें जितनी तकलीफ हुई थी, उतनी ही जिम्मेदारी से उन्होंने कॉमरेड लालसू का अधूरा काम पूरा करने के मजबूत इरादों के साथ उन्होंने पलटन का नेतृत्व किया। 2008 के अखिर में जारावाड़ा के पास किए गए ऐम्बुश में कॉमरेड मंगेश ने हिम्मत के साथ भाग लिया जिसमें कमाण्डो बाल-बाल बच गए थे। इन अनुभवों के आधार पर उन्होंने डिवीजनल कमाण्डर-इन-चीफ की जिम्मेदारी उठा ली। अक्टूबर 2009 में हुए महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों का बहिष्कार करते हुए की गई प्रतिरोधी कार्रवाइयों में उन्होंने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। इस प्रतिरोधी कार्यक्रम के तहत सब-जोनल कमान ने फैसला किया कि विभिन्न बलों को एकजुट कर फौजी कार्रवाई को सफल बनाया जाए। उस मौके पर कॉमरेड मंगेश ने कमान से आग्रह किया कि उन्हें बड़े फार्मेशन के साथ हमलों में भाग लेकर अनुभव हासिल करने का मौका दिया जाए। इस प्रकार 8 अक्टूबर 2009 को लहेरी के पास किए गए बड़े हमले में उन्होंने भाग लिया जो उनकी आखिरी लड़ाई भी थी। इस हमले में 17 पुलिस वालों का सफाया कर 19 हथियार छीन लिए गए। इसमें कॉमरेड मंगेश की भूमिका महत्वपूर्ण रही। लेकिन हमले के अंतिम क्षणों में दुश्मन की गोली लगने से कॉमरेड मंगेश वहीं गिर पड़े। उनकी शहादत से साथियों को काफी दुख लगा। फिर भी मंगेश की शहादत से कामरेडों में दुश्मन से लड़ने का जज्बा और भी बढ़ गया। करीब 4 घण्टों तक लड़कर हमले को सफल बनाया।

हाल ही में मध्य-रीजनल ब्यूरो द्वारा संचालित क्षेत्रीय राजनीतिक पाठशाला के पहले बैच में कॉमरेड मंगेश ने भाग लिया। जबकि पार्टी के नेतृत्वकारी कॉमरेडों का नुकसान लगातार जारी है, डीवीसी और एसजेडसी स्तर के कॉमरेडों को उन्नत स्तर में विकसित करने के लक्ष्य से चलाई गई पाठशाला में कॉमरेड मंगेश को सभी शिक्षकों ने पसंद किया। इस तरह सिलसिलेवार विकसित हो रहे कॉमरेड मंगेश की शहादत से दण्डकारण्य आंदोलन को, खासकर गढ़चिरोली जिला पार्टी को अपूरणीय क्षति हुई है। आंदोलन के दौरान पैदा होकर आंदोलन के साथ-साथ पलने-बढ़ने वाले और एक जांबाज योद्धा के रूप में उभरने वाले कॉमरेड मंगेश की मौत उस डिवीजन में विकसित हो रही जन राजसत्ता - जनताना सरकार के लिए भी एक झटका है।

कॉमरेड मंगेश का मृत शरीर लाकर उनके सथियों और जनता ने पूरे क्रांतिकारी सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया। उनकी स्मृति में आयोजित सभा में 25-30 गांवों से 500 से ज्यादा लोगों ने भाग लिया। जनता ने कॉमरेड मंगेश के अधूरे मकसद को पूरा करने के संकल्प के साथ जोर शोर से नारे लगाए। कॉमरेड मंगेश की चार साल की नन्ही बच्ची क्रांति ने, जो जनताना सरकार द्वारा चलाई जा रही एक स्कूल में पढ़ रही है, इस खबर को सुनने के बाद मुट्ठी भींचकर 'मेरे पिताजी अमर रहें' का नारा लगाया। उसके साथी स्कूली बच्चों ने 'अमर रहें' कहा जिससे स्कूल पूरा गूंज उठा। ★

गढ़चिरोली संघर्ष का प्यारा सपूत कॉमरेड मंगेश को लाल सलाम!

8 अक्टूबर 2009 को गढ़चिरोली जिले के लहेरी के पास पीएलजीए ने एक शानदार हमला कर 17 आतंकी सी-60 कमाण्डों का सफाया किया। (इसकी रिपोर्ट 'प्रभात' के पिछले अंक में छप चुकी थी।) और उस हमले की बदौलत जनता की फौज ने दुश्मन से 19 अत्याधुनिक हथियार छीन लिए। गढ़चिरौली के क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में अब तक के इस सबसे बड़े हमले को सफलता दिलाने के दौरान एक बहादुर कमाण्डर ने अपनी जान न्यौछावर कर दी और वह थे कॉमरेड मंगेश। कॉमरेड मंगेश पार्टी की दक्षिण गढ़चिरोली डिवीजनल कमेटी के सदस्य और डिवीजनल कमाण्डर-इन-चीफ थे। 'प्रभात' इस नौजवान साथी को विनम्र श्रद्धांजलि पेश करती है और उनके अधूरे सपने को पूरा करने का संकल्प लेती है। आइए, जनता की सेवा में मुस्कराते हुए अपने प्राणों को न्यौछावर करने वाले उत्पीड़ित जनता के इस उत्तम सपूत की जीवनी पर सरसरी नजर डालें।

वर्ष 1984 के फरवरी माह की 24 और 25 तारीख। गढ़चिरोली के आंदोलन के इतिहास में अंकित दिन। पीढ़ियों से जारी शोषण-उत्पीड़न से दबकर रहे आदिवासियों ने 'आदिवासी शेत-मजूर शेतकारी संगठन' के रूप में अपनी संगठित शक्ति की खुली घोषणा करने के लिए ये तारीखें तय कीं। आखिर में सरकारी तंत्र की साजिशों से आदिवासियों की वह प्रस्तावित आमसभा खुले रूप में न होने के बावजूद गोपनीय तरीके से जिला संगठन के रूप में घोषणा की गई। 'कमलापुर अधिवेशन' के नाम से मुम्बई से हैदराबाद तक क्रांतिकारी लेखकों, कलाकारों और छात्र-बुद्धिजीवियों को झकझोर दिया था। नक्सलबाड़ी के बाद एक लंबे अंतराल के बाद जंगली इलाकों में क्रांतिकारी आंदोलन के बीज बोने के लिए आए हुए चंद नौजवानों में से एक कॉमरेड पेद्दि शंकर ने 1980 में इसी क्षेत्र में अपना खून बहाया था। उस शहीद की यादगार में आयोजित हो रहे अधिवेशन में भाग लेने का जज़्बा जो लेखक-कलाकारों व छात्र-बुद्धिजीवियों में देखा गया था, वही स्थानीय आदिवासियों में भी था। उस अधिवेशन की तैयारियों में उत्साह के साथ भाग लेने वाले सैकड़ों नौजवानों में अरकापल्ली का युवा वर्ग आगे था। तब कॉमरेड मंगेश दो महीने का नन्हा बच्चा था। मंगेश के पिता उस अधिवेशन के कार्यक्रमों में पूरी तरह व्यस्त थे। उनके उस नन्हे बच्चे का नाम सड़मेक साईनाथ था जो बाद के इतिहास में कॉमरेड मंगेश के नाम से अपनी छाप छोड़ गए।

गढ़चिरोली डिवीजन के अहेरी तहसील में स्थित अरकापल्ली गांव उस समय क्रांतिकारी आंदोलन के मजबूत गढ़ों में से एक था। उस गांव के सभी लोग राजगोण्ड समुदाय के थे। कॉमरेड साईनाथ शहीद वीर बाबूराव सड़मेक की खानदान के थे। बाबूराव ने ब्रितानी साम्राज्यवादियों के खिलाफ अपनी जनता को इकट्ठा कर 'जंगोम सेना' का निर्माण कर विद्रोह किया था जिन्हें अक्टूबर 1958 में चंद्रपुर में फांसी के तख़्ते पर झुलाया गया था। उनके अधूरे सपनों को पूरा करने का बीड़ा उठाकर कॉमरेड साईनाथ सड़मेक ने आज के साम्राज्यवादी, दलाल नौकरशाह पूंजीपति व सामंती ताकतों से लड़कर ठीक 150 सालों बाद अक्टूबर महीने में ही अपनी जान कुरबान कर दी। बाबूराव की तरह कॉमरेड साईनाथ ने भी 25 बरस की उम्र में अपनी नौजवानी में ही जनता के हितों की खातिर बलिदान दिया।

साईनाथ का बचपन क्रांतिकारी गीतों और लड़ाई की कहानियों से बीता। उस इलाके में काम करने वाला गुरिल्ला दस्ता जब भी अरकापल्ली गांव जाता तो सड़मेक घर ही उसका डेरा था। दस्ते के कमाण्डर समेत सभी सदस्य नन्हे साईनाथ को गोद में लेकर दुलारते थे। साईनाथ के पिता क्रांतिकारी संगठन की गतिविधियों में पूरी तरह व्यस्त होने के कारण साईनाथ को पढ़ाई पर से ध्यान हट गया। जब वह दस साल का हो गया तब उसकी मां भी पिता के रास्ते पर निकल पड़ी थीं। कुछ ही समय बाद बीमारी से ग्रस्त होकर असमय मृत्यु की शिकार हो गई थीं। इस तरह वह गढ़चिरोली जिला आंदोलन में पहली महिला शहीद बन गईं। पिता का घर छोड़कर पूर्णकालीन क्रांतिकारी के रूप में चले जाना और मां का शहीद हो जाना - इसका साईनाथ पर गहरा असर पड़ा था। घर में उसकी एक दीदी और एक छोटी बहन थीं। धीरे-धीरे साईनाथ का झुकाव भी क्रांतिकारी आंदोलन की तरफ बढ़ता गया। घर में जब उसकी छोटी बहन उसे पढ़ाई करने की बात करती तो साईनाथ को रास नहीं आती थी।

1991-94 के बीच गढ़चिरोली डिवीजन में सरकारी दमन चरम पर पहुंच चुका था। शरद पवार की अगुवाई वाली जनवादी मोर्चा सरकार ने फासीवादी दमन अभियान शुरू कर एक साल के अंदर ही झूठी मुठभेड़ों में 60 से ज्यादा नौजवानों की हत्या की थी। रोज-रोज क्रांतिकारियों की शहादत की खबरें, बड़े पैमाने पर की जाने वाली गिरफ्तारियों की खबरें, काला कानून टाडा के तहत लोगों को कैद करने की खबरें, दूसरी तरफ अपनी मां की शहादत - इन सबने किशोर साईनाथ को क्रांति का रास्ता अपनाने को प्रेरित किया। उस समय उनके पिता

(शेष पेज 63 में...)